विशेष शिक्षा केन्द्र के अध्यापकों हेतु प्रशिक्षण सामग्री

2018

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
डिफेंस कॉलोनी, वरूण मार्ग, नई दिल्ली-110024

मुख्य सलाहकार

डॉ. सुनीता शु. कौशिक, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी.
डॉ. नाहर सिंह, संयुक्त निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी.
समन्वयक : डॉ. बिन्दु सक्सैना, प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

लेखन मण्डल

श्रीमती रितिका डबास, वरिष्ठ प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी
श्रीमती सीमा यादव, वरिष्ठ प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी.
डा० कुसुम भाटिया, वरिष्ठ प्रवक्ता, डाइट पीतम पुरा
डा० शारदा कुमारी, वरिष्ठ प्रवक्ता, डाइट आर० के० पुरम
डा० विनीत कुमार गम्भीर, टी०जी०टी० गणित
डा० अमित कुमार अग्रवाल, प्रवक्ता, डाइट पीतम पुरा, दिल्ली
डा० एम० एम० राय, वरिष्ठ प्रवक्ता, डाइट घूमन हेरा
डा० ललित गुप्ता, प्रवक्ता, जी० बी० एस.एस.एस. बिन्दापुर,
डा० मीना सहरावत, वरिष्ठ प्रवक्ता, डाइट घूमन हेरा
डा० सतनाम सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता डाइट दिलशाद गार्डन
डा० बिन्दु सक्सैना, प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
डा० प्रवीण कुल श्रेष्ठ, प्रवक्ता डाइट घूमन हेरा
श्री संजय कुमार, प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
श्री धीरज राय, प्रवक्ता एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
श्री मनोज कुमार, प्रवक्ता एस०सी०ई०आर०टी०, दिल्ली
श्री अबरार अहमद, प्रवक्ता भूगोल, शिक्षा निदेशालय दिल्ली
श्रीमती सीमा सक्सेना, टी.जी.टी. हिन्दी, शिक्षा निदेशालय दिल्ली
श्रीमती कल्पना तहलान, अध्यापिका, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम

प्रकाशन प्रभारी
मुकेश यादव
प्रकाशन समूह
नवीन कुमार, राधा एवं जय भगवान

मुद्रक : ऐजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

सूची

प्राक्कथन

1.	विशेष प्रशिक्षण केन्द्र	4
2.	विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्र के सन्दर्भ में समावेशित शिक्षा एवं बच्चों की भागीदारी	9
3.	बहु श्रेणी एवं मिश्रित योग्यता शिक्षण	14
4.	मादक पदार्थो की दुनिया में विद्यालय शिक्षा से वंचित बच्चे	23
5.	प्राथमिक स्तर एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण	27
6.	प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण	53
7.	प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण	65
8.	उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित शिक्षण	75
9.	प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन शिक्षण	91
10.	उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण	
11.	उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण	99

प्राक्कथन

भारतीय संविधान में एक सपना संजोया गया था – सभी बच्चों के लिए नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का सपना एवं इसको हासिल करने के लिए दस वर्ष का समय, पर यह हमारा दुर्भाग्य है कि 64 वर्ष के उपरान्त भी हम इस सपने को साकार नहीं कर पाए हैं। अनेक योजनाएँ बनी लेकिन पूर्णत: साक्षर भारत अभी स्वप्न ही है।

संविधान के शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 में प्रत्येक बच्चे को शिक्षा का अधिकार दिया गया है। अब बच्चों को शिक्षा से वंचित नहीं रखा जाएगा। जो बच्चे किसी कारण वश विद्यालय में प्रवेश नहीं पा सकें हैं उनके लिए विशेष प्रशिक्षण केन्द्र का प्रावधान है। ये केन्द्र पहली बार खोले गए हैं एवं इनमें शिक्षकों के सामने अनेक समस्याएँ हैं जैसे बहु कक्षा शिक्षण, समावेशित शिक्षा छात्रों के मानसिक एवं सामाजिक स्तर को समझना आदि। इसी को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों के लिए यह संदर्शिका तैयार की गई है जो शिक्षकों का मार्गदर्शन कर सकेगी।

मै सभी शिक्षकों एवं प्रशिक्षकों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होनें इस संदर्शिका में अपना योगदान दिया है।

आपके सुझावों का स्वागत है जिससे हमारे प्रयासों को नवीन दिशा मिल सके।

डॉ० नाहर सिंह
संयुक्त निदेशक

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र

भारत में नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू होने से भारतीय शिक्षा जगत में खुशी की लहर व्याप्त हो गई है। इस अधिनियम के अनुसार 'छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु के प्रत्येक बालक, को प्रारंभिक शिक्षा पूरी होने तक किसी आसपास के विद्यालय में नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार होगा। यह अधिनियम भारत के प्रत्येक बच्चे को साक्षर करने का सपना पूरा कर सकेगा। इसके अन्तर्गत सभी छात्र चाहे उनका विद्यालय में नामंकन हो अथवा न हो, उन्हें शिक्षा का अधिकार प्राप्त है।

यहाँ विचारणीय है कि हमारे देश के संविधान के अनुच्छेद 45 के अनुसार, 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को दस वर्ष के अन्दर (अर्थात सन् 1960 तक) साक्षर बनाया जाएगा परन्तु 64 वर्ष के उपरान्त भी हम इस लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल हुए हैं। आज भी करोडों की संख्या में ऐसे बच्चे है जिनका विद्यालय में नामांकन नहीं है। इन बच्चों को विद्यालय शिक्षा से वंचित बच्चे (Out of School Children) कहा जाता है। इसके अन्तर्गत विद्यालय छोड़ चुके बच्चे एवं विद्यालय में जिनका कभी नामांकन न हुआ हो, ऐसे बच्चे आते हैं।

ऐसे बच्चे निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं-

1) बाल श्रमिक

2) प्रवासियों के बच्चे

3) झुग्गी बस्ती में रहने वाले बच्चे

4) श्रमिकों के बच्चे (जो श्रमिक एक स्थान से दूसरे स्थान कार्य की तलाश में जाते हैं)

5) संपत्तिविहीन कृषकों के बच्चे

6) दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले एवं आदिवासी बच्चे

7) बंजारा समाज के बच्चे

इन बच्चों में अनुसूचित जाति, जनजाति, विशेष बच्चे एवं बालिकाओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है। विभिन्न राज्यों में इन समूहों मे काफी अन्तर पाया जाता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि सरकार द्वारा अनेक सुविधाएं प्रदान करने के बाद भी इतने बच्चे शिक्षा से वंचित क्यों हैं?

इस समस्या के अनेक कारण है-

a) अभिभावकों का अशिक्षित होना।

b) माता-पिता द्वारा कार्य की तलाश में प्रवर्तन।

c) माता-पिता द्वारा शिक्षा के महत्त्व को न समझना।

d) बच्चों द्वारा जीविकोपार्जन करना।

e) घरेलू अथवा अन्य कार्यो में माता-पिता का हाथ बटाना

f) किसी कारण से बीच में विद्यालय छोड़ देना

इन बच्चों की शिक्षा के लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम में विशेष प्रावधान है। अधिनियम के खण्ड 4 के अनुसार **'जहाँ छह वर्ष से अधिक की आयु के किसी बालक को किसी विद्यालय में प्रवेश नहीं दिया गया या प्रवेश तो दिया गया है किंतु उसने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी नही की है, तो उसे उसकी आयु के अनुसार समुचित कक्षा में प्रवेश दिया जाएगा'।** इन छात्रों को सामान्य छात्रों के मानसिक व शैक्षिक स्तर तक लाने के लिए **विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों का गठन** अधिनियम के अनुसार किया जाना चाहिए। विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों पर बच्चे अपनी आवश्यकता के अनुसार पढ़ाई कर सकते हैं एवं इस केन्द्र पर अध्ययन के उपरान्त अपनी आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश पा सकते हैं। आइए अब हम विशेष प्रशिक्षण केन्द्र के उद्देश्यों को जाने-

1) शिक्षा सें वंचित छात्रों की पहचान करना।

2) शिक्षा से वंचित छात्रों को नामांकित करना।

3) शिक्षा से वंचित छात्रों को शिक्षित करना ।

4) उनको आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश देना।

शिक्षा से वंचित बच्चों को शिक्षित करने के चरण-

1. शिक्षा से वंचित बच्चों की पहचान-

स्थानीय लोगों, शिक्षकों एवं गैर सरकारी संस्थाओं की मदद से विद्यालय के आसपास के क्षेत्र में निम्नलिखित तीन प्रकार के बच्चों की सूची तैयार करना-

अ) जिनका कभी नामांकन न हुआ हो।

ब) जिन्होनें विद्यालयी शिक्षा छोड़ दी हो।

स) जिनका नाम विद्यालय में नामांकित है पर वे नियमित रूप से विद्यालय नहीं जाते हैं।

इससे आसपास के सभी बच्चे जो विद्यालय शिक्षा से वंचित हैं उनकी पहचान हो जाएगी।

2) **शिक्षा से वंचित बच्चों को विद्यालय आने के लिए प्रेरित करना**

स्थानीय लोगों के सहयोग से जागरूकता अभियान चलाकर बच्चों को प्रेरित किया जा सकता हैं। साथ ही, अभिभावकों को भी जागरूक किया जा सकता है। जागरूकता अभियान के दौरान विद्यालय में नामांकित बच्चों को सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं जैसे छात्रवृत्ति, निः शुल्क पुस्तकें, निः शुल्क वर्दी, निः शुल्क भोजन का जिक्र भी किया जाना चाहिए जिससे बच्चे एवं अभिभावक पढ़ने/पढ़ाने के लिए प्रेरित हों।

3) विद्यालय में शिक्षा से वंचित बच्चों का नामांकन सुनिश्चित करना-

शिक्षा से वंचित बच्चों को प्रेरित करने के उपरान्त विद्यालय के अध्यापक का दायित्व है कि वे बच्चे का नामांकन आयु के अनुसार कक्षा में करें एवं उसे विशेष प्रशिक्षण केन्द्र में ज्ञानार्जन हेतु भेजें।

4) **छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षण केन्द्र की व्यवस्था करना-**

शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अनुसार विशेष प्रशिक्षण केन्द्र उसी विद्यालय में अथवा किसी अन्य विद्यालय में हो सकते हैं। ये केन्द्र आवासीय अथवा गैर अवासीय भी हो सकते हैं। जब छात्र इस केन्द्र मे आए, तो अध्यापक छात्र से सम्बन्धित जानकारी विवरणिका मे लिखेगा। जब छात्र सामंजस्य स्थापित कर ले (2-4 दिन), तब अध्यापक छात्र का मूल्यांकन (Graded Assessment tool से)करेगा एवं विवरिणका में छात्र की स्थिति स्पष्ट करेगा।

केन्द्र में प्राथमिकता सिर्फ लिखना, पढ़ना एवं गणित सिखाने तक ही सीमित न रहे बल्कि छात्रों में आत्मविश्वास का भी विकास किया जाना चाहिए जिससे वे अन्य छात्रों के साथ सामंजस्य स्थापित कर लें। छात्र को सरल भाषा में पढ़ाना चाहिए।

[राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुसार शिक्षा से वंचित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या तैयार की है इसी पाठ्यचर्या के आधार पर सभी विषयों की पुस्तकों का निर्माण किया गया है। पुस्तकों का निर्माण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि पुस्तकें छात्र के मानसिक स्तर के अनुसार हो, भाषा सरल हो एवं छात्रों के दैनिक जीवन से जुड़ी हुई हों।]

विशेष प्रशिक्षण देने से पूर्व शिक्षक को पर्याप्त तैयारी की आवश्यकता है क्योंकि शिक्षक को एक साथ अलग-अलग कक्षा के छात्रों को पढ़ाना होता है। उन्हें इसके लिए प्रशिक्षित होना चाहिए।

छात्रों को समूह में कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। सहपाठी शिक्षण पद्यति को भी ध्यान में रखकर शिक्षण करना चाहिए। प्रत्येक तीन माह के पश्चात् छात्र का मूल्यांकन करना चाहिए।

इस केन्द्र में छात्र तीन माह से दो वर्ष तक अध्ययन कर सकता है।

मूल्यांकन के उपरान्त उसे अगली कक्षा या इसी कक्षा का वह विषय पढ़ाना चाहिए जिसमें उसने वांछित ज्ञान न अर्जित किया हो। यदि छात्र आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश पाने योग्य हो गया है, तो उसे विद्यालय की मुख्यधारा में भेजना चाहिए।

5) छात्रों को आयु-अनुसार कक्षा में प्रवेश सुनिश्चित करना-

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र पर शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त उन्हें मुख्य धारा में आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश दिया जाना चाहिए। इसके लिए छात्र से किसी प्रकार का धन नहीं लेना है। ये छात्र अन्य छात्रों की तरह ही कक्षा में पढ़ेंगें एवं इनसे कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा। प्रवेश के समय छात्र को जन्म प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने के लिए बाध्य नहीं किया जा जाएगा।

6) (Follow up) अनुवर्तन करना

सरकारी विद्यालय की मुख्यधारा में आने के पश्चात् भी छात्र के सफल शैक्षणिक एवं संवेगात्मक एकीकरण का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए विशेष प्रशिक्षण केन्द्र के शिक्षक को कम से कम एक महीने तक छात्र का अवलोकन करना चाहिए। मुख्य धारा में आने के पश्चात छात्र सांमजस्य स्थापित करने के लिए अनेक समस्याओं जैसे पाठ्यचर्या से सम्बन्धित, सामाजिक कारणों से सम्बन्धित आदि से ग्रसित हो जाते है। विद्यालय के प्राध्यापक को स्वयं ऐसी समस्याओं को तुरन्त सुलझाना चाहिए। इन छात्रों के लिए सहायक कार्यक्रम (कक्षा अध्ययन के अतिरिक्त) भी होने चाहिए।

अधिनियम के अनुसार सभी शिक्षकों को इन छात्रों के साथ सामंजस्य स्थापित करने से सम्बन्धित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अनुसार छात्रों को यह सहायता चौदह वर्ष की आयु के पश्चात् भी उच्च प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने के लिए दी जायेगी।

7. प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करना सुनिश्चित करें-

प्राध्यापक को यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक बच्चा जिसने आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश लिया है वह उच्च प्राथमिक शिक्षा को पूर्ण करें। इसके लिए प्रत्येक वर्ष छात्र के विकास का अवलोकन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष –

हम चाहते है कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम भारतीय शिक्षा के इतिहास में मील का पत्थर साबित हो। इसके अर्न्तगत बनने वाले विशेष प्रशिक्षण केन्द्र सभी बच्चों को शिक्षित करें। जो लक्ष्य हम संविधान लागू होने के 60 वर्ष तक प्राप्त नहीं कर सके, उसे विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। आज एक शिक्षक के रूप में यह प्रण करना चाहिए कि हम राष्ट्र को ऐसे नागरिक देंगे जो विश्व में भारत का परचम लहरायें, यह तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक अपने अधिकारों एवं अपने कर्तव्यों से परिचत होगा अर्थात जब वह सही मायने में शिक्षित होगा।

विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्र के सन्दर्भ में समावेशित शिक्षा एवं बच्चों की भागीदारी

भूमिकाः-

भारतीय संविधान की धारा 21 (क) के अनुसार शिक्षा अब बच्चों का मौलिक अधिकार है। जैसे जीवन जीने का अधिकार वैसे ही शिक्षा भी सबका अधिकार। 1 अप्रेल 2010 से देश भर में 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए निः शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू कर ''शिक्षा का हक'' अभियान जारी है। ये अधिनियम जहाँ लोकतांत्रिक मूल्य 'समानता' को संरक्षित कर सभी बच्चों को समान रूप से शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराता है वहीं मुख्य रूप से उन बच्चों के लिए आशा की किरण दिखाता है जो किन्ही भी परिस्थिति वश विद्यालयी शिक्षा को पूरी नही कर पाये या फिर कभी विद्यालय में भर्ती ही नहीं हुए। ऐसे में शिक्षा से जुड़े उन सभी लोगों की ज़िम्मेदारी है कि वे इन वंचित वर्ग के बालक जो कभी विद्यालय नहीं गये या विद्यालयी शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाये हैं। उन्हें विद्यालय तक लायें और शिक्षा का हक दिलवायें। इन्हीं सुविधा वंचित वर्ग के बच्चों को हम विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों से भी संबोधित करते हैं। ये बच्चे विद्यालय की नियमित कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चों से शैक्षिक रूप से पिछड़े हैं। ये भी सत्य है कि शिक्षा के अधिकार अधिनियम ने काफी संख्या में ऐसे ही बच्चों को विद्यालय तक तो पहुँचा दिया है परन्तु असल चुनौती इन्हें मुख्य धारा से जोड़ने में हैं।

ऐसे में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण व चुनौतीपूर्ण हो जाती है कि वे किस प्रकार का अधिगम वातावरण प्रदान करें कि ये सुविधावंचित परिवेश से आने वाले बच्चे जो शैक्षिक रूप से दुर्बल है, विद्यालय की नियमित कक्षाओं में पढ़ने वाले अपने ही आयु वर्ग के बच्चों के साथ समायोजन कैसे करें।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अध्याय II के खण्ड 4 के प्रावधानों की अनुशंसा पर "स्पेशल ट्रेनिग सेन्टर" (STC) इसी दिशा में एक कदम हैं।

विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्रः-

ये विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्र "विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चो" को न्यूनतम तीन माह की अवधि से लेकर आवश्यकतानुसार अधिकतम दो वर्ष की अवधि के मध्य नियुक्त प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा शिक्षण प्रदान करेगें। प्रत्येक बालक के शिक्षण की अवधि का निर्धारण उनके प्रारम्भिक व्यवहार के आंकलन के आधार पर निर्धारित होगा।

विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्र आवासीय एवं गैर आवासीय दोनो प्रकार के होंगे तथा ये स्थापित विद्यालय के प्रांगण या विद्यालय प्रबंधन कमेटी के निर्देशानुसार किसी सुगम एवं सुरक्षित स्थान पर होगें। विद्यालयों में नामांकित विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों, को उसी विद्यालयों से संबधित विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्र पर भेजा जायेगा तथा जहाँ उन्ही बच्चों के लिए विशेष रूप से उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर

विकसित सेतु पाठयक्रम एवं इसी पाठयक्रम पर आधारित विशिष्ट शिक्षण–अधिगम सामग्री की सहायता से अधिगम अनुभव प्रदान कराया जाएगा। नियुक्त शिक्षक अधिगम के साथ ही साथ निश्चित समय–अन्तराल पर इनकी शैक्षिक उपलब्धियों का भी आंकलन कर आवश्यकतानुरूप उपचारात्मक शिक्षण प्रदान कर इन्हें शैक्षिक व भावात्मक रूप से सबल बनायेंगे। इस प्रकार जब शिक्षार्थी अपनी आयु अनुरूप कक्षा के बालकों के न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त कर लेगा तब उसे विद्यालय की नियमित कक्षाओं मे भेजा जायेगा।

इस प्रकार ये विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्र शैक्षिक व भावात्मक रूप से दुर्बल विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों की सशक्तीकरण का एक जरिया हैं।

विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्र एवं बहुविविधता:–

विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्रों पर आने वाले बच्चे विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से हैं। ये बच्चे न सिर्फ विभिन्न आयु वर्ग,कक्षा,से संबधित हैं बल्कि इन की रूचियाँ, इनके सीखने की गति, इनका पूर्व अनुभव, इनका परिपक्वता का स्तर, इनकी शारिरिक व बौद्धिक क्षमताए एवं सीखने के तरीके आदि सभी में बहुविविधता है।

अतएव इन केन्द्रों पर नियुक्त शिक्षकों को इस बहुविविधता ध्यान में रखते हुए ऐसी व्यवहारिक रणनीति तैयार करनी होगी जिससे इन बच्चो के शैक्षिक सामर्थ्य को गति मिले। ऐसे में ये अति आवश्यक है कि इन केन्द्रों पर नियुक्त शिक्षक समावेशित शिक्षा की अवधारणा को साकार करते हुए इन बालको को कक्षा मे भीतर एवं बाहर आयोजित गतिविधियों में इनकी सक्रिय और सार्थक भागीदारी को सुनिश्चित करें।

समावेशित शिक्षा की अवधारणा:–

सही अर्थो में आज किसी भी विद्यालय की कक्षा को हम समावेशन की अवधारणा से अलग कर सोच नहीं सकते।

समावेशित शिक्षा का अर्थ सभी को समाविष्ट करने से है। समावेशन केवल विकलांग बालकों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका अर्थ किसी भी बालक का बहिष्कार न होने से है।

समावेशित शिक्षा आयु, लिंग, वर्ग, जाति, शारीरिक व बौद्धिक क्षमताओं के आधार पर भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, समाजिक पृष्ठभूमि आदि किसी भी आधार पर भेदभाव का विरोध करती है।

'विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्रों' पर बहुविविधता एक मुख्य विशेषता है, प्रश्न उठता है कि इस बहुविविधता जैसी विशेषता के परिपेक्ष्य में इन केन्द्रों पर किस प्रकार पूर्णत: समावेशित वातावरण में बच्चों की भागीदारी को मूर्त रूप दिया जाये।

समावेशित शिक्षा, भागीदरी एवं शिक्षण-अधिगम वाातावरणः एक सुझाव- शिक्षा का अधिकार अधिनियम जहाँ सभी 6 से 14 वर्ष के बच्चों एवं विशेष रूप से उन बच्चों को जो शारिरिक व मानसिक रूप से असमर्थ हैं कठिन व विविध परिस्थितियों मे रहने वाले समाज के हाशिए पर जीने वाले तथा प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं, उन सभी के विद्यालय आने के स्वप्न को पूरा करने का प्रयास है वही समावेशित शिक्षा ने कक्षा में इस विविधता को स्वीकारा है। समावेशिन बिना भागीदारी के अधूरा है अतः शिक्षको की ये नैतिक जिम्मेदारी है कि वे बच्चों की भागीदारी प्रोत्साहित करने में मददगार बने।

विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्रों पर नियुक्त शिक्षकों को "विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों" की व्यवहारगत आवश्यकताओं, शैक्षिक आवश्यकताओं विभिन्न गतिविधियों के आयोजन, क्रियात्मक अनुसंधान व सुगम शैक्षिक वातावरण के निर्माण से संबधित पक्षों पर प्रशिक्षण व उन्मुखी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये।

1. **व्यवहारगत आवश्यकताओं में प्रशिक्षणः**-विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चे जो भावात्मक व शैक्षिक रूप से दुर्बल हैं, उनका विद्यालयी प्रांगण मे स्वागत किया जाये, शिक्षक इनके प्रति आदर भाव व वात्सल्यपूर्ण व्यवहार रखें, इनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनें, इनकी संवेदनात्मक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को जाने तथा इन बालकों से व्यक्तिगत रूप में जुड़े, तथा कक्षा का वातावरण सहयोगपूर्ण बनायें। शिक्षको को संवाद, प्रोत्साहन, अभिप्रेरणा, विवादो को सुलझाना, और किस प्रकार विभिन्न कार्य करने के तरीकों को स्वीकारना और सम्मान देना आदि कौशल में प्रशिक्षित किया जाये।

2. **सुगम शैक्षिक वातावरण के निर्माण का प्रशिक्षणः**- शिक्षकों को भयमुक्त व सहयोगपूर्ण कक्षा का वातावरण के निर्माण का कौशल विकसित करना होगा जिसमें अधिगम को प्रबलता मिले। बच्चे जहाँ बिना भय के अपने को अभिव्यक्त कर सकें बालक कुण्ठा से ग्रसित न हो ऐसा प्रतियोगिता रहित वातावरण हों, मानसिक प्रताडना, भेदभाव, शारिरिक दण्ड का प्रावधान न हो। बल्कि बच्चो को ज्ञान व कौशल के अतिरिक्त अभिवृतियों एवं मूल्यों का भी शिक्षण दिया जाये ऐसा सुगम वातावरण हो। ऐसे ही सुगम वातावरण में बालक ज्ञान एवं अनुभव को इस प्रकार समेकित कर सकें और जहाँ शिक्षा उन्हें ऊबाऊ और बोझिल न लगे।

3. **शैक्षिक आवश्यकताओं में प्रशिक्षणः**- विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्रों पर नियुक्त शिक्षकों को उन कौशलो में भली भाँति प्रशिक्षित किया जाये जो इन बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। इन अध्यापकों को बाल मनोविज्ञान, बालकेन्द्रित नवीन शिक्षण विधियाँ जैसे सहगामी शिक्षण, सहपाठी शिक्षण (पीयर ग्रुप), मल्टीग्रेड टीचिंग (बहुविविध कक्षा शिक्षण) की विभिन्न तकनीकों तथा क्रियात्मक अनुसंधान आदि में प्रशिक्षित किया जाये ये सभी संप्रत्यय कक्षा में भागीदारी को बढ़ावा देगें।

   बहुविविध कक्षा शिक्षण इन विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्रों की विशेषता है क्योंकि इन केन्द्रों पर एक ही कक्षा में विभिन्न आयु व वर्ग के बच्चे एक साथ बैठ कर शिक्षण प्राप्त करेंगे।

इसके साथ ही इन केन्द्रों पर नियुक्त शिक्षकों को प्राथमिक स्तर के सभी विषयों में पारंगत किया जाये। उन्हें ज्ञान को समेकित रूप में कैसे प्रस्तुत किया जाये, विषयों के परस्पर संबधों को तथा विषयों के सह–संबधों के उदाहरण दे कर उन्हे कक्षा में प्रस्तुत कैसे करें इनके लिए भी प्रोत्साहित एवं प्रशिक्षित किया जाये।

क्रियात्मक अनुसंधान में भी उन्हें प्रशिक्षित किया जाये ताकि इन बच्चो के अधिगम या समायोजन संबधी जो समस्यायें ये शिक्षक अनुभव करे उनका व्यवहारिक व कार्यात्मक समाधान निकाल सके तथा इन बच्चो के अधिगम मे आने वाले अवरोधों को दूर कर सकें।

4. **विभिन्न सार्थक गतिविधियों के आयोजन का प्रशिक्षण:–** कक्षा में बहुविविधता का ध्यान मे रखते हुए शिक्षकों को कक्षा के भीतर व बाहर ऐसी गतिविधियों व क्रियाकलापों के आयोजन का प्रशिक्षण दिया जाये जिसमें सक्षम और विभिन्न अक्षमताओं को झेल रहे बच्चे भी भागीदारी कर सकें। ये गतिविधियाँ सांस्कृतिक, शैक्षिक , कला शिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न विषयों के शिक्षण व अधिगम से सम्बन्धित, खेलकूद तथा अन्य कोई भी सार्थक तथा आदर पूर्ण गतिविधियाँ हो सकती हैं।

बच्चों की भागीदारी इन क्रियाकलापों में हो इसके लिए ये आवश्यक है कि शिक्षक सभी बच्चों से योजना बनाते समय चर्चा करें और सुनिश्चित करें कि प्रत्येक बच्चा अपनी क्षमताओं और रूचियों के अनुरूप इन क्रियाकलापों में योगदान दे पाये। ये गतिविधियाँ आकर्षक हो सुरक्षित हो तथा बच्चो को इनमें अपनी इच्छानुसार भाग लेने की स्वतन्त्रता हो प्रत्येक बच्चों की कुछ न कुछ उपलब्धि भी सुनिश्चित कर सकने वाली हों।

निष्कर्ष:–

शिक्षा के अधिकार अधिनियम ने शैक्षिक अवसरों की समानता को साकार रूप देने में मदद किया है।

परन्तु यह केवल बच्चों के लिए स्कूल का द्वार खोल देने से ही सिद्ध नहीं होगा। समानता तभी सिद्ध होगी जब समावेशित वातावरण मे शिक्षार्थी विद्यालय की गतिविधियों में बिना किसी अवरोध व भय के भाग ले सकें, और इन गतिविधियो सें न केवल अपने विषय ज्ञान को विकसित कर सकें बल्कि अपनी पूर्ण संभाव्य क्षमता को भी विकसित कर सकें।

इसके लिए उन्हें कक्षा व विद्यालय में ऐसा वातावरण प्रदान करना होगा जहाँ वे खुल कर प्रश्न पूछे अपने सहपाठियों और शिक्षको के साथ संवाद करें, अपने अनुभव बाँट सके, बिना भय अपनी शंकाओं का निवारण कर सके तथा सुरक्षित महसूस करते हुए अपनी स्वेच्छा से कक्षा के भीतर व बाहर की गतिविधियों में भाग लेने के लिए अभिप्रेरित हों।

समावेशन के फलस्वरूप कक्षा की विविधता सभी बच्चो के सीखने को समृद्ध व प्रेरक बनाती है। इस

समावेशित शिक्षा के लिए भागीदारी जहाँ आधार है वहीं ये बालको को अपने सामर्थ्य अनुरूप सीखने की स्वतन्त्रता देती है।

भागीदारी में भौतिक, सामाजिक व व्यवहार संबधी बाधाओं को समझने व उनके समाधान की भी आवश्यकता है। शिक्षक, पूर्वाग्रह, पक्षपात, भेदभाव, विविधता के प्रति संकीर्णता, संज्ञानात्मक आधार पर बालकों को वर्गीकृत करने वाले, शारिरिक दण्ड इन नकारात्मक तथ्यों से दूर रह कर ऐसा वातावरण तैयार करें जहाँ हर बच्चा शिक्षक पर पूरी तरह निष्ठा कर पाये।

इस प्रकार विशिष्टि प्रशिक्षण केन्द्र का जहाँ एक मुख्य उद्देश्य बच्चों को अधिगम के न्यूनतम स्तर तक ले जा कर शैक्षिक सबलता प्रदान करना है, वही समावेशन व भागीदारी उसके इस लक्ष्य प्राप्ति को गति प्रदान करते है जिससे समाज के हाशिए पर जीने वाले बच्चे समाज की मुख्य धारा में सशक्त रूप से खड़े हो सकें।

बहु श्रेणी एवं मिश्रित योग्यता शिक्षण

भारत के शैक्षिक सांस्कृतिक व सामाजिक संदर्भों में 1 अप्रेल 2010 का दिन एक एतिहासिक दिन है। इस दिन अगस्त 4, 2009 को लोकसभा द्वारा पारित 'शिक्षा का अधिकार विधेयक अन्तत: 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए मौलिक अधिकार बन गया है। यह कानून शिक्षा के पटल पर चल रहे कई संघर्षों को राज्य की स्वीकृति मिलने का प्रतीक है।

हमारे देश मे करीब 100 साल पहले से अनिवार्य शिक्षा की बात आरंभ हो गई थी। यदि वैश्विक संदर्भ में देखे तो करीब 200 साल पहले फ्रांस में और इसके बाद इंग्लैंड में अनिवार्य शिक्षा का कानून आया। भारत में भी अंग्रेजी जमाने से अनिवार्य शिक्षा के लिए शिक्षा की संहिता होती थी और उसमें हर बच्चे की शिक्षा का लक्ष्य रखा गया था। हमारे यहाँ आजादी के बाद अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग कानून बने और उनमें 'अनिवार्य' की परिभाषा ही हर बच्चे को स्कूल लाना रखी गई थी। लेकिन इसके बावजूद एक समस्या बनी हुई थी और जो अभी तक बनी हुई है कि बच्चों के लिए स्कूल की और कक्षाएँ तो बहुत बनीं लेकिन बच्चों का सीखना नहीं हो पाता था और इस स्थिति के प्रति अपने-आपको कोई जवाबदेह भी नही मानता। 'शिक्षा का अधिकार' आने से इसके बारे में एक जवाबदेही विकसित हुई है। मूलत: यदि समस्या की गहनता को देखें तो स्वतंत्रता के 60 साल बाद भी इस देश में बहुत बड़ी तादाद में बच्चे को स्कूल से बाहर हैं ऐसे में यह विधेयक प्रत्येक बच्चे को स्कूल में नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा मुहैया करवाने का एक कानूनी प्रारूप प्रदान करता है। इस विधेयक में बहुत स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सभी बच्चों का पड़ोस के स्कूल में प्रवेश सुनिश्चित करना राज्य की जिम्मेदारी एवं बाध्यता है। यदि कोई भी बच्चा स्कूल से बाहर है तो यह कानून का उल्लंघन माना जाएगा और उसे स्कूल में लाना राज्य जिम्मेदारी होगी। यदि बालक-बालिकाएँ स्कूल में आने से वंचित रह जाते हैं तो यह कानून के उल्लंघन की स्थिति होगी। यह बहुत ही सार्थक और महत्वपूर्ण बात है। दूसरा महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि कानून में बहुत अच्छी तरह से परिभाषित किया गया है कि राज्य की क्या-क्या जिम्मेदारियाँ हैं। यह कानून जिम्मेदारी के मुद्दे को कल्पना के लिए खुला नहीं छोड़ता। बहुत स्पष्टता से कहा गया है कि राज्य बच्चे को पड़ोस में स्कूल उपलब्ध करवाने के लिए किस तरह बाध्य है और वास्तव में स्कूल के क्या मायने हैं?

इस अधिनियम के अध्याय दो के चौथे खंड में बहुत ही स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यदि छह वर्ष से अधिक आयु वाला कोई बच्चा या बच्ची पहले कभी विद्यालय में औपचारिक शिक्षा हेतु प्रवेश नहीं लिया है अथवा प्रांरभिक शिक्षा पूरी किए बिना विद्यालय छोड़ दिया है तो अब उसे प्रवेश उसकी आयु के मुताबिक ही 'आयुनुसार कक्षा' में मिलना चाहिए। उदाहरण के तौर पर शारदा नाम की 10 वर्षीय बालिका है। पाँच वर्ष की आयु में उसने अपने पड़ोस में ही प्राथमिक विद्यालय की पहली कक्षा में प्रवेश लिया था अभी आधा सत्र भी नहीं बीता था कि घरेलू परिस्थितियों के रहते वह विद्यालय त्यागने को बाध्य हो गई। इस समय शारदा दस वर्ष की है। आम धारणा के अनुसार उसे कक्षा एक में दाखिला दिया जाएगा परंतु नि:शुल्क और अनिवार्य

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अध्याय दो खंड चार के अनुसार उसे अपनी आयु के अनुसार उपयुक्त कक्षा अर्थात पाँचवी कक्षा में प्रवेश पाने का अधिकार है। इस अधिकार के पीछे मनोवैज्ञानिक व सामाजिक तर्क यह है कि अपने से छोटी आयु वाले बच्चों के बीच 'शारदा' को भावात्मक सामंजस्य बैठाने में असुविधा हो सकती है। दूसरा तर्क यह भी है कि इस आयु विशेष तक आते-आते शारदा के पास अनुभवों का ज़खीरा इकट्ठा हो गया है जो उसे पठन-लेखन की दुनिया में शामिल होने के लिए द्रुतगति में मदद करेगा। अत: यह अधिनियम अनुशंसा करता है कि बच्चे को उसकी आयु के अनुसार ही निर्धारित कक्षा में प्रवेश देना चाहिए। इसे अनुशंसा के औचित्य पर यघपि किसी को आपत्ति नहीं है तथापि सवाल यह उठता है कि जो बच्चे कभी विद्यालय गए ही नहीं अथवा जिन्होंने प्रारंभिक शिक्षा पूरी किए बिना विद्यालय छोड़ दिया था और अब उम्र अनुसार कक्षा में प्रवेश ले रहे है तो क्या वे पठन-पाठन लेखन व अन्य कक्षाऐं गतिविधियों में नियमित रूप से पढ़ रहे बच्चों के समकक्ष भाग में पहले से मौजूद बच्चे 'गैस, दाब व ऊर्जा का पाठ पढ़ रहे है और भिन्न के सवाल हल कर रहें है दूसरी और 'शारदा' जैसे बच्चे अक्षरो व शब्दों की बनावट भी नहीं पहचानते तो क्या अकादमिक कार्यो व उपलब्धियो में वे पीछे नहीं रहेंगे? अगर अध्यापक विशेष रूप से इन पर ध्यान केन्द्रित करते है तो नियमित रूप से पढ़ रहे बच्चों के समय का अपव्यय होगा और यदि उन पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। तो इस प्रकार के बच्चों के साथ अन्याय होगा। ऐसी स्थिति के लिए यह अधिनियम विशेष प्रशिक्षण केन्द्र (स्पेशल ट्रेनिंग सेन्टर) की बात सुझाता है।

अधिनियम का अनुभाग '4' कहता है कि आयु विशेष के अनुसार निर्धारित कक्षा मे जाने से पहले पठन लेखन व गणितीय कौशल हासिल करने के लिए विद्यालय अथवा सुरक्षित आवासीय सुविधाजनक केन्द्रों पर 'विशेष प्रशिक्षण केन्द्र' चलाए जाएँ जिनकी न्यूनतम अवधि 3 माह व अधिकतम अवधि दो वर्ष तक ही हो सकती है। इन केन्द्रों पर बच्चो की पाठ्यचर्या का विषयों के संदर्भ में कुछ इस प्रकार की तैयारी की जाए कि वे आयु आधारित कक्षा में जाने के लिए मानसिक भावात्मक व शैक्षिक रूपों से सक्षम हो सके।

जाहिर सी बात है कि इन विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रवेशित बच्चों की आयु भिन्न-भिन्न होगी जैसे कि शारदा दस वर्ष की है तो कोई बच्चा 8 वर्ष का है, कोई 9 अथवा 11 वर्ष का है। यानि कि एक ही केन्द्र पर भिन्न आयु वाले बच्चे यह भी संभव है कि इन सभी बच्चो के पास तरह-तरह के अनुभव हो जो वे अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक पृष्ठभूमि से लेकर आए हुए है। मिसाल के तौर पर कोई बच्ची अपनी माँ के साथ घरेलू सहायिका का कार्य करती है, तो कोई बच्ची फल संरक्षण केन्द्र पर कार्य करती है, कोई बच्चा सब्जी का ठेला लगाता है, तो कोई चाय के ढाबे पर काम करता है, इस तरह से उनके पास अपने-अपने क्षेत्रों से जुड़े तमाम अनुभव है हुनर संबधी दक्षताएँ है। यह भी संभव हो सकता है कि किसी को अपने कार्य स्थल पर मुद्रिण समृद्ध परिवेश मिला है तो संभवत: उसे पढ़ाना भी आता हो और गणितीय कौशल भी कुछ सीमा तक हासिल हो। तो ऐसी कक्षा अध्यापक को एक बहुत ही समृद्ध परिवेश प्रदान करेगी सीखने की प्रक्रिया को संचालित करने के संदर्भ में।

इसे हम 'बहुश्रेणी मिश्रित योग्यता वाला अध्यापन भी कह सकते है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम आने से पहले भी हमारे देश में बहुत से ऐसे प्राथमिक विद्यालय व अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र थे जहाँ सीखने सिखाने की प्रक्रिया 'बहुश्रेणी मिश्रित योग्यता' की प्रकृति वाली ही थी। उसके पीछे कारण था हमारे देश की भौगोलिक विविधता।

भारत अनेक विविधताओं एवं विभिन्नताओं से भरा हुआ देश है। यह विविधता यहाँ की संस्कृति एवं भाषा में ही नहीं पाई जाती अपितु यहाँ की भूमि एवं जलवायु भी अनेक विभिन्नताएँ लिये हुए है। संभवतया भूमि एवं जलवायु में विभिन्नता होने के कारण ही यहाँ की संस्कृति, भाषा, रहन-सहन के तरीकों में विभिन्नता एवं विविधता देखने को मिलती है। कहीं-कहीं की भूमि बहुत ही उपजाऊ एवं खनिजों से युक्त है और कहीं-कहीं की भूमि एकदम बंजर। कहीं-कहीं की भौगोलिक परिस्थितियाँ रहने के बहुत ही अनुकूल है परन्तु भारत में बहुत से ऐसे स्थान हैं जहाँ की भौगोलिक स्थितियाँ एवं परिस्थितयाँ रहने के अनुकूल नहीं हैं। भूमि, जलवायु तथा अन्य भौगोलिक स्थितियों के अनुकूलता के आधार पर ही मानव अपने निवास के स्थान चुनता है। अत: ऐसे स्थान जहाँ भूमि बंजर हो, अथवा परिवेश एक बड़ी जनसंख्या को जीने के साधन उपलब्ध कराने मे समर्थ न हो, बहुत ही कम लोग निवास करते हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि बहुत से ऐसे स्थान हैं जहाँ अनेक सामाजिक आर्थिक एवं भौगोलिक कारणों से जनसंख्या कम होती हैं। ऐसे स्थानों में जनसंख्या के आकार के अनुरूप पाठशालाओं की संख्या भी सीमित हो जाती है। यदि पढ़ने वाले बच्चों की संख्या अधिक भी है तो भी अनेक सामाजिक कारण यथा लड़कियों को विद्यालय न भेजना माता-पिता का शिक्षा के प्रति जागरूक न होना, बच्चे का अपने माता-पिता के साथ दूसरे स्थान पर चले जाना, बच्चे का ना काम पर जाना आदि की वजह से पढ़ने वाले बच्चों की संख्या बहुत ही कम हो जाती है। ऐसे स्थानों की प्राथमिक पाठशालाओं में कुल विद्यार्थियों की संख्या इतनी कम होती है कि मात्र एक कक्षा के बच्चों की संख्या के बराबर ही हो पाती है। अत: ऐसी पाठशालाओं में विद्यार्थियों की संख्या के अनुसार ही अध्यापकों की संख्या भी कम होती है। कहीं-कही पर एक ही अध्यापक की नियुक्ति का प्रावधान होता है। इस प्रकार की पाठशालाओं में बहुश्रेणी शिक्षण पद्धति द्वारा अध्ययन-अध्यापन का कार्य होता हैं।

भारत में 1978 से अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली आरंभ हुई जिसका उद्देश्य ऐसे बच्चों को शिक्षा देना था जो सामाजिक-आर्थिक कारणों से औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से लाभ नहीं उठा पा रहे थे। अनौपचारिक शिक्षा के केन्द्रों में सिर्फ वही बच्चे नहीं आते थे जो कभी पाठशाला गये ही नहीं अपितु वे बच्चे भी आते थे जिन्होंने किन्ही कारणों से पढ़ना बीच में ही छोड दिया था। तात्पर्य यह है कि बहु मिश्रित योग्यता वाले बच्चे ऐसे केन्द्रों में पढ़ने आते थे और पढाने वाला अनुदेशक भी एक ही होता था। एक केन्द्र पर 20 से 25 बच्चों के पढ़ने का प्रावधान होता था। इन बच्चों में कुछ बच्चे ऐसे थे जो कभी भी पाठशाला नहीं गये थे, कुछ ऐसे थे जिन्होंने पहली, दूसरी अथवा तीसरी कक्षा पढ़ रखी हो। कोई 6 वर्ष की अवस्था का होता था तो कोई 7,8 अथवा 14 वर्ष की अवस्था का भी होता था। अत: ऐसे केन्द्रों पर बहुश्रेणी अध्यापक यदि पढ़ाने के तरीके में परिर्वतन नहीं करते तब बच्चों के पठन-पाठन पर, सीखने के प्रति बच्चों के उत्साह पर, कक्षा में बच्चों के ध्यान पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए बहुश्रेणी एवं मिश्रित योग्यता अध्यापन की आवश्यकता महसूस

हुई। बहुत से अभिभावक व अध्यापकों को भी यह मानना है कि इस तरह के कक्षाऐं परिवेश में सीखना प्रभावशाली नहीं बन सकता।

संभवतया: वे संयुक्त परिवार में पल रहे बच्चों के सीखने के स्तर से कुछ अनुमान लगा सके।

एक संयुक्त परिवार में दादा-दादी या नाना-नानी के साथ माता-पिता, बुआ, मौसी, चाची-चाचा ताऊ-ताई और भिन्न-भिन्न आयु के बच्चे होते है। अनुभव बताते है कि ऐसे परिवेश में भाषायी विकास के साथ-साथ भावात्मक व सांस्कृतिक विकास भी बहुत समृद्ध होता है। अत: 'बहुश्रेणी मिश्रित योग्यता अध्यापन' को नकारात्मक रूप में न लेकर इसके सबल बिंदुओं पर ध्यान देना होगा।

विशेषताएँ

★ सहभागिता द्वारा सीखने का अवसर प्राप्त होता है।
★ विभिन्न अवस्था वाले बच्चों में सामूहिक कार्य करने की भावना का विकास होता है।
★ शिक्षार्थियों को स्वंय जानने, महसूस करने और कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है।
★ अपने आप सीखने की योग्यता का विकास होता है।
★ बच्चों में नेतृत्व की भावना का विकास होता है।
★ बच्चों में उत्तरदायित्व की भावना का विकास होता है।
★ अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान सृजन के अवसर प्राप्त होते है।
★ पूर्व में अर्जित अनुभवों को सभी के साथ साझा करने की सुलभ विद्यमान रहती है।
★ सहपाठियों से किसी भी प्रकार की तुलना होने या करने की आशंका का भय नहीं रहता क्योंकि सभी के पास विशेष प्रकार के अनुभव हैं।
★ सीखने के अपनी गति व शैली के अनुसार ही सीखने की प्रक्रिया संचालित होती है।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों पर अध्यापक निम्नलिखित तरीकों का उपयोग कर अध्ययन-अध्यापन के कार्य को प्रभावशाली बना सकते हैं:-

1. **समूह कार्यों को प्रोत्साहित करना:-** योग्यता के आधार पर बच्चों को विभिन्न समूहों में बाँट कर उन्हें विभिन्न प्रकार के क्रिया कलाप करना एक अच्छा अनुभव साबित हो सकता है। इस प्रकार समूह के कार्य करने से बच्चों को सीखने का अधिक समय मिल जाता है। शिक्षार्थी अपने अनुभवों के आधार पर सीखने की क्रियाओं को संगठित करते हैं। यहाँ पर यह आवश्यक है कि अध्यापक समूह बनाते समय विशेष ध्यान बरतें।

★ एक समूह में एक ही योग्यता वाले बच्चों को रखें ऐसा आवश्यक नहीं है।

* कार्य देने से पहले कार्य तथा दक्षता से संबंधित मुख्य बातें बतानी चाहिये।
* अध्यापक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे एक दूसरे पर हावी न हों।
* बीच-बीच में शिक्षार्थियों के क्रिया-कलाप को परखते रहना चाहिए।
* आरंभ में छोटी अवधि के कार्य ही देने चाहिए।
* अध्यापक को एक और महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी चाहिए वह यह कि जो समूह आरम्भ में बनाया है वह पूरे वर्ष वही न रहे। बीच-बीच में बच्चों को एक समूह से दूसरे समूह में सम्मिलत करना चाहिए।
* ग्रुप लीडर को भी बदलना चाहिये जिससे प्रत्येक बच्चे की नेतृत्व करने का समान अवसर मिले।
* एक समूह 4-5 बच्चों से अधिक का न हो।
* समूह को ऐसे बैठाना चाहिये कि वे एक-दूसरे के क्रिया-कलापों में अवरोध उत्पन्न न करें।

समूह कार्य की उपयोगिताः-

* ऐसे शिक्षार्थी जो अध्ययन-अध्यापन की क्रिया में भाग नहीं लेते तथा चुप रहते हैं वे समूह में आसानी से सीखते हैं और बोलने का भी प्रयास करते हैं।
* शिक्षार्थियों को क्षमताओं, रूचि एवं विचारों के अनुसार सीखने का अवसर प्राप्त होता है।
* स्वयं कार्य करने के अवसर मिलने पर बच्चे में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न होती है। आरंभ में शिक्षार्थियों को समूह में कार्य करने में कठिनाई आ सकती है परंतु धीरे-धीरे वे इस व्यवस्था में रूचि लेने लगते हैं।

कक्षा प्रमुख की सहायता लेनाः- अध्यापक के लिए आवश्यक है कि वह प्रत्येक समूह में योग्यता के आधार पर मॉनीटर का चुनाव करे। मॉनीटर अध्यापक के बहुत से कार्यों में हिस्सेदारी बँटा सकते हैं। जब अध्यापक एक समूह को पढ़ा रहा हो/रही हो तब मॉनीटर दूसरे समूह के क्रिया कलापों पर ध्यान दे सकते हैं।

इसके अतिरिक्त वह निम्नलिखित कार्यों में अध्यापक की सहायता कर सकते हैंः–

- ★ समूह–कार्यों का संगठन एवं संचालन करना।
- ★ शिक्षार्थियों को अध्ययन हेतु तैयार करना।
- ★ कक्षा से बाहर के क्रिया–कलापों में शिक्षार्थियों का नेतृत्व करना।
- ★ कक्षा में अनुशासन के पश्चात् शिक्षार्थियों को अभ्यास करवाने में सहायता करना।

मॉनीटर की सहायता लेते समय अध्यापकों को अनेक बातों का ध्यान रखना चाहिये।–

- ★ सभी विषयों एवं सभी क्रिया–कलापों के लिए एक ही मॉनीटर का होना उत्तम नहीं है।
- ★ एक समूह का मॉनीटर किसी दूसरे समूह से नहीं लिया जाना चाहिए।
- ★ क्रिया–कलापों एवं अवसर की प्रकृति देखने हेतु मॉनीटर को बदलते रहना अच्छा रहता है।

मॉनीटर का चुनाव करते समय अध्यापक को निम्न लिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिएः–

- ★ मॉनीटर में विषय वस्तु को समझने की योग्यता एवं क्षमता है अथवा नहीं।
- ★ अपने साथियों को पाठ समझाने की तत्परता एवं क्षमता कितनी है।
- ★ अध्यापक से पाठ समझने की तत्परता।
- ★ समूह को अनुशासन में रखने की क्षमता।
- ★ सहयोग, सहानुभूति, नेतृत्व आदि की भावना है अथवा नहीं।

3. **शिक्षार्थियो का आपस में पढ़नाः–** बहुश्रेणी एवं मिश्रित योग्यता वाले समूह में अध्यापक के कार्य को हल्का एवं कम करने में शिक्षार्थियों का आपस में पढ़ना बहुत महत्व रखता है। किसी भी नये पाठ, समस्या पर या पाठ की पुनरावृत्ति में शिक्षार्थी एक दूसरे की अच्छी प्रकार से सहायता कर सकते है। बहुत से बच्चे ऐसे होते हैं जो पुनरावृत्ति के लिए अथवा कोई बिंदु समझ में न आने पर अध्यापक के पास जाने में हिचकते हैं। ऐसे में उससे उसके जानकर साथी उसे अच्छी प्रकार से पढ़ा सकते हैं। कई बार अध्यापक एक समूह विशेष के लिए ऐसी व्यवस्था कर सकता है जिसमें अधिक क्षमता वाला बच्चा दूसरे बच्चे को पाठ समझाये।

   शब्दों की रचना, पत्र लिखना, निबन्ध लिखना आदि क्षेत्रों में बच्चे एक–दूसरे की सहायता कर सकते हैं।

4. **साथियों का आपस में समूह-निर्माण:-** विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों के सफल संचालन के लिए अध्यापक को यह चाहिये कि वह समूह विशेष में भी छोटे-छोटे समूह बनाये जो आपस में पठन-पाठन का कार्य कर सकें, पाठ को समझने में मदद कर सकें। ऐसे छोटे समूहों का निर्माण कमजोर एवं बुद्धिमान शिक्षार्थियों के योग से होता है। चूँकि ये एक ही अवस्था वाले होते हैं अतः आपस में अच्छी मित्रता हो जाती है। दोनों ही स्तर के शिक्षार्थी एक दूसरे की सहायता करते हैं।

इस प्रकार के समूह अध्यापक की निम्नलिखित रूप से सहायता कर सकते हैं:-

1. कमज़ोर एवं औसत दर्ज़े के शिक्षार्थियों को एक विशेष स्तर तक ला पाने का प्रयास करने में।
2. कमज़ोरियों के निवारण में अध्यापक की सहायता करना।
3. शिक्षार्थियों में सीखने की प्रक्रिया में आपस में सहयोग एवं सहभागिता की भावना का विकास करना।
4. साथियों को कर्त्तव्यों के बारे में बताना तथा केंन्द्र की गतिविधियों से परिचित कराना।
5. साथियों को उनके अभ्यास कराना।
6. पुनरावृत्ति में सहायता करता।

5. **स्व - अध्ययन:-** यह पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि बहुश्रेणी एवं मिश्रित योग्यता वाले समूह में अध्यापन के लिए अध्यापक को बहुत से उत्तरदायित्व एक साथ निभाने होते हैं। इन उत्तरदायित्वों के सही निर्वाह में अनेक तरीके सहायता करते हैं। शिक्षार्थियों का समय-समय पर स्वयं अध्ययन करना भी अध्यापक के ऊपर निर्भरता को कम करता है। अध्यापक को चाहिये कि वह केन्द्र पर ऐसी सामग्री रखे जिससे बच्चे स्वयं ही सीख सके।

उदाहरण के तौर पर-मिट्टी की गोलियाँ, कंचे आदि रंग बिरंगे खिलौने, विभिन्न आकृति एवं आकार वाली वस्तुएँ चित्रों की सहायता से कहानी का निर्माण करना, तस्वीरें एकत्रित करना, रंग भरना, फ्लैश कार्ड की सहायता से वाक्य निर्माण आदि।

6. **सामूहिक अध्यापन:-** सामूहिक अध्यापन हेतु अध्यापक ऐसे विषय चुनते हैं ज़िनके बारे में सभी बच्चों को जानकारी देनी है तथा सभी को एक जानकारी देने में कोई बाधा नहीं है। उदाहरण के तौर पर:-

* राष्ट्रीय/धार्मिक त्यौहार
* मेले / ऋतुओं का वर्णन
* व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में।

★ अपने आस पास के वातावरण को साफ़ रखने के बारे में।

★ मिट्टी का कार्य

★ खेल कूद

★ सांस्कृतिक कार्यक्रम

★ गीत / नृत्य प्रतियोगिताएँ

★ कहानी कहना

★ सामाजिक कार्य

अध्यापक बहुत से ऐसे क्रिया कलापों का चुनाव कर उन्हें इस रूप में संगठित कर सकता है कि प्रत्येक बच्चा उस क्रिया में भाग ले सके।

7. **भ्रमणः**– बहुत से ऐसे विषय होते हैं जहाँ किताबी ज्ञान एवं कक्षा अध्यापन के स्थान पर भ्रमण आदि बहुत प्रभावशाली रहते हैं। भ्रमण पर ले जाने से पहले अध्यापक को चाहिए कि वह बच्चों को यह बताए कि जहाँ पर हम जा रहे हैं वहाँ हमें क्या देखना है, किस क्रम में देखना है।

अध्यापक के लिए आवश्यक है कि भ्रमण पर जाते समय वह शिक्षार्थियों को निम्नलिखित नोट करने के लिए कहेः–

★ वस्तु स्थिति को देखना एवं रिकार्ड करना।

★ पहले से प्राप्त लिखित सामग्री एवं यथार्थ में देखी गई बातों की तुलना करना।

★ वस्तुस्थिति के बारे में अपनी धारणा, अपना मत जाहिर करना।

★ जो ज्ञान प्राप्त किया है, जो देखा है उसका प्रतिवेदन प्रस्तुत करना।

8. **समुदाय में लोगों से सहायता लेनाः**– समुदाय की सहभागिता के बिना केन्द्र के सफल संचालन की अपेक्षा नहीं की जा सकती। केन्द्र के संगठन में ही नहीं अपितु बहुत सी सीखने – सिखाने की प्रक्रियाओं में भी समुदाय के लोगों की भागीदारी का उपयोग किया जा सकता है। कारपेंटर, जुलाहा, लोहार आदि से हुनर का प्रदर्शन करवाया जा सकता है। कृषक ऋतुओं, फसलों एवं बीजों की सही जानकारी दे सकते हैं। डॉक्टर तथा दूसरे स्वास्थ्यकर्ता सफाई, स्वच्छता एवं विभिन्न बीमारियों व उनके रोकथाम के बारे में विस्तार से बता सकता हैं। डाकिया डाकघर की पूरी प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बता सकता है यह अध्यापक की सूझ–बूझ एवं दूरदर्शिता पर निर्भर करता है कि वह किससे और किस प्रकार की सहायता ले।

बच्चों की कल्पना और सोच विकसित करने तथा नवीनता पाने का पुस्तकालय सर्वोत्तम साधन है। पुस्तक स्वयं एक शिक्षा–गुरू है और पुस्तकालय विद्यालय है। विद्यालय में लोग ज्ञान पाने के सिर्फ साधन पाते हैं जबकि पुस्तकालय में जाकर तो वे स्वंय ज्ञान प्राप्त करते हैं। एक अच्छा पुस्तकालय कई शिक्षकों की गरज पूरी करता है। शिक्षक की तरह पुस्तकालय विद्यार्थियों को न तो धमकाता है न उनसे अनुशासन पलवाता है, न कक्षा मे चढ़ाता और उतारता है, न मिथ्या स्पर्धा में प्रवेश कराता है और न परीक्षा का भय ही उत्पन्न करता है। फिर भी वह पल–पल में अपने पास आनेवालों को प्रेम पूर्वक विनय–पूर्वक और रूचि–पूर्वक पढ़ाता रहता है। किसी भी स्थान में, चाहे विद्यालय के साथ अथवा विद्यालय के बिना विशेष प्रशिक्षण केन्द्र एवं विद्यालय भी पुस्तकालय शिक्षा की एक स्वयं पद्धति स्वरूप है। हर एक विद्यालय में पुस्तकालय को एक अतिरिक्त शिक्षक माना जाना चाहिए। शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को पूरे समय तक पढ़ाते रहने का अपना मोह छोड़कर उनको पुस्तकालय में जाने की अधिक से अधिक स्वतंत्रता दें। स्वाध्याय–पद्धति में विद्यार्थियों के लिए पुस्तको के परिचय की अच्छी व्यवस्था रहती है। प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था में बच्चों को विद्यालय में आधे समय तक पुस्तकालय में रखने से शिक्षा का काम भी निश्चित रूप से अधिक सुदृढ़ बनेगा। जिस समय में विद्यार्थी पुस्तकालय में जाकर बैठे उस समय में शिक्षक वहाँ एक अच्छे ग्रंथपाल की भूमिका निभाएँ। पुस्तकालय की कौन–कौन सी पुस्तक अच्छी हैं, किनको कौन सी पुस्तक दी जाए आदि काम शिक्षक वहाँ कर सकते हैं। पुस्तकालय विद्यालय के रूप की तरह ही प्रयोगशाला के रूप में भी काम करता रहेगा।

जब पुस्तकालय एक शिक्षा–पद्धति का रूप लेता है तो अपने संग्रह में और अपनी रचना में वह एक सुव्यवस्थित स्थान का स्वरूप धारण कर लेता है। प्रवेशिका अथवा बालपोथी से लेकर आठवी कक्षा तक की भाषा इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान आदि विषयों की पुस्तकें पुस्तकालय में होनी चाहिए। क्रम–क्रम से आगे बढ़ने वाली पुस्तकों को पढ़ते–पढ़ते पढ़ने वाले का ज्ञान भी एक सिलसिले के साथ आगे बढ़ता रहेगा। इस तरह सिलसिले से टांड पर रखी गई पुस्तकें पाठ्यपुस्तकों की गरज पूरी करेगी। व्यवस्था, शान्ति, सभ्यता और विनय की शिक्षा देते रहने का प्रबन्ध भी पुस्तकालय कर सकेगा पुस्तको का उपयोग कैसे करना, उनको किस तरह से पढ़ना पास में बैठ कर पढ़ने वाले के साथ कैसा व्यवहार करना, कैसे आना और कैसे जाना, बातचीत किस तरह से करना आदि बातों को सीखने में अपने आप ही काफी पढ़ाई हो जाती है। इस तरह पुस्तकालय की भी अपनी एक शिक्षा पद्धति है जो बहुश्रेणी मिश्रित योग्यता वाले शिक्षण में बहुत कारगर है।

मादक पदार्थो की दुनिया एवं विद्यालय शिक्षा से वंचित बच्चे

हम अध्यापक एक सामाजिक प्राणी होने के नाते प्रतिदिन अपने आसपास के लोगों के सम्पर्क में आते है और अक्सर ये बातें हमें सुनने और देखने को मिलती है कि हर दूसरा - तीसरा व्यक्ति नशे की गिरफ्त में है। साथ ही हम एक अध्यापक होने के साथ-साथ समाज के सदस्य होते हैं और अपने मित्रों, परिजनों एवं समाज के सदस्यों के सम्पर्क में किसी न किसी रूप में रहते हैं। इन सभी से यह सुनने को मिलता है कि आप अध्यापक राष्ट्र के निर्माता होने के साथ-साथ आपकी सामाजिक परिवर्तन में अग्रिम भूमिका होती है। इसलिए समाज में धनात्मक बदलाव के साथ-साथ जो कुरीतियाँ है उसको दूर करने की जिम्मेदारी भी हमारी होती है।

वर्तमान समय में हमारे समाज में कई बुराईयाँ घर कर चुकी है उन में से एक है छोटे-छोटे बच्चों में असामाजिक चीज़ों का सेवन करना। इस तरह की आदतें उन बच्चों में अधिकतर देखी जाती है जो सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े होते हैं, एवं सामान्य शिक्षा व्यवस्था से मीलों दूर रहते है इस का यह मतलब नहीं है कि सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ समाज के बच्चे इस तरह की आदतों के आदी नही होते। इस तरह की आदत को 'सब्सटैंस एब्यूज' कहते हैं। 'सब्सटैंस एब्यूज' के बारे में सामान्यतया दिन-प्रतिदिन हमें संचार के माध्यम से भी जानकारी मिलती रहती है:-

1. बच्चों के बस्ते में किताबों की जगह नशीली चीजें प्राप्त हुई।
2. छात्र असामाजिक एवं आपत्तिजनक वस्तु खरीदते पकड़े गऐ, इत्यादि।

सामान्यतया छोटे-छोटे बच्चे नशीले पदार्थों के आदी देखे जा सकते है। सड़क पर कचरा चुनते हुए, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा, बाजार में चौक चौड़े हों पर सामान बेचते बच्चे, विद्यालय में शिक्षा पा रहे या घरों में काम करने वाले बच्चों में से कोई भी इस तरह के नशीले पदार्थों के आदी हो सकते है। इस तरह के दुर्व्यसन से ग्रसित बच्चों में निम्न लक्षण परिलक्षित होते है:-

अ. असामान्य भाषा का प्रयोग

ब. व्यवहार में असामाजिक परिवर्तन

स. सामाजिक संबंधों में परिवर्तन

द. पारिवारिक भूमिका एवं खान-पान में असामान्य परिवर्तन

य. शैक्षणिक प्रक्रिया में अरूचिता इत्यादि।

प्रश्न अब ये उठता है कि आखिर 'सब्सटैंस एब्यूज' कहते किसे है? सामान्य भाषा में कहें तो, "किसी असामाजिक चीजों एवं नशीले पदार्थों की आदत हो जाना जिसके बिना रह पाना संभव न हो सके"।

जैसे-

1. बूट पालिश

2. खाँसी की दवाई का अधिक प्रयोग
3. थिनर (स्याही मिटाने के लिए उपयोग में आने वाला)
4. पान मसाला का खाली पाउच
5. बीड़ी, सिगरेट, पान इत्यादि के खाली पाउच
6. शराब की खाली बोतलें
7. तम्बाकू
8. गुटखा
9. साबुन
10. ग्रीस
11. स्प्रिट
12. फ्ल्यूड, इत्यादि

शिक्षकों की भूमिका:-

एक शिक्षक के रूप में जब हमारे सामने इस तरह के बच्चे सामने आते हैं तो हमारा प्रथम कार्य यह है कि हमें अपनी जानकारी आद्यतन हो। हमें पता होना चाहिए कि लोग नशा करना प्रांरभ क्यों करते है। इसके कारण कुछ इस प्रकार हैं:

1. उत्सुकता वश,
2. साथियों पर प्रभाव दिखाने के लिए,
3. साथियों के कहने पर,
4. अच्छा महसूस करने के लिए,
5. अकेलापन दूर करने के लिए,
6. आधुनिकता के साथ जोड़ने के लिए,
7. बड़ो की देखा देखी
8. यर्थात, से भागने के लिए, इत्यादि।

अत: एक शिक्षक होने के नाते हमें हमेशा सतर्क रहना चाहिए। साथ ही बच्चों के व्यवहारों को नजर - अंदाज नहीं करना चाहिए। इस प्रकार के बच्चों में सामान्यतया तीन तरह के बदलाव देखे जाते है:-

1. शैक्षिक 2. व्यक्तिगत तथा 3. सामाजिक

1. शैक्षिक बदलाव के अंतर्गत निम्न बिन्दुओं को देखा जा सकता है:-

अ. विद्यालय मे अरूचिता

ब. शैक्षिक उपलब्धियों में तीव्र ह्रास
द. शैक्षिक कार्यो में जल्दबाजी या आलस्य
य. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में रूचि का अभाव
र. कक्षा कक्ष के कार्यो से भागना
ल. कक्षा में अनुपस्थित रहना
ब. अपने बस्ते को बार–बार खोलना एवं उस से कुछ निकाल कर नाक तक ले जाना
स. कक्षा–कक्ष में आखिरी पंक्ति में बैठने का प्रयास करना, इत्यादि।

2. व्यक्तिगत बदलाव के अंतर्गतः–

अ. हमेशा नींद आना यहाँ तक की कक्षा कक्ष में भी
ब. किसी कार्य में मन न लगना
स. अत्यधिक क्रोध एवं आक्रामक व्यवहार
द. ध्यान केन्द्रित न कर पाना
य. शारीरिक वजन में गिरावट
र. खाँसी करना एवं नाक बहना
ल. आवेश का प्रर्दशन करना
स. संवेगों पर नियंत्रण का अभाव, इत्यादि।

3. सामाजिक लक्षणः–

अ. अकेले रहना
ब. चिड़चिड़ापन
द. छोटी–छोटी बातों से आक्रोशित एवं आक्रमक होना
य. लोगों से नजरें चुराना
र. सामाजिक गतिविधियों से दूर भागना
ल. चिंतित व्यवहार
ब. बच्चे के मित्र–मंडली में बदलाव,
स. शब्दों के उच्चारण में लड़खड़ाहट, इत्यादि।

उपर्युक्त लक्षण यदि बच्चों में दिखने लगे तो एक शिक्षक होने के नाते उचित कदम उठाना चाहिए। इस तरह की समस्या से निपटने के लिए एक शिक्षक को निम्न कार्य करना चाहिए:–

1. बच्चों में सकारात्मक कार्य के प्रति रूचि पैदा करना एवं उसके अंदर विश्वास जगाना।
2. कक्षा तथा विद्यालय में सकारात्मक वातावरण पैदा कर बच्चों को गलत कार्य करने से रोकना चाहिए।
3. कक्षा मनोरंजक बनाएँ तथा खेलकूद का प्रबंध करें।

4. सहानुभूति तथा प्रेम पूर्ण व्यवहार से बच्चों का विश्वास जीतना चाहिए।
5. दिन-प्रतिदिन शिक्षण, अधिगम प्रक्रिया के दौरान बच्चों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करें तथा जो इस तरह के दुष्प्रभाव से ग्रसित हैं उसके लिए विशेष शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की व्यवस्था करें।
6. बच्चों को नशा से ग्रसित बच्चों के लक्षण बताएँ तथा कहें कि इस तरह के बच्चें दिखें तो उसके बारे में अध्यापक या प्रौढ़ व्यक्ति को बताएं। साथ ही इस तरह के असामाजिक लक्षण का आदी न होने की सलाह देते रहें।
7. बच्चों के अभिभावकों के साथ समय-समय पर सम्पर्क में रहें तथा उसके दैनिक व्यवहार की जानकारी प्राप्त करें।
8. इस तरह के बच्चे यदि दिखें तो उसको विशेषज्ञों के पास सलाह के लिए ले जाएँ।
9. नशा-मुक्ति के विशेषज्ञों पर संगोष्ठी का आयोजन करें।
10. बच्चों के साथियों पर ध्यान रखें।
11. अध्यापकों का व्यवहार मधुर एंव सहयोगात्मक होना चाहिए।
12. बच्चों को सामाजिक उत्तरदायित्व दिया जाए।
13. बच्चों को कक्षा-कक्ष एवं गृह कार्य में इस तरह से संलग्न रखा जाए कि उसे इस तरह के कार्यो का समय न मिलें।
14. नैतिक शिक्षा का प्रबंध करना चाहिए।
15. समय-समय पर बच्चों के बस्ते की जाँच करें, इत्यादि।

उपयुक्त कार्यो का निर्वहन यदि शिक्षक कर पाये तो वे अपने विद्यालय एवं समाज को नशे से मुक्ति दिलवा सकते है एवं नशामुक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र पर जो विद्यालय शिक्षा से वंचित बच्चे आते है। उन में इस तरह के लक्षण अधिकाधिक परिलक्षित होने की संभवाना है। ये बच्चे भी हमारे समाज के ही है। किसी भी समाज के प्राणी में कोई भी व्यवहार जन्मजात नहीं होता। प्राणी ये व्यवहार अपने समाज से सीखता है। अतः विद्यालय शिक्षा से वंचित बच्चो ने ऐसा व्यवहार अपने समाज से ही सीखा होगा। जो व्यवहार जन्मजात नहीं होता उसे बदला भी जा सकता है। उसे लिए हमारे सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। जिसमें विशेष प्रशिक्षण केन्द्र पर कार्य कर रहे शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

विषय - हिन्दी
(प्रथम स्तर एवं द्वितीय स्तर)

प्रस्तावना-

किसी भी व्यक्ति के भाषा ज्ञान की जानकारी उसके भाषा प्रयोग से होती है। भाषा के व्यवहार को हम देख-सुन सकते हैं तथा अनुभव कर सकते हैं। व्यक्ति का व्यवहार, संस्कार, सभ्यता व पारिवारिक पृष्ठभूमि का आधार भी शिक्षा व भाषा प्रयोग है। बालक की शिक्षा में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा के बुनियादी कौशल उसकी समग्र शिक्षा को प्रभावित करते हैं। भाषा - व्यवहार में सुनना-बोलना, पढ़ना-लिखना आता है। इन्हीं को भाषायी कौशल कहा जाता है। पाठ्यक्रम - प्रथम स्तर एवं द्वितीय स्तर भी भाषायी कौशलों के विकास पर केन्द्रित हैं।

उद्देश्यः-

- वर्णों का बोध करना।
- ध्वनियों को समझना एवं उनका उच्चारण करना।
- भाषायी कौशलों का बोध कराना।
- अभिव्यक्ति का विकास करना।
- कल्पनाशक्ति का विकास करना।
- उच्चारण शुद्धता एवं वर्तनी शुद्धता।
- तार्किक शक्ति का विकास।
- शब्द-संपदा का सम्पन्न होना।
- सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ाना आदि।

शिक्षक निर्देशिका एवं उपागमः-

चित्र-प्रयोग- देखो, पहचानो

चित्रकथा- वर्णन, क्रम

फ्लैश कार्डस- देखो, पहचानो

मुखौटे- देखो, पहचानो, अभिनय करो।

कोलाज- समाहारात्मक प्रस्तुति, प्रतिपाद्य आधारित

खेल- ध्वनि खेल, शब्द खेल, क्रिया प्रधान खेल, पहेली, चुटकुला, व्यंग्य, समस्यात्मक परिस्थिति, शब्द अंत्याक्षरी आदि।

लेखन - निबन्ध लेखन, पत्र लेखन, परिचय लेखन।

इकट्ठा करें- जानकारी-पर्यावरण सम्बन्धी, स्वास्थ्य सम्बन्धी, ऋतु संबंधी, महापुरूषों से संबंधित आदि।

तुलना, अंतर करें- वर्णों में, शब्दों में, पात्रों में, वस्तुओं में

भ्रमण- मेट्रो रेल, संग्रहालय, दर्शनीय स्थल आदि।

हाथ से बनाएँ- मिट्टी के खिलौने, चित्रांकन, पपेट (अभिनय आदि के लिए)

सृजन करें- कविता, लय ताल युक्त शब्द निर्माण, नया शीर्षक, नए पात्र जोड़े, नया मोड़ दें (कहानी को), संवाद, चित्र बनाएँ आदि।

साहित्य के प्रकार- प्रयोग में लाएँ:- यह उदाहरण के रूप में प्रयोग करें। कहानी, कविता, नाटक, भेंटकर्ता, बात-चीत, डायरी, कामिक्स, जीवनी, संस्मरण, यात्रा वर्णन आदि।

शब्दकोश- प्रयोग करें/करवाएँ। किताबों को स्वयं चुनने का अवसर प्रदान करें

पुस्तकालय- स्वयं चुनने का अवसर प्रदान करें।

जीवन से उदाहरण लें- व्यवहार, परिस्थितियाँ, सामाजिक रीति-रिवाज, त्यौहार, संवेदनशीलता-पर्यावरण संरक्षण, जल, वन्य-जीवन संरक्षण, राष्ट्रीय एकता संरक्षण, ऐतिहासिक धरोहर संरक्षण आदि।

ज्ञान का विस्तार- विशिष्ट भाषिक प्रयोग, विशिष्ट बालक आदि।

अभिनय, प्रपठन, वक्तव्य- प्रयोग करें/ करवाएँ

जीवन मूल्यों से पहचान करवाएँ- विनम्रता, मित्रता, दायित्व भावना, सराहना, सहयोग, संवेदनशीलता, समानता आदि।

उदाहरण मूल्यों से पहचान करवाएँ- पाठ्यपुस्तक से, पाठ्येत्तर संदर्भो से (कथा साहित्य), महापुरूषों की जीवनियाँ, फिल्म, लोकगीत आदि)

स्वप्न और कल्पना– उड़ान भरें और भराएँ–

– यदि

– भावी जीवन की कल्पना

– इच्छापूर्ति

– विभिन्न पात्रों (पशु–पक्षी, माता–पिता, अध्यापक आदि) का अभिनय।

उपर्युक्त गतिविधियाँ एक व्यापक परिवर्तन का संकेत है। भाषा–शिक्षण पारंपरिक परिधि से निकलकर प्रगतिशील चिन्तन से संपुष्ट होकर अध्यापक पर पहले से भी अधिक निष्ठा रखता हैं, क्योंकि अध्यापक की उचित सक्रियता व सहभागिता ही इस परिवर्तन को मूर्त रूप देने में समर्थ है।

विधियाँ– भाषा शिक्षण में विभिन्न प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरणतः खेल विधि, उदाहरण विधि, अनुकरण एवं अभ्यास विधि, समवाय या सहयोग विधि, गीत विधि, निगमन विधि, कला विधि आदि। पाठ्यक्रम के अनुसार उचित विधि का चयन कर शिक्षण को अत्यधिक बाल केन्द्रित बनाने पर विशेष ध्यान दें।

विषय संबंधी समस्याएँ/ त्रुटियाँः–

हिन्दी शिक्षण में अध्यापक विभिन्न समस्याओं को अनुभव करते हैं। भाषायी कौशलों के संपूर्ण समन्वय एवं प्रयोग संबंधी विशेषताओं से जागरूक करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं कठिन कार्य है। कुछ सामान्य त्रुटियाँ जो प्राथमिक स्तर पर बच्चे करते है, वे निम्न प्रकार हैः–

- ध्वनि व वर्ण में संबंध
- मात्रा संबंधी त्रुटियाँ
- लेखन संबंधी त्रुटियाँ
- वाचन संबंधी त्रुटियाँ (सुर, लय, ताल, ध्वनि–उच्चारण का प्रयोग)
- संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग (क्ष, श्र, त्र आदि)
- पढ़कर भाव ग्रहण करने में अक्षमता
- गद्य व पद्य के पाठन व लेखन में त्रुटियाँ
- व्याकरण के नियमों के सही प्रयोग में त्रुटियाँ (जैसे–वचन परिवर्तन में मात्रा का परिवर्तन–लड़की–लड़कियाँ, लाठी–लाठियाँ आदि)

- उचित विधा का चयन (निबंध, पत्र, कहानी, सार-लेखन, यात्रा-वर्णन आदि) व लेखन के नियम कुछ विधियाँ जिनको प्रयोग से इन त्रुटियों को कम या दूर किया जा सकता है।

- ध्वनियों की पहचान करवाने में तुक वाले शब्द बनाने की गतिविधि बहुत उपयोगी हो सकती है। जैसे- बच्चों को कोई शब्द बोलकर बता दें। जैसे- पल, अब बच्चों से इसके तुक वाले शब्द बताने को कहें। जैसे - बल, कल, जल, आदि। बच्चे निरर्थक शब्द श्रंखला भी बना सकते हैं। जैसे- भल, घल, सल, आदि।

- ध्वनि परिवर्तन खेल- शिक्षक 'मकान' शब्द की पहली ध्वनि 'म' हटाकर बोल सकते हैं- 'कान'। बच्चों से कहें कि 'कान' के प्रारम्भ में कोई ध्वनि जोड़कर सार्थक शब्द बनाओ। बच्चों से कुछ ऐसे उत्तर अपेक्षित हैं- मकान, दुकान, थकान आदि।

- समान वर्ण (मात्राऐं भिन्न-भिन्न हों) से प्रारम्भ होने वाले शब्दों को बच्चें को पढ़ने को कहें। जिससे वे लघु व दीर्घ ध्वनि के अन्तर या समानता को समझ सकें।

  जैसे- किताब, कील ('क' की ध्वनियों में अन्तर के लिए)

  गुड़िया, गुलाब ('ग' की ध्वनियों में समानता के लिए)

- दो शब्दों की पहली ध्वनि का स्थान बदलना- शिक्षक कोई दो शब्द श्यामपट्ट पर लिखें। इन शब्दों के पहले वर्ण को एक दूसरे के साथ बदल दें। इसके बाद उन शब्दों को पढ़कर बतायें तथा बच्चों का ध्यान आने वाले अन्तर की ओर दिखलायें। जैसे-

छोटा घर	घोटा छर
मोटा राजा	राटा मोजा

- ध्वनियों को जोड़कर शब्द बनाने का खेल- बच्चों को पहले निर्देश दे सकते हैं कि ध्वनियों को एक बार ही बोला जायेगा और बच्चों को एक ही बार में सुनकर उन्हें याद रखना होगा और शब्द बनाना होगा हर गतिविधि के आरम्भ में बच्चों को एक या दो उदाहरण अवश्य दें। इससे बच्चों को यह स्पष्ट हो जायेगा कि क्या किया जाना है।

- शब्द में ध्वनियों को तोड़कर बोलने का अभ्यास। शिक्षक कोई शब्द बोलें व बच्चों से शब्द में आई ध्वनियों को तोड़कर बोलने को कहें। जैसेः-

  शिक्षक बोलें 'फल' बच्चों को कहना चाहिए 'फ', 'ल'

  शिक्षक बोलें 'फट' बच्चा कहेगा 'फ', 'ट'

  शिक्षक बोलें 'फूल' बच्चा कहेगा 'फू' 'ल'

'टपक' शब्द 'लेकर शिक्षक केवल 'ट' बोल सकते हैं और बच्चे 'पक' बोलेंगे।

शब्द 'कर' को लें। शिक्षक केवल 'क' बोलेंगे। बच्चे 'र' बोलेंगे।

- शिक्षक बच्चों के साथ मिलकर कुछ ऐसी गतिविधियाँ कर सकते हैं जिसमें कक्षा में व कक्षा के आस-पास मौजूद चीजों के नामों की पर्चियाँ बनाई जा सकती हैं। ये नाम मोटे-मोटे अक्षरों में लिखें हों जिसे आसानी से पढ़ा जा सके। इन पर्चियों को संबंधित वस्तुओं पर चिपका दें जैसे- दरवाजा, अलमारी, मेज, श्यामपट्ट आदि। इन शब्दों को जब बार-बार देखेगा तो इन्हें शब्दाकृति के रूप में पहचानने लगेगा और बच्चों का शब्द भण्डार बढ़ेगा।

- कविता कहानी में अनेक शब्द ऐसे आते हैं जिनके स्थान पर दूसरे नये शब्द रखे जा सकते हैं। ये शब्द समान अर्थ व ध्वनि वाले होते हैं। बच्चों के साथ मिलकर कविता में आये पुराने शब्दों के स्थान पर ऐसे नये शब्दों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

- बच्चों से नाटक, कहानी का अन्त, पात्र या घटनायें बदलने को कहा जा सकता है। बच्चे यह बदलाव कर कहानी को पुनः सुना व अभिनय कर सकते हैं।

- विभिन्न सहायक सामग्री जैसे वार्तालाप चार्ट (अलग-अलग जगहों के दृश्य), फ्लिप बुक, शब्द-चित्र कार्ड, वर्ण मात्रा कार्ड, शब्द फ्लैशकार्ड आदि के प्रयोग द्वारा हिन्दी शिक्षण को अत्यधिक रोचक, मनोरंजक व बाल केन्द्रित बनाया जा सकता है।

- **अखबार की कतरने** मँगवाई जा सकती हैं। विभिन्न विषयों पर कक्षा में चर्चा की जा सकती है तथा इनका संग्रह बनाने के लिए बच्चों को प्रेरित किया जा सकता है।

- आज का विचार व आज के समाचार गतिविधि का आयोजन कक्षा स्तर पर किया जा सकता है। इनसे बच्चों की झिझक दूर होगी व अभिव्यक्ति करने में सक्षम हो जाएँगे।

भालू ने खेली फुटबॉल

शिक्षण पूर्व तैयारी-

शिक्षक पाठ पढ़ाने से पहले, पूर्व तैयारी करें जैसे- पाठ स्वंय से पढ़ना, मुख्य भाग व मुख्य शब्द का चयन आदि।

- कक्षा में बच्चों के साथ प्रारम्भ करने से पहले पूरे पाठ को पढ़ लें।
- पाठ की विषयवस्तु, पृष्ठभूमि तथा संदर्भ से बच्चों को परिचित कराने के लिए चर्चा के बिन्दु, प्रश्नों को सोच लें। पाठ के हिस्सों पर काम शुरू करने से पहले यह चर्चा बच्चों के साथ की जानी है। इस पाठ के लिए चर्चा के ये बिन्दु हो सकते हैं। इनके अतिरिक्त नए बिन्दु भी सोचे जा सकते हैं।

पाठ पढ़ने से पूर्व चर्चा के मुख्य बिन्दुः-

- आप कौन-कौन से खेल खेलते हो?
- फुटबॉल कैसी होती है? उसे कितने खिलाड़ी मिलकर खेलते हैं?
- क्या भालू भी फुटबॉल खेल सकता है यदि हाँ तो वह कैसे खेलेगा?
- आपका मनपसंद खेल कौन सा है उसे कैसे खेलते है?
- हम खेल क्यों खेलते हैं?
- आपको क्या लगता है कि बाघ का बच्चा कैसा होता होगा?

- चर्चा के बाद, शिक्षक पाठ का नाम बताते हुए शीर्षक पर चर्चा करके उसे बच्चों के पूर्व ज्ञान से जोड़े। शिक्षक, चर्चा के द्वारा बच्चों को पाठ पढ़ने से पहले अनुमान लगाने का अवसर प्रदान करें। शिक्षक बच्चों से पाठ के शीर्षक पर राय लें।
- शिक्षक पाठ की पृष्ठभूमि तथा संदर्भ बच्चों को बताएंगे।

प्रमुख भाग को पढ़नाः-

- पाठ का परिचय देने के बाद सही उच्चारण, आवाज के उतार चढ़ाव, हाव-भाव और विराम-चिह्नों को ध्यान में रखकर किताब में से प्रत्येक भाग को पढ़कर सुनाएं। प्रत्येक भाग को पढ़ने के बाद चर्चा करें।

भाग–1	भाग–2	भाग–3
सर्दियों का मौसम.............	आव देखा न ताव..........	अब की बार शेर ....
.... हासिल की जाए	.... गायब हो गया	..........जान बची तो लाखों पाए।

..... के बिन्दु (प्रत्येक भाग पढ़ने के बाद)

• कहानी में कौन–कौन हैं?	• शेर का बच्चा क्यों दहाड़ा?	• माली शेर के बच्चे पर क्यों चिल्लाया?
• भालू बाहर क्यों निकला?	• भालू अगर शेर के बच्चे को नहीं लपकता तो क्या होता?	• पेड़ की डाल कैसे टूटी?
• पेड़ के नीचे कौन सोया था? और क्यों?	• शेर के बच्चे को मजा क्यों आ रहा था?	• शेर का बच्चा क्यों भागा?
• भालू ने गर्मी हासिल करने की क्यों सोची?	• भालू ने शेर के बच्चे को कितनी बार उछाला?	• भालू की जगह आप होते तो क्या करते? **क्रियाकलाप**
• आप सर्दी से बचने के लिए क्या करते हो? **क्रियाकलाप**	• भालू वहाँ से क्यों भागा ?	• मौसम व उसके प्रभावों से संबंधित चर्चा। अभिनय का आयोजन करवाया जा सकता है।
इनके साथ ही विज्ञान विषय में पशु – पक्षियों के चित्र एकत्र, करना, प्राकृतिक वास, मौसम व होने वाले बदलाव से संबंधित चर्चा/ अभिनय/ क्रिया आदि करवाई जा सकती है।	• अगर शेर के बच्चे की जगह बंदर को बच्चा होता तो क्या होता?	• गणित में आकारों से संबंधित क्रिया कागज को काट कर और मोड़ कर करवायी जा की सकती है

प्रत्येक प्रमुख भाग पर चर्चा के बाद (आदर्श वाचन):-

- पाठ के प्रत्येक भाग पर अंगुली रखकर हाव-भाव के साथ पुनः पढ़ें, बच्चे ध्यान से सुनें और देखें।
- पाठ को एक बार फिर पढ़ें। इस बार बच्चों से अपनी-अपनी किताब में अंगुली रखने के लिए कहें। इस दौरान शिक्षक कक्षा में घूमते हुए देखते रहें कि बच्चे उसी शब्द पर अंगुली रख रहे हैं या नहीं। पाठ को पढ़ाने की यह प्रक्रिया दो से तीन बार दोहराई जानी चाहिये।
- उप समूह में कार्यः- कक्षा के सभी बच्चों को 3-3 के समूह में बैठाएँ। प्रत्येक बच्चे से बारी-बारी से प्रमुख भाग का वाचन करवाएं। जब एक बच्चा पाठ पढ़ रहा हो, तब समूह के शेष बच्चे अपनी-अपनी पुस्तक में अंगुली रखकर वाचन करें। शिक्षक यह ध्यान रखें कि सभी बच्चों को पढ़ने का अवसर मिले।

Scrap Book में चित्र संकलन, चित्रावली का निर्माण आदि करवाया जा सकता है

कला शिक्षणः- सृजनात्मक कला की विभिन्न क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता है। जैसे - अभिनय शेर भालू का मुखैटा लगाकर।

मुख्य शब्दः-

पाठ के प्रत्येक भाग में से कुछ मुख्य शब्द चुन लें। ये शब्द इस प्रकार के होते हैं, जिनका उच्चारण कठिन हो, जिनका अर्थ समझना बच्चों के लिए कठिन हो या फिर जिनके बिना यह कहानी पूरी नहीं हो सकती हो।

भाग 1	**भाग 2**	**भाग 3**
कोहरा, फुटबॉल गर्मी, सर्दियों, सैर, सिमटकर	हड़बड़ी, दहाड़ना, फुर्ती, उछालना, गायब, दौड़	धड़ाम, जमीन, माली, हर्ज़ाना

इसके साथ गणित विषय में गणना करवाई जा सकती है। जैसे शब्दों की गणना वर्गीकरण (समान ध्वनि शब्द, अलग ध्वनि वाले शब्द, तुक वाले शब्द आदि)

शब्दों की गतिबिधिः-

प्रत्येक प्रमुख भाग को पढ़ने के बाद शब्दों के साथ नीचे दी गई गतिविधियाँ करें।

- प्रत्येक शब्द को एक - एक करके बच्चों से अपनी किताब में ढूँढ़ने के लिए कहें।

- शब्द के अर्थ पर बच्चों से चर्चा करें।
- प्रत्येक भाग के शब्दों को एक - एक बोर्ड पर लिखें व तोड़कर पढ़ें, जैसे:- कोहरा - को ह रा।
- एक जैसे अक्षर ध्वनि वाले शब्दों का उच्चारण व समान अक्षर से शुरू होने वाला शब्द बोलने को कहें।
- बच्चों के साथ शब्द अंताक्षरी खेलें। बच्चों द्वारा सभी शब्दों को बोर्ड पर लिखवाते रहिये, जैसे:- मकान, नल, लकड़ी, डाल, लड़ना, नाक, कबूतर, रस्सी............................

लेखन:- प्रत्येक प्रमुख भाग को पढ़ने के बाद नीचे दी गई लेखन की गतिविधियाँ करें।

शिक्षक बच्चों से भालू, शेर आदि बनने के लिए कहें।	शब्दों को तोड़कर ध्वनि के अनुसार लिखें। जैसे- दौड़-दौ, ड़	समान वर्ण से बनने वाले शब्द जैसे- कमल, कड़ी, काम

अन्य अभ्यास कार्य करवाया जा सकता है।

बच्चों को छोटी-छोटी कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया जा सका है। जैसे-

भट्टी पर भगोना था
भगोने में आलू,
आलू को उबालकर
खा रहे थे भालू

पाठ का अन्य विषयों से समीकरण:-

विज्ञान (पर्यावरण अध्ययन):- पशु-पक्षियों से संबंधित जानकारी, प्राकृतिक वास, मौसम व उनमें होने वाले परिवर्तन (शरीर, आवाज़ आदि), हो रहे परिवर्तनों का पशु-पक्षियों के जीवन पर प्रभाव आदि।

गणित:- आकार (गेंद-फुटबॉल के माध्यम से), शब्दों की गिनती करवा सकते हैं (जैसे पाठ में भालू कितनी बार आया, 'क' ध्वनि से शुरू/आरंभ होने वाले शब्दों की गणना आदि), समूह निर्माण, वर्गीकरण।

कला:- Scrap Book में चित्र संकलन बनवाना, चित्राकली बनवाना (कहानी में हुए घटनाक्रम के अनुसार),आकृतियाँ बनवाना आकारों की (कागज पर कटवाकर, मोड़ डल वाना चिपकाना आदि)

हिन्दी

कक्षा - छठी, सातवीं, आठवीं

विचार व भावों की अभिव्यक्ति का साधन भाषा है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह संसार के समस्त प्राणियों में से ऐसा प्राणी है जो अपने सुख-दुख, भाव व विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। उसकी उस अभिव्यक्ति के लिए सांकेतिक भाषा का भी प्रयोग किया जाता है। किंतु अधिकांशत: विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा के मौखिक और लिखित रूप का ही प्रयोग किया जाता है। मौखिक और लिखित रूप में भाषा के प्रयोग के लिए हम ध्वनियों तथा सांकेतिक चिह्नों का आश्रय लेते हैं। यह ध्वनियाँ भी सार्थक होती हैं। इस प्रकार समग्र रूप में भाषा सार्थक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिस के द्वारा प्रयोक्ता तथा श्रोता अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है।

यद्यपि भाषा अनुकरण से सीखी जाती है किन्तु परिवार व परिवेश में सीखी गई भाषा पूर्ण रूप से शुद्ध व परिमार्जित नहीं होती अत: भावाभिव्यक्ति के लिए शुद्ध , परिमार्जित व व्याकरण युक्त भाषा का होना आवश्यक है। इसलिए बच्चे के विकास के लिए भाषा की शिक्षा देना आवश्यक है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के सन्दर्भ में भाषा से सम्बन्धित निम्नलिखित बिंदु विचारणीय हैं-

1. शिक्षक कक्षा में पढ़ाते हुए छात्र-छात्राओं की भाषा/बोली को महत्व दें।
2. शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत विद्यार्थियों की भागीदारी अधिक हो।
3. बच्चों के अनुभवों को पाठ्य चर्या से जोड़ें।
4. शिक्षण - अधिगम प्रक्रिय रूचिकर व आनन्द दायक हो तथा अध्यापक की भूमिका सहायक की हो।
5. रटने के अभ्यास के स्थान पर व्यावहारिक अभ्यास को महत्व दें।
6. विद्यार्थियों की बहुभाषिता, लोक प्रयोगों के द्वारा आपसी जिज्ञासा, सराहना को प्रोत्साहित करें।
7. कला का प्रयोग भाषा शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिए करें।
8. भाषा का ज्ञान मात्र विषय का ज्ञान नहीं है अपितु व्यक्तित्व का निर्माण है। अत: भाषा शिक्षण करते हुए जीवन से जुड़ें।
9. भाषा सभी विषयों का आधार है अत: भाषा और अन्य विषयों में अंतर्सम्बन्ध है। इसलिए विविध विषयों के पाठों को पढ़ाते समय उन पाठों में तुलना, समानता व अंतर करना सिखाएँ।
10. कहानी, कविता, गीतों व नाटकों के माध्यम से बच्चों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जोड़े।

11. बच्चों को व्याकरण की शिक्षा रूचिकर ढंग से दें।

12. परीक्षा मानसिक दबाव की नहीं बल्कि सतत् विकास की परिचायक हो अतः अधिकतम भाषा शिक्षण को दैनिक जीवन से जोड़ें।

13. भाषा का ज्ञान किसी एक कौशल का ज्ञान नहीं है बल्कि सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना में अन्तर्सम्बन्ध है। अतः भाषा शिक्षण के समय चारों ही कौशलों पर ध्यान दें।

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 में विशेष रूप से इस पर बल दिया गया है कि बच्चों के अनुभवों को पाठ्यचर्या से जोड़ें तथा सुनाना, बोलना, पढ़ना व लिखना चारों ही कौशलों के विकास पर ध्यान दिया जाए।

अपके केन्द्र पर आने वाले बच्चों के पास व्यावहारिक अनुभव बहुत होता है। अतः अध्यापक को अपना शिक्षण कार्य बच्चों के अनुभवों से जोड़ते हुए ही करना चाहिए तथा कुछ दिन सुनने - बोलने के कौशल को विकसित करने में ही लगाया जाए। जिससे बच्चों की झिझक समाप्त हो जाए तथा वह कक्षा-कक्ष के माहौल को नीरस महसूस न करें और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सक्रियता पूर्वक भाग ले सकें।

सुनने-बोलने के कौशल को विकसित करने के लिए अध्यापक निम्नलिखित साधनों का प्रयोग कर सकते हैं।

1. कहानी कथन और विद्यार्थियों से कहानी सुनना।

2. भाषण व वाद-विवाद

3. कविता पाठ

4. समाचार वाचन

5. त्योहारों के आयोजन

6. चलचित्र

7. भाषा के विभिन्न खेल (ध्वनि खेल, शब्द खेल, अन्त्याक्षरी, प्रथमाक्षरी आदि)

8. आकाशवाणी और दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को सुनकर कक्षा में बोलना।

9. नाटक मंचन

10. चुटकले, पहेलियाँ

11. दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग

उपरोक्त साधनों के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि सुनाई जाने वाली सामग्री बच्चों की आयु व मानसिक स्तर के अनुकूल हो। सामग्री की मात्रा कम हो तथा रूचिकर हो क्योंकि यदि सुनाई जाने वाली सामग्री बच्चों के लिए रूचिकर तथा मानसिक स्तर के अनुकूल होगी तो बच्चे उसे जल्दी समझ सकेंगे और अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकेंगे।

अत: आपको बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर ही अध्यापन कार्य करना है। आपकी कक्षा छठी, सातवीं व आठवीं कक्षा के विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करेंगे तथा उनका मानसिक स्तर भी अलग होगा इसलिए आपको ''बहुश्रेणी कक्षा'' और बहुस्तरीय बच्चों को ध्यान में रखकर कार्य करना है और उसी के अनुरूप विधियों का चयन करना है।

पढ़ना– आपकी कक्षा में आने वाले विद्यार्थियों में व्यावहारिक ज्ञान तथा अनुभवों का असीम भंडार है किन्तु उन्हें औपचारिक रूप से पढ़ना – लिखना नहीं आता है। इन बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए आपको दो स्तर बनाने पड़ेंगे।

प्रथम स्तर– हिन्दी ध्वन्यात्मक भाषा है अत: आपको, अपने विद्यार्थियों को ध्वनि तथा उसके प्रतीक चिह्नों की पहचान करानी है। जब बच्चों को ध्वनि तथा उसके प्रतीक चिह्नों की पहचान हो जाएगी तो वह पढ़ना सीख जाएँगे। पढ़ना सिखाने के लिए आप निम्नलिखित तरीके अपना सकते हैं।

1. आप किसी का चित्र बनाएँ और उसके नीचे वह शब्द लिख दें जैसे– बच्चा पहले चित्र देखेगा।

आम

उसके बाद उसके नीचे लिखे शब्द को पढ़ेगा। आपको ''आम'' में से 'आ' वर्ण की ध्वनि और उसकी आकृति से बच्चों को परिचित कराना है। यही प्रक्रिया अन्य वर्णो को सिखाने के लिए भी की जा सकती है।

2. **गतिविधि:**– कक्षा को दो टीम में विभाजित कर दें। उसके बाद उस वर्ण का चयन करें जो आपको सिखाना है उदाहरण के लिए आपको 'प' वर्ण बच्चों को सिखाना है तो आप पहले बच्चों को 'प' वर्ण की आकृति व ध्वनि से परिचित कराएँ उसके बाद टीम 'अ' के बच्चों से फलों के नाम, सब्जियों के नाम तथा अन्य वस्तुओं के नाम पूछें जिनमें वर्ण का उपयोग हुआ है जैसे – पवन, पलक, परवीन, कपड़ा, पपीता, पालक, परवल, पनीर, पकौड़ा, पलटा, चम्पा आदि। बच्चो द्वारा बोले गए शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखते जाए और वर्ण को रेखांकित कर दें। यही प्रक्रिया टीम 'ब' के विद्यार्थियों के साथ भी अपनाएँ और उनके द्वारा बोले हुए शब्दों को भी श्याम पट्ट पर लिखते जाएँ। जिस टीम के विद्यार्थी ज्यादा शब्द बोलेंगे वही टीम विजयी घोषित होगी। सभी शब्दों को श्याम पट्ट पर लिखने के बाद आप स्वयं शब्दों को बोलें तथा बच्चों को भी शब्द बोलने का आदेश दें और 'प' वर्ण की ध्वनि व आकृति से परिचित कराएँ।

अनुच्छेद, कहानी व कविता द्वारा:- कहानी या कविता द्वारा भी पढ़ना सिखाया जा सकता है। आप किसी ऐसी कहानी या कविता का प्रयोग करें जिसमें किसी एक वर्ण की आवृत्ति बार-बार हो रही हो। आप उस अनुच्छेद, कहानी या कविता को दो-तीन बार पढ़े। पूर्व में दिए गए तरीके के अनुसार उस वर्ण को रेखांकित करें जिस वर्ण को आप बच्चों को सिखाना चाहते हैं उसकी आकृति और उसकी ध्वनि से बच्चों को परिचित कराएं। नीचे दिए गए उदाहरण में 'क' वर्ण सिखाया गया है।

कमल अपने दोस्त कपिल के साथ बाजार घूमने गया। उसके साथ उसकी बहन कविता भी थी। रास्ते में उन्हें अकरम मिला। अकरम ने कमल से कहा मुझे कपड़े की दुकान से अचकन के लिए कपड़ा खरीदना है तथा करेले व केले भी खरीदने हैं। कविता ने भी किताबों की दुकान से कागज़ व कलम खरीदी और सभी खुशी - खुशी घर वापस आ गए।

उपरोक्त विधियों के अतिरिक्त अन्य विधियों का चयन भी वर्ण सिखाने के लिए किया जा सकता है।

लिखना सिखाना- बच्चों को लिखना सिखाने के लिए निम्न लिखित विधियों का प्रयोग किया जा सकता है:-

सार्थक रेखाएँ खींचकर- आप बच्चों को कुछ सार्थक रेखाएँ खींचना सिखाएँ।

1. — — — सिरो रेखा
2. — ं ँ अनुस्वार, अनुनासिक
3. । ┐ ┐ खड़ी पाई, आ की मात्रा
4. ‹ ‹ ट व व ब
5. ⸝ ⸝ ⸝ ⸝ ⸝ प्र क्र
6. ⸦ ⸦ ⸧ ट ठ ड ढ
7. ` ो ऐ, ओ
8. ‿ ‿ ‿ उ, ऊ की मात्रा

खण्डशः लेखन:- एक ही समय में छात्र के लिए समग्र वर्ण की आकृति बनाना कठिन होता है। अतः उसे खण्डों में विभाजित करके लिखना सिखाया जाए तो बच्चों को जल्दी सुन्दर और सुडौल लिखना सिखाया जा सकता है।

(1) । ‿ प प

(2) । ‿ ग ग

(3) ‿ च च च

(4) ॽ ३ ३ ३ अ

(5) । ¯ ट ट

(6) ‿ ⅂ त

(7) ३ उ ऊ

(8) ट ढ ढ़ द

(9) । ट ड ड़ इ ई

(10) ० व व क

द्वितीय स्तरः- प्रथम स्तर पर वर्णमाला तथा मात्राओं की जानकारी देने के बाद आप द्वितीय स्तर पर पाठ को पढ़ाना सिखा सकती है।

छठी, सातवीं कक्षा की पुस्तक में एक पाठ ''मनचाहा उपहार'' है। उस पाठ में वर्णन किया गया है कि यथार्थ अपनी बहन को रक्षाबंधन के दिन मनचाहा उपहार देता है। इस पाठ को पढ़ाने के लिए आप निम्नलिखित चरणों का प्रयोग कर सकते हैं।

रक्षाबंधन के त्योहार पर चर्चा

आप बच्चों को चार समूहों में बांट दे और उनसे कहें कि वह रक्षाबंधन के बारे में आपस में चर्चा करें कि त्योहार क्यों मनाया जाता है? कब मनाया जाता है? कैसे मनाया जाता है? चर्चा करने के लिए बच्चों को 15 मिनट का समय दें जब बच्चे आपस में चर्चा कर लें तब आप प्रत्येक समूह में से एक - एक बच्चे को बुलाकर उससे रक्षाबंधन के बारे में पूछे। इससे उनकी झिझक समाप्त होगी तथा वह पाठ को पढ़ने के लिए तत्पर होंगे।

आदर्श वाचन- यति- गति, विराम चिह्न, आरोह अवरोह शुद्ध उच्चारण पर ध्यान देते हुए पाठ का वाचन करें। आप पाठ को चार-पाँच भागों में विभाजित करें। उसके बाद एक-एक गद्यांश का वाचन करें और पाठ के विषय वस्तु से बच्चों को परिचित कराएँ।

अनुकरण वाचनः- विद्यार्थियों से यति-गति, विराम चिह्न, शुद्ध उच्चारण पर ध्यान देते हुए गद्यांश का वाचन कराएँ। ध्यान रखे यदि छात्र/छात्रा गद्यांश को पढ़ते हुए त्रुटि करता है तो उसे हतोत्साहित न करें बल्कि उसके द्वारा गलत रूप से उच्चारण किए हुए शब्द को श्यामपट्ट पर लिखकर शुद्ध और अशुद्ध रूप से उच्चारण कराएँ। जिन बच्चों को बहुत कम पढ़ना आता है उन्हें आदेश दें कि जब आप वाचन कर रहे हैं तथा वह आपका अनुकरण करते हुए आपके साथ ही एक-एक पंक्ति का वाचन करें।

कठिन शब्दार्थः- पाठ में आए हुए कठिन शब्दों के अर्थ श्यामपट्ट पर लिखकर बच्चों को समझाएँ।

मौन वाचनः- जिन बच्चों को पढ़ना आ गया है उन बच्चों से गद्यांश का मौन वाचन कराएँ लेकिन ध्यान दें कि बच्चे मन में पढ़ते हुए आवाज न करें और अर्थ ग्रहण करते हुए पढें मौन वाचन के समय आप कक्षा का निरीक्षण करें और देखें कि बच्चे मन में पढ़ रहे है अथवा नहीं। मौन वाचन पूरा होने के बाद बच्चों से प्रश्न पूछें।

प्रश्नः-

आप पाठ में आए हुए प्रश्नों के उत्तर बच्चों को समझाएँ किन्तु जहाँ तक सम्भव हो प्रश्नों के उत्तर स्वयं न लिखवाएँ अपितु बच्चों को प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखने के लिए प्रेरित करें। इससे बच्चों में मौलिकता का विकास होगा और वह प्रश्नों को रटना छोड़ देंगे। कक्षा में मौखिक रूप से प्रश्नों के उत्तर की चर्चा की जा सकती है।

व्याकरणः- पाठ को पढ़ाते समय पाठ में आए हुए व्याकरण की जानकारी भी बच्चों को दें। संज्ञा, विलोम शब्द, विशेषण से सम्बन्धित अभ्यास कार्य पाठ के पीछे दिए गए है आप उसके अतिरिक्त भी व्याकरण से सम्बधित कार्य करा सकते है। व्याकरण सिखाने के लिए कुछ गतिविधियों, खेलों का सहारा लिया जा सकता है। इससे आप व्याकरण रूचिकर ढंग से सिखा सकते है। विलोम शब्द सिखाने के लिए गतिविधि नीचे दी जा रही है।

विलोम शब्दः- कक्षा को टीम 'अ' और टीम 'ब' में विभाजित करें। पाठ में आए हुए शब्दों की कुछ पर्चियाँ टीम 'अ' के प्रत्येक छात्र को दें तथा उन्हीं शब्दों के विपरीतार्थक शब्दों की पर्चियाँ टीम 'ब' के प्रत्येक छात्र को दो टीम 'अ' में से एक छात्र को आगे बुलाएँ और उससे पर्ची पर लिखे हुए शब्द को बोलने के लिए कहें छात्र पर्ची से देखकर शब्द को बोलेगा। **जैसेः**- 'नई' कहेगा - ''मेरा साथी कौन है?'' अब टीम 'ब' का वह छात्र आगे आएगा जिसके पास वह पर्ची है जिसमें ''पुरानी'' शब्द लिखा हुआ है और कहेगा तुम्हारा साथी ''मैं हूँ'' आप श्याम पट्ट पर दोनों शब्दों को लिखें जैसेः- नई - पुरानी इस प्रकार आप खेल को आगे बढ़ाते हुए विद्यार्थियों को विलोम से परिचित करा सकते हैं।

नोटः- अध्यापक पाठ में आए शब्दों के अतिरिक्त अन्य शब्द भी ले सकता है।

सृजनात्मकः–

1. बच्चों से रक्षाबंधन पर अनुच्छेद, निबंन्ध लिखने का आदेश दे सकते हैं।

2. पाठ से सम्बन्धित छोटे–छोटे संवाद भी लिखने के लिए कह सकते हैं किन्तु ध्यान रहे पहले आप मौखिक रूप से कक्षा में संवाद बनवाने का प्रयास करें।

विशेषः– आपको बहुश्रेणी कक्षा में अध्यापन कार्य – कार्य करना है। उस कक्षा में आपके पास विभिन्न स्तर के भी बच्चे होंगे अतः आपको सभी बच्चों को ध्यान में रखते हुए ही अध्यापन कार्य करना है। इसके लिए आप कक्षा को विभिन्न समूहों में विभाजित करके कार्य कर सकते हैं। आप कक्षा में तीन–चार समूह बनाइए एक समूह में भी इसी प्रकार कोई अन्य कार्य दे सकती हैं। प्रत्येक समूह एक नेता भी बना दीजिए जो कि होशियार बच्चा हो और समूह में किए जा रहे कार्य को सुचारू रूप से करा सके। एक सप्ताह बाद समूह का नेता दूसरा बना दीजिए जिससे नेता बने बच्चे में अहं की भावना जागृत न हो सकते है।

शिक्षण–अधिगम सामग्री के रूप में परिवेश में उपलब्ध सामग्री का अधिक प्रयोग करें तथा ऐसी सामग्री का प्रयोग करें जिससे बच्चे स्वयं करके अधिक सीखें इससे ज्ञान का स्थायित्व होगा। पाठ की आवश्यकतानुसार बच्चों को भ्रमण के लिए ले जाएँ तथा अवलोकन कराएँ।

उपरोक्त विधियों के आधार पर ही आप अन्य पाठों को भी पढ़ा सकते है।

शिक्षक निर्देशिकाः– (शिक्षण से पूर्व की तैयारी)

1. शिक्षक पाठ को पढ़ाने से पहले खुद पाठ की तैयारी करें क्योंकि शिक्षक/शिक्षिका बच्चों के मानसिक स्तर की पहचान रखती हैं उन्हें अपनी कक्षा में उपस्थित प्रत्येक बालक/बालिका की मानसिक अवस्था का पूर्ण ज्ञान है।

2. पाठ की विषय वस्तु, मुख्य बिन्दु तथा संदर्भ के विषय में पहले से भूमिका तैयार करें।

3. विषय को रोजाना के जीवन के अनुभवों से जोड़ने का प्रयास करें।

4. चार्ट पेपर, चित्र, प्ले कार्डस, वर्ग पहेली इत्यादि को माध्यम बनाकर पाठ को रोचक बनाये।

पाठ शुरू कराने से पहले कक्षा में चर्चाः–

1. बच्चों से उनकी याद की हुई कविता सुनना।
2. पेड़ हमें क्या–क्या फल देते है?

3. पेड़ो से हमें क्या लाभ है?
4. पेड़ो की लकड़ी किस काम आती है?
5. मानव जीवन के लिए पेड़ों का क्या महत्व है?
6. पक्षी घोसला कहाँ बनाते है?

सामान्य प्रश्नों की चर्चा करते हुए मुख्य बिन्दु की ओर बालकों का ध्यान आकर्षित करके कविता के विषय को बतलाना ही अध्यापक का मुख्य उद्देश्य रहेगा।

मुख्य विषयः-

अध्यापिका छात्रों को मुख्य विषय की ओर ले जाकर बतलायेगीं कि आज पेड़ो पर आधारित कविता को पढ़ेगें। छात्रों की अध्यापिका के साथ पहले की गई चर्चा छात्रों की झिझक को दूर करने में सहायक होगी। यहाँ कक्षा में बैठा प्रत्येक छात्र अध्यापिका के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उसकी भागीदारी शिक्षा का अधिकार अधिनियम की पूर्ण सफलता का द्योतक होगा। अतः अध्यापिका का स्नेहपूर्ण व्यवहार, पाठ की सरलता, दैनिक जीवन से पाठ का जुड़ाव छात्र में शिक्षा के प्रति रूझान तथा रूचि उत्पन्न करेगा और पाठ को सीखने में अध्यापिका को पूर्ण मदद करेगा।

कविता को खण्ड में पढ़ानाः-

अध्यापिका कविता का सस्वर वाचन करेगी। कविता में उतार चढ़ाव के साथ आदर्श वाचन प्रस्तुत किया जाएगा। आदर्शवाचन के पश्चात छात्रों की भागीदारी से पुनः कविता का वाचन छात्रों से कराया जाएगा। त्रुटि होने पर अध्यापिका स्नेह से शुद्धीकरण करायेंगी ताकि छात्रों को कठिनाई न हो। अधिगम की सफलता के लिए अध्यापिका के स्नेहपूर्ण व्यवहार तथा विषय में उसका स्पष्टीकरण अति आवश्यक है।

कविता

भाग- 1	**भाग- 2**	**भाग-3**
अगर पेड़.............	जहाँ कहीं................	लगती जब भी............
कहीं ले जाते	छिप जाते	ऊपर चढ़ जाते

अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मजे हमारे होते ।
बाँध तने में उसके रस्सी
चाहे जहां कहीं ले जाते।

जहां कहीं भी धूप सताती
उसके नीचे झट सुस्ताते,

जहाँ कहीं वर्षा हो जाती
उसके नीचे हम छिप जाते।

लगती जब भी भूख अचानक
तोड़ मधुर फल उसके खाते,
आती कीचड़, बाढ़ कहीं तो
झट उसके ऊपर चढ़ जाते।

भाग – 1

1. क्या आप जानते है कि पेड़ चलते है?
2. अगर पेड़ हमारे कहने से चलते तो क्या होता ?

कविता का अर्थ

बच्चों पेड़ स्थिर रहते है वे हम इन्सानों की तरह नहीं चलते। कल्पना करो कि यदि हम रस्सी को पेड़ की टहनी में बाँधकर उसे कहीं भी ले जा पाते तो कितना अच्छा लगता।

सम्भावित प्रश्न (छात्र)

1. हमारे घर के पास पीपल का पेड़ है वह नहीं चलता।
2. मेरे घर के पास जामुन का पेड़ है?
3. मेरे गाँव में आम का बाग है?

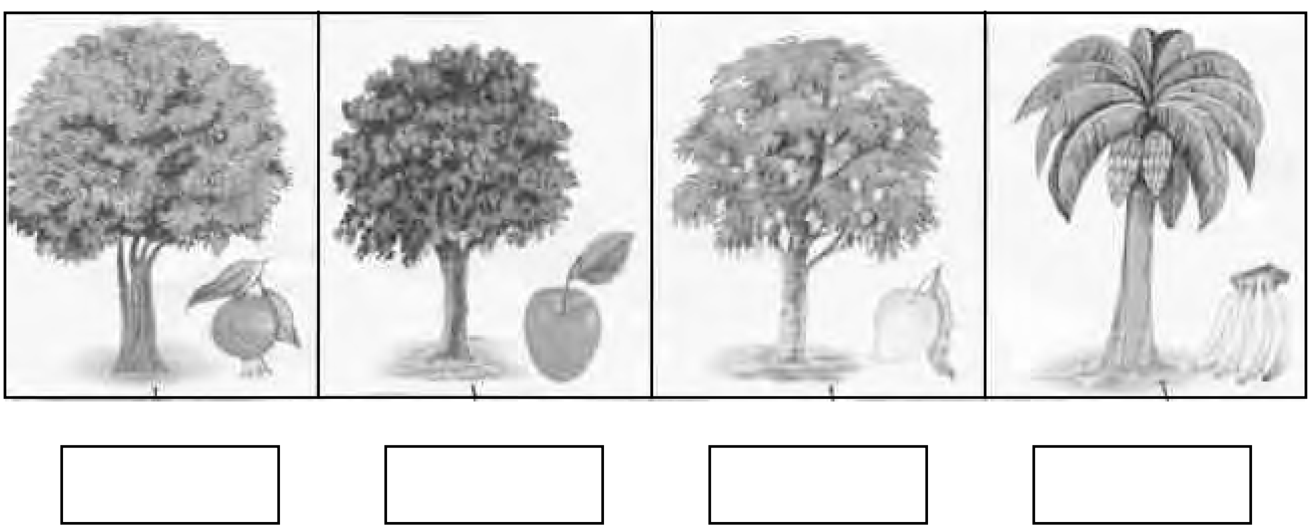

आयत में दिए गए उत्तर को ध्यान से पढ़कर सही पेड़ के नीचे बने गोले में नाम लिखें।

आम का पेड़, अनार का पेड़, सेब का पेड़, केले का पेड़

पौधे के चित्र को पहचान कर त्रिभुज से उत्तर चुनकर लिखिए?

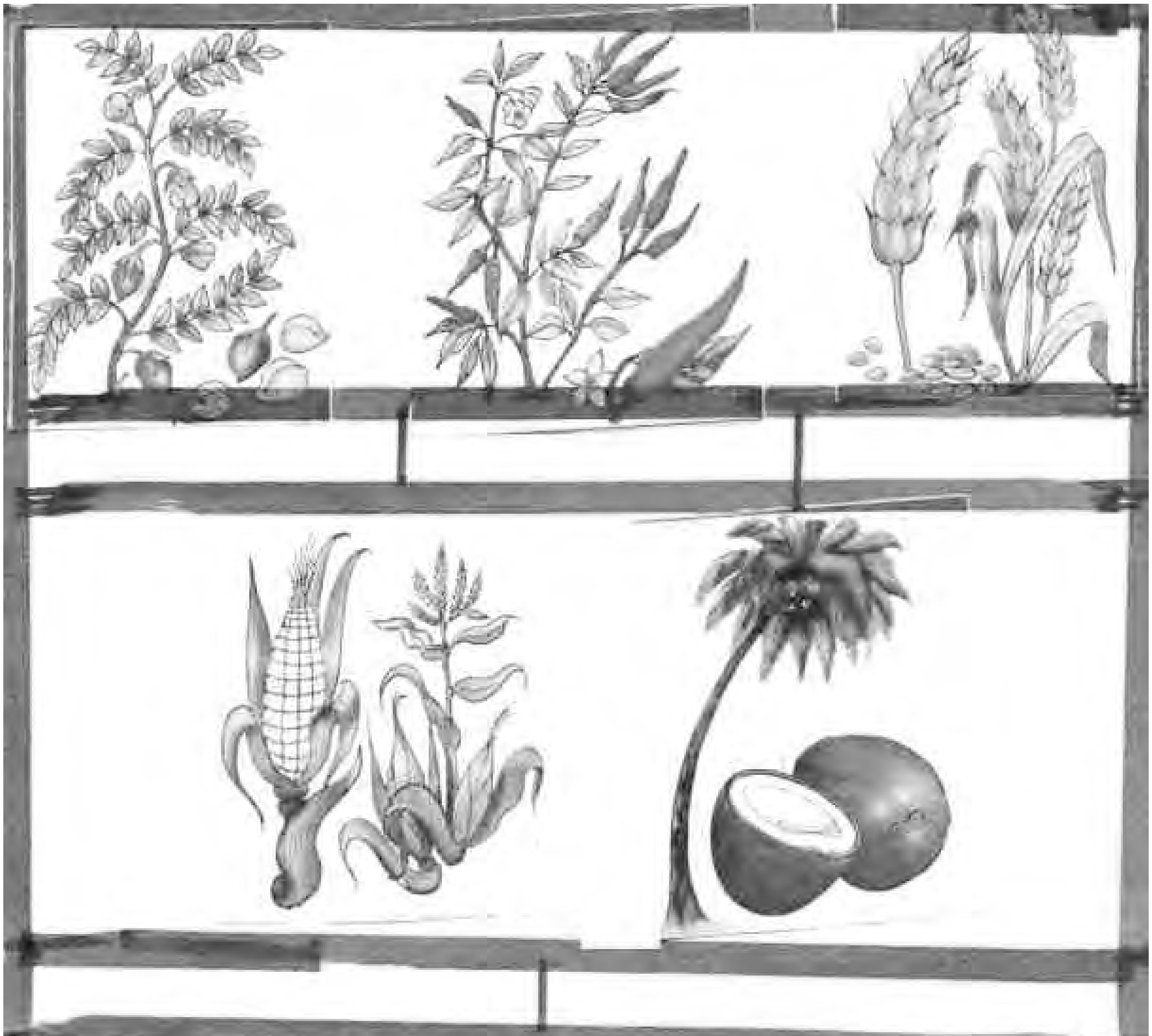

नारियल, चना, मक्का,
लाल मिर्च, गेहूँ

भाग- 2

अध्यापिका छात्रों को अर्थ समझायेंगी कि यदि पेड़ो को हम अपनी मर्जी से चला सकते तो कितना अच्छा होता। जब हमें धूप से गर्मी लगती तो हम जल्दी से पेड़ की छाँव में आराम करने लगते, जोर से बारिश आने पर हम जल्दी से पेड़ों के नीचे छिप जाते और भीगने से बच जाते।

संभावित प्रश्नः-

1. वर्षा किस महीने में आती है?
2. आपको बारिश कैसी लगती है?
3. तेज धूप कौन से महीने में होती है?
4. गर्मी में आपको क्या पीना अच्छा लगता है?

   अध्यापिका-भारत ऋतुओ का देश है। मौसम किस प्रकार बदलते हैं, हर ऋतु की क्या खासियत है, गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि के विषय में जानकारी देकर भारत की भौगोलिक स्थिति से छात्रों को खेल-खेल में परिचित कराया जा सकता है।

5. टोकरी में रखे फलों के नाम आयत में बनी रेखाओं में लिखें तथा प्रत्येक सही नाम के लिए बाक्स में खुद को सितारे दीजिये देखें, आपको कितने सितारे मिलते हैं।

आयत

....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....

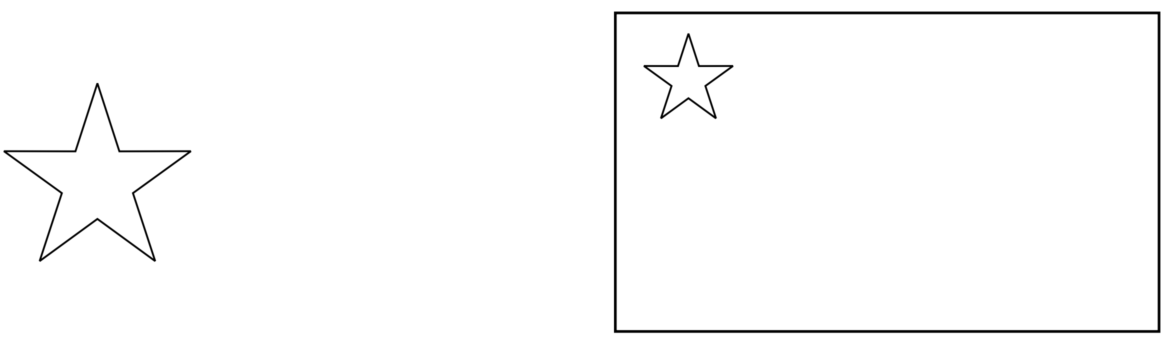

सितारों की गणना करके गोले में लिखें

भाग- 3

अध्यापिका छात्रों को अर्थ समझायेंगीं कि यदि पेड़ों को हम बाँधकर साथ चला सकते तो कितना अच्छा होता। अचानक भूख लगने पर हम पेड़ो से मीठे-मीठे फल तोडकर खा लेते, रास्ते में कीचड़ होने पर जल्दी से पेड़ के ऊपर चढ़ जाते। यदि बाढ़ का पानी आ जाए तो भी पेड़ पर चढ़कर अपनी जान बचा सकते थे।

संभावित प्रश्नः-

1. पेड़ो से हमें कौन-कौन से फल मिलते है?
2. पेड़ हमारा बाढ़ से बचाव कैसे करते हैं?
3. पेड़ो की लकड़ी से क्या-क्या बनता है?
4. ''चिपको आन्दोलन'' का क्या अर्थ है?
5. पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए पेड़ कितने जरूरी है?
6. फूलों के चित्र को देखकर नीचे दिये गमले में से सही नाम चुनकर सही स्थान पर लिखिए:-

सही मिलान कीजिए

केला

आम

शहतूत

पीपल

पपीता

1. बच्चों आप पेड़ो के विषय में क्या जानते हो?

2. क्या पेड़ हम मनुष्य की तरह चल सकते हैं?

3. कितना मजा आता यदि पेड़ को रस्सी से बाँध कर कहीं भी ले जा सकते?

4. धूप से बचने के लिए हम कहाँ शरण ले सकते हैं? (कविता के आधार पर)

5. भूख लगने पर पेड़ो से क्या ले सकते हैं?

6. पेड़ो से हमें कौन सी गैस मिलती है?

7. पेड़ों की छाल किस काम आती है?

8. पेड़ों की लकड़ी का प्रयोग किस-किस वस्तु में होता है।

9. बच्चों आपने चिड़िया को घोसला देखा है?

10. ऊन के धागों से घोंसला बनाइए?

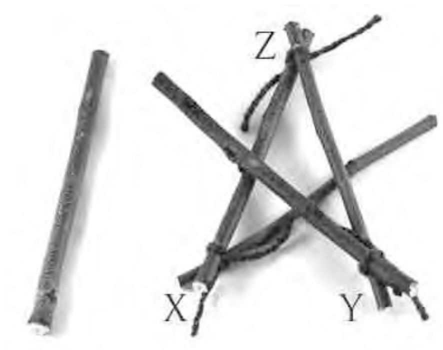

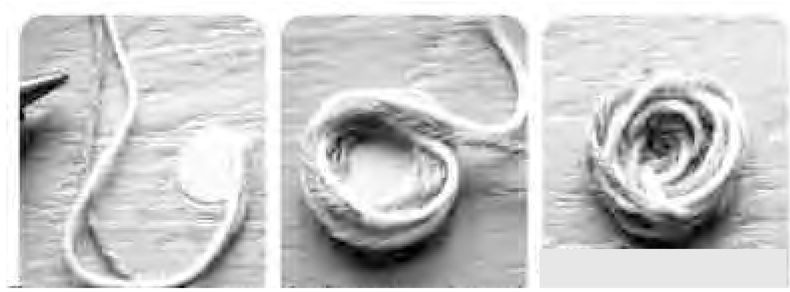

1. चार पतली डण्डियाँ लीजिए।

2. कुछ ऊन के पुराने धागे।

3. चारों कोनों तक घुमाते हुए धागे को बाँधिए।

4. कुछ ही देर में घोंसला तैयार हो जायेगा।

विभिन्न अन्य विषयों से जोड़ना एक कलात्मक अभिव्यक्ति:-

भाषा भावनाओं को जताने का सशक्त माध्यम है और अध्यापिका जीता जागता उदाहरण और सशक्त माध्यम है छात्रों के मानसिक विचारों को गति प्रदान करने का सत्य कहा है:-

''गुरू कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़-गढ़ काढ़े चोट।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहर वाहै चोट।।''

एक अध्यापक छात्र रूपी कच्ची मिट्टी का मानसिक, शारीरिक, तथा भावनात्मक विकास करने में सक्षम है।

प्रस्तुत कविता मात्र पेड़ पर आधारित कविता नहीं है इसे दैनिक जीवन की घटनाओं से जोड़कर अन्य विषयों की गहरी जानकारी खेल-खेल में दी जा सकती है।

उदाहरण-

1. मौसम की जानकारी
2. ऋतुओं की जानकारी
3. भौगोलिक स्थिति की जानकारी
4. मौसमी फलों की जानकारी
5. अनाज तथा फसलों की जानकारी
6. विज्ञान की जानकारी
7. विभिन्न गैसों की जानकारी
8. चिकित्सा की जानकारी
9. औषधियों की जानकारी
10. पौधों से कौन-कौन से रोगों का उपचार किया जा सकता है
11. कला के माध्यम से चित्रों का निर्माण
12. चिपको आन्दोलन

अध्यापिका को सजग रहना होगा जिससे वह कुछ न होते हुए भी अमूर्त से मूर्त की ओर ले जाए। उसकी वाणी की मिठास तथा पाठ का पूर्व अभ्यास और अन्य विषयों से विषय को जोड़ना उसकी सकारात्मक सोच पर निर्भर करता है।

शब्द	**अर्थ**
मजे होना	खुशी होना
सताना	परेशान होना
सुस्ताना	आराम करना
मधुर	मीठे
कीचड़	गन्दी मिट्टी
बाढ़	पानी का बढ़ता सतह

पर्यायवाची

1. पेड़
2. पानी

विलोम

1. धूप
2. नीचे
3. मधुर

पेड़ो का महत्वः-

पेड़ो से मिलने वाली वस्तुओं पर गोला लगाइए।

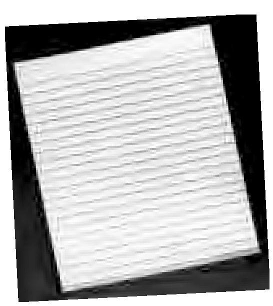

ENGLISH (Primary Level and Upper Primary Level)

The present day education calls for a lot of rethinking as to what is needed for a changing India. The education should be far from stuffing students with theoretical knowledge but creative and critical, seeking information, and problem solving and enjoyable. Education is not merely scholastic but co-scholastic with stress on life skills, values, environment, health and hygiene. The goal of education is to prepare a child for life, by providing space, time and freedom. The knowledge gained / learnt should be practical and applicable to real life situations.

The visible impact of English is that it is today being demanded by everyone at the very initial stage of schooling. The importance of teaching English is to fulfill the ever growing demands of English. In which students can put their learning into practice in day-to-day use to fulfill their practical demands through effective communication skills apart from gaining command over English language.

In a STC, a single teacher handles more than one class and teaches all the subjects throughout the whole day. To make teaching and learning effective and easy the teacher may group the pupils either on the basis of classes, age, or on the basis of ability. Sometimes the teacher can create mixed groups also. But before grouping them for various activities, a teacher should know the level/ ability of the students at the STC. For that a teacher may assess their students by an entrance tests which may be conducted at the beginning of the schooling in the STC, although these may also be given to pupils who have been absent from the school for lengthy periods of time. On the other hand, pupils often enter the STC even during the school year. These children come from families who have moved. In some region, these types of migration are quite frequent often and thus, many pupils arrive at a STC during the year rather than at the beginning of the school year. These students also require an entrance test of some type. The purpose of these entrance tests is to determine exactly the educational situation of each pupil. It is as a result of these tests that each pupil can enter or resume his or her studies at the appropriate grade level. More importantly, test results will assist the teacher to identify the particular stage within each grade that individual pupils have attained and therefore help the teacher to provide appropriate individual instruction to the pupils.

The main function of the STC teacher is to teach students by imparting knowledge, developing skills and inculcating desirable values and attitudes among pupils. The teacher should not only be a provider of knowledge but should also be a facilitator of learning and enhance learning both at the group level and on a one-to-one basis. But there are also some of the problems in STC which the Teachers are facing like:

- Handling of different classes simultaneously in a same room.
- Preparation of Teaching Learning Materials for all subjects and for all classes.
- To pay individual attention to the slow learners.
- To provide sufficient reading practice and supervise the students.
- To act according to the individual differences of the learners.
- Supervising activities and assignments in the class.
- More attention to the gifted learners.
- Identify student's difficult portion and teach them.
- To concentrate on the allotment of activities.
- Proper assessment of all students.

Definitely for all but specifically for out of school children, the motivation in the school should be magnetic and so infectious that each child looks forward to attending it regularly. Atmosphere at school should be such that children are happy, healthy and confident.

All children are special and should be allowed freedom to blossom at their own pace.

Some suggestions:

Start the day /class by setting the students at ease, encourage each child to talk -either roll number-wise or by choice each child

(i) Will describe / tell the class –what happened after they reached home from school the previous day.

(ii) Ask either the teacher or the class any one question concerning just about anything---academic or personal.

(iii) Encourage and ensure that each child participates in expressing his/her view point.

The basic motto – "Happy Child—happiness to prevail all over --- have prominent pictures spreading happiness.

Students should be happily able to co-relate past earlier / present experiences with real life situations—both in and out of the class.

The day at school should be marked with enjoyable hands-on experience. Students to be treated as equal participants in the process of learning (bi-polar process) in pairs and groups. Students explore environmental aspects around them, acquire life skills, develop values and learn to be clean and healthy.

Before the school gets over, preferably the last period /slot of time should be devoted to "Recapitulation"-taking stock of the day-how it has been.

Students to reflect (in pairs/groups/individually) what they liked best- and worst, and one question that they have .The class assessment technique can pave the way for the next day.

The teacher is a facilitator, guide and a co-learner

The teacher must follow Activity Based Approach. Now let's discuss

"Why use an Activity or Task based approach?"

The principles behind the activity based approach is that children are "doers" and learn language primarily because they need it and remember new language better because they have encountered and used it in a realistic situation. Activity based learning recognizes that young children are physical, tactile and use all their senses. It aims to teach language and address a child's linguistic intelligence while at the same time, developing a child's other intelligences [Gardner, 1988]

What is an Activity or task based curriculum ?”

Again an Activity based approach recognizes these objectives above by realizing that children are active, enquiring and learn primarily by testing out their hypotheses about the world. By learning English through investigations, creativity or problem solving, it is hoped that children are more likely to see the purpose for their learning.

The key characteristics of an activity based learning curriculum are:

It is:

- Child centred and learning centred
- Task based learning
- Gives enjoyment & an element of fun
- Combines the use of games, songs and rhymes
- Uses authentic / realistic tasks & situations
- Can be linked to a particular topic or vocabulary or feature language forms and structures
- Focuses on meaning & form
- Acquires knowledge & skills
- Uses of all four skills – once the child has mastered reading & writing in their Mother tongue
- Reflects the world around them

An activity or task based curriculum involves the use of the four skills combining the use of games, songs and rhymes which may be linked to a theme or a topic. Activity based English teaching may highlight a particular topic, vocabulary or feature language forms and structures but it is primarily driven by the intrinsic interest of the activity for the child. It is this activity which is the focus of each lesson.

Activity or task based learning focuses on the three “C”s of **CURIOSITY, CREATIVITY,** and **COLLABORATION**.

Curiosity:

Children whose interest is engaged by a task are capable of longer periods of attention than is usually recognized. Children who want to find out how something can be made to work or who are trying to make something of their own are driven, often, by a sense of curiosity. According to the great psychologists of our century, Piaget, Vygotsky and Bruner, children are instinctively programmed to learn. They are in a continual cycle of discovery, forming hypotheses, testing those hypotheses and discovering concepts and skills. They are driven by their insatiable curiosity. Ask any teacher or parent which question word children ask most frequently and they will report that it is the question “WHY?”

Creativity:

Children like to make things and take things they have made home to show and share. Their creativity is more wide-ranging than a traditional reading/writing lesson allows for. Many teachers are cautious about using glue, scissors, sticky paper, cello tape, card, string and fabric in the classroom. Of course, these materials do demand a greater degree of resourcefulness, classroom organization, but the pride with which children view their achievements may be worth it. Children can take something home from their English lesson that is their own. Being able to

share it with others means that the child is recycling the vocabulary and the language used to describe the process of making the object in class.

Collaboration:

Activity-based learning can cater to the individual and the group. Because many potential activities are practical "doing" tasks, they enable the non academic child to gain self-esteem. Tasks can more easily differentiated / adapted to suit different levels of ability. Therefore the individual with special learning needs can be supported or "scaffolded"

Implementing Active Based Learning (ABL), Play way method and Learning by doing method in the classroom may attract the students' interest in the teaching and learning process. Multigrade teaching climate becomes easy when the methods of Activity Based Learning, group learning, self-learning and peer group learning are implemented properly. When a teacher handles one grade in the class, he should give group activities or individual activities to the other class students. These activities are monitored with the help of higher grade students or with the gifted learners. They help the students in the learning process. The teaching learning materials for group learning and self-learning are prepared by the teacher.

Handling gifted, average, slow learners & special children in a classroom with different grades is another special feature of multigrade teaching. This method creates a chance to all the students to mingle freely with other students in their learning process. It develops co-operative learning, group learning, and helping attitude among the students. Students strengthen their learning by explaining the learned concepts to the other students. They understand the concepts very clearly. The much desired social habits like helping attitude, co-operation, and service mentality are developed among the learners. Group discussion predominates in multigrade environment. Students give up shyness and fear and helps each another to improve oneself. This type of multigrade classroom helps to recapitulate the learnt materials and strengthen the learning. It provides chances to all the learners to participate in group discussions.

The activities should be designed by the teacher for multi grade teaching which can be effectively implemented with the assistance of gifted children in the class. Motivation and discipline is to be followed. More tasks can be given according to the learners' abilities.

Seating arrangement of the students in the multigrade teaching classroom should be in a circle / in small groups. So that direct attention or observation of the teacher is available in this type of seating arrangements. The students get the opportunity to look at the teacher directly.

In Multigrade teaching, group learning plays an important role. Direct teaching does not take place all the time. In these situations group learning may be implemented. Group learning is useful for the students to continue their learning from their known knowledge. So, a group leader is to be selected for every group.

- Group leaders may be selected subjectwise.
- Group leaders may be chosen on rotation basis.
- If the groups are divided in a class / standard, the leader also is selected from the same class.
- If the students group consists of different grades, the leader is selected from the highest grade.

Learning occurrences between the Student & Teaching Learning Materials

Although various curriculum materials are usually available in the market, Multigrade teachers still need to develop their own additional materials. These additional materials serve the purpose of meeting actual and concrete needs of Multigrade Teaching within the local context. Low-cost teaching learning materials should have the following characteristics/qualities:

1. The materials can be made by teachers, pupils or members of community.
2. The materials supplied can be put to effective use by the teachers and pupils in the classroom and do not incur extra cost.
3. The processes in the production of the materials are simple and inexpensive.
4. The production of the materials is not time consuming.
5. The raw materials are freely and easily available from the local environment.
6. They should be relevant to the content.
7. The materials should be handled easily and effectively.
8. They should attract the attention of the students.
10. They should enable the learners in self- learning.

Learning is consolidated when students use learning materials in their learning process. This enhances interests among the learners. The teacher should concentrate more in preparing these types of learning materials for the learners.

Example:

The following learning materials are prepared for activities.

i. Traffic Signal lights – picture card
ii. No Horn - picture card
iii. Danger - Flash card
iv. Multiple Advertisement cards
v. Public Welfare, Medicine particulars - cards.
vi. Hospital and Village- Maps.
vii. Bus stand, Railway station: Time chart

Activity–1 (A Group Inspiration)

There was a beautiful white fur puppy with sparkling eyes and a bent tail lived in Garvit's house. Its brisk movements attracted everyone's attention. Garvit always loves to play with the puppy. Every day after school, he takes the puppy for a walk. One day, he wanted to cross a bridge with the puppy. But while crossing the bridge, the puppy suddenly stopped. So, Garvit looked at the road. A speeding vehicle was coming towards him. He managed to move out of the vechile's way. Had the puppy not stopped him! This idea shocked him. As a mark of gratitude, he caressed the little puppy. On his way home, he was reading the rules of the road signals and different notices and advertisements.

Activity – 2 (Students' activities)

The students are made to write and draw the different road signals' advertisements and warnings etc., and then the teacher verifies them.

Activity – 3 (Teacher – student) Std – III English

The teacher explains the signal warning boards such as stop, go, narrow, path and Take diversion, etc.,

Activity – 4 (Peer learning) Std- IV

A Student is asked to read some flash cards and the teacher makes the other students to say the nature of information. (warning, advertisement etc).

Activity – 5 (Peer learning) Std –V English

One student reads on the items of postal department from the price list. The other student tells the cost of the items. Similarly, the grocery items from the price list are read out and the other students tell the cost of the items.

Activity – 6 (Peer learning) Std – III

The Traffic signal colours of red, yellow and green are discussed among the students with the help of a chart.

Activity – 7 (Follow up activity)

Teacher gives activities to, 4th, 5th class students.

Write the Notices / Announcements from your locality.

A. Search for names of the means of transport from the box. You can only search vertically or horizontally. Remember all Names are Nouns

				b	u	s					
s	P	A	c	e	s	h	i	p			
u			a			i					
b			r			p				b	
m			t	r	a	c	t	o	r	o	
a	U	T	o	r	i	c	k	s	h	a	w
r		E								T	
i	A	M	b	u	l	a	n	c	e		
n		P	i					a			
e		O	k					r			
		H	e	l	i	c	o	p	t	E	r

B. Complete names of the means of transport

a. T r _ _ _ or.

b. C _ _ t.

c. Sp _ _ e sh _ _

d. Am _ _ _ an _ e

e. T _ _ p _

f. Sc_ _ _ I B _ s

C. Try to write two lines about your favourite means of transport. (Any One) - Take hints from this

Example

The Car

I have a Santro Car.

It is red in colour.

It has cost Rs. 4,50,000.

Activity—3 Feely Bag

This is again learner centred techniques that involve, visuals, senses (touch), interaction, TPR, learning by doing, discovery, problem solving, group and pair work.

Take a pillow case with different objects inside it such as: pencil, spoon scoop, cloth peg, CD, battery cell, potato, candle, brush etc. about 15-20 objects which are locally available. Now make a mixed group having students of all the grades I-V.

Hold the pillow case with objects so that students can easily put one hand in and pick any one object, and then the student will feel the object and guess the name. They must say what the object is before removing their hand with the object out.

You may ask the class I student to tell the name of the object, class II student may tell the shape of an object, Class III student may write down all the objects that She felt in the pillow case along with the objects the group has taken out. Class IV & V students may answer/ speak the few sentences about the given objects.

- What is it made up of ?
- What is it used for?
- Where can you find this? etc.

For example the object is CD

It is circular in shape.

It is made up of plastic.

It is used to record music, movies and data.

We can find it in the local market at stationery shop, cyber café etc.

At upper primary level all the four language skills listening & speaking, reading and writing are to be focused.

1. LISTENING :

Options for Listening exercises:

Listen And Draw

Listen and fill in the blanks

Listen and circle the correct Picture

Listen and choose the correct option

a) Line up according to: Begin by splitting your classroom into teams, if there are 30 students in your class then 3 teams of 10 should work well. Explain that they must line up in order using only English to communicate with each other, teams caught cheating will be disqualified from that round (giving them a little leniency of course).

When a team finishes, the person at the front of the line puts their hand up and you walk down the line checking that they are indeed in the correct order. You can alternatively assign each team with a captain who is in charge of organizing the team, making sure they don't cheat and signalling to you when they have finished.

Give one point to the first successful team and start the next round using different criteria, here's some I use:

Height
Shoe size
Birthday
Time they woke up this morning
Time they went to bed last night
Number of brothers and sisters

b) **Teacher says:** Have everyone stand up and begin the game, for example you might start by saying "Teacher says, hands on head" while placing your hands on your head.

The students should follow your instructions, quickly putting their hands on their heads. If they don't do it correctly or are just too slow then they are out of the game and should sit down (you might want to be lenient on students making mistakes during the first round).

Continue the game with those remaining, slowly increasing the speed in an effort to catch them out. At any point you can try and trick the students by, for example, saying "Teacher says, hands on ears" while placing your hands on your shoulders. Anyone who puts their hands on their shoulders is out of the game.

2. SPEAKING ;

a) **Just a minute (JAM)** –most effective and enjoyable exercise. A student is asked to pick up a chit, read it for a minute or two and then speak for a minute. Students can help their teachers prepare the chits based on their favourite topics, for example my favourite game, my favourite toy, food I love to eat etc.

b) **Jumble a set of pictures-** (form two teams A and B) , give it to the two teams who have to complete the story and narrate it.

c) **Spin a yarn –** group-wise a set of jumbled up newspaper headlines are given to the student, one by one the children get up and read / say their connect to the previous account thus completing a story.

d) **Word association:** Have the students sit in a circle. Start the game with a simple word and ask the person to your left to say the first (English) word that comes to mind. Then, the person to his or her left should say a word that begins with the last letter of the previous word, e.g., word, donkey. Be sure to stop every so often to debrief and define any mysterious words.

e) **Describe an object:** Before you begin you'll need to make small pieces of paper with the names of a range of different objects written on them.

Split the class into teams and ask a student to choose easy, medium or hard. Give them around 30 seconds to describe the object (only words, no actions) in front of their group without naming it (while other teams stay quiet).

3. READING :

a) **Forming sentences**

Prepare flash cards indicating easy , simple and common words .Join these flash cards to form sentences starting with –" go there " , and advancing to more number of words.

Some idea of the phonetics especially the vowels will greatly help in reading.

b) **Let's develop stories again**

Place a chart with a small story written, on board. Ask children to read the story. Now divide the class in groups of 5. Prepare activity cards with jumbled sentences from story written on it. Distribute the cards in groups. Ask the students to rearrange the sentences as per the story. The winner group is appreciated.

4. WRITING :

a) **Sentence race**

A good game for large classes and for reviewing vocabulary lessons.

1. Prepare a list of review vocabulary words.
2. Write each word on two small pieces of paper. That means writing the word twice, once on each paper.
3. Organize the pieces like bundles, 2 bundles, 2 sets of identical words.
4. Divide the class into 2 teams. get them to make creative team names.
5. Distribute each list of words to both teams. every student on each team should have a paper. Both teams have the same words.
6. When you call a word, 2 students should stand up, one from each team. The students must then run to the blackboard and race to write a sentence using their word.

The winner is the one with a correct and clearly written sentence.

This is always a hit with kids.

b) **Picture composition –** main points of a story are given to the students .Put the sequence of the story in correct order. Children can draw whatever they like and create a story.

Children can be asked to draw the picture in the form of a story.

Discuss within your group the outline of a story, group-wise a specific part is written .An in charge puts together the different parts (written in different styles) and edits it.

The story to have a title, name of author , characters, setting , problem and solution. Once the story is written, design the front and the back cover.

c) **Word lottery:** Write simple Nouns and Verbs into little slips of paper and put them into a bag. Invite each student to draw two words from the bag. Give them each a minute to come up with a sentence that uses those two words, and makes sense. Then invite each of them to share their sentence with the class.

Teacher as an Evaluator

One of the roles which a STC teacher must carry out effectively is as evaluator, to monitor the progress of pupil's learning so as to ensure quality of education. Usually, this requires teachers to determine the educational levels of pupils when they first enter schooling, during the school year period and at the end of school year. Therefore, assessment should be considered as a continuous and integral part of the teaching process. Periodic assessment is often used for specific purposes, such as determining if students have understood a particular topic which has just been completed.

It was stated however, that "positive cultural values can only result from favourable teaching situations leading to successful learning".

The favourable teaching situations are:

- small learning groups,
- suitable teaching aids,
- appropriate methodology
- appropriately trained and prepared teachers.

As teachers we are aware that :

- Young learners are only just starting their schooling. So, we have a clear opportunity to mould the mind of the child and their expectations of life in school.
- They tend to be keen and enthusiastic learners, without the inhatbitions which old learners sometimes bring to their schooling.
- Young learners need physical movement and activity as much as stimulation for their thinking. They have a short attention span and have very little inhatbitions. They are usually very spontaneous. So, therefore an activity approach in the form of games, songs and drama is recommended.
- It is claimed that children's language learning is more closely integrated with real communication because it depends more on the immediate physical environment than adult language, although old learners have great ability and experience when presented with hypothetical learning situations etc. "So language should be related to their day to day life.

To summarise the points above, teaching English to Learners through an activity based task involves:

- Regular and lively practice.
- Task based learning.
- Focuses on Curiosity, Creativity and Collaboration.
- Acquires knowledge and skills.
- Is activity real and challenging?
- Gives enjoyment and an element of fun.
- Reflects the world around them.
- Review learning [80% new knowledge is lost within 24 hours without the opportunity to review]

On Multigrade Teaching

Multigrade teaching is not an attempt to compensate the paucity of teachers in a classroom /school. It is a responsible technique adapted by a teacher to enhance the standard of education.

In this type of teaching, the teacher helps the students to grow and develop themselves in their learning process. The teacher manipulates the content of the teaching units to cater to the needs of the multigrade / level classroom within the stipulated time. He possesses the talent of using the teaching learning materials effectively and successfully in the classroom situation.

Multigrade teaching consists of different types of teaching approaches, curriculum, class structure and different level of learning skills. A teacher must plan systematically and implement according to his classroom conditions. Students belonging to different grades, with different levels of learning experiences and with different types of skills come under the control of a single teacher in a multigrade class room.

Therefore, the teacher explains the content of a lesson in such a manner that there exists a joyful learning in the classroom among the learners who possess the multilevel of learning abilities. The input of every child is to be identified. The needs, specialities, desires and the behaviour are to be assessed to create a favourable classroom climate. Multigrade teaching is almost teacher centered and so the responsibility of the teacher increases in setting up the apt classroom situation. Research reports from many countries on 'Multigrade teaching' reveal that teaching in a multigrade / level classroom is an ordinary situation for a motivated teacher with the thorough knowledge of the subjects, different techniques and approaches of the classroom management.

गणित

परिचयः- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के अनुसार बच्चों को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़ना अति आवश्यक है। बच्चे को न तो ज्ञान को रटवाया जाए और न ही बना बनाया ज्ञान उनके समक्ष प्रस्तुत किया जाए, जिसमें उनकी कोई भागीदारी न हो अपितु चर्चा द्वारा, बच्चों के अनुभवों द्वारा उनको इस योग्य बनाया जाए कि अपने पूर्व ज्ञान और अनुभवों को जोड़ते हुए नए ज्ञान की रचना वे स्वयं करें, जिसमें अध्यापक का कार्य मार्गदर्शक का हो।

सेतु पाठ्यक्रम के द्वारा जिन बच्चों ने अभी तक विद्यालयी शिक्षा नहीं प्राप्त की है, उन बच्चों को इस प्रकार सक्षम बनाना है कि वे भी अपनी आयु के अनुसार कक्षा में प्रवेश पाकर विद्यालयी शिक्षा ले सकें। विद्यालय से बाहर रह कर भी ये बच्चे अपने वातावरण से बहुत कुछ सीखते हैं। इनके सीखे गए ज्ञान को तथा इनके अनुभवों को प्रयोग कर इन्हें विद्यालयी शिक्षा के लिए तैयार किया जा सकता है। गणित का सेतु पाठ्यक्रम बच्चों में तर्कशक्ति के विकास में मदद करेगा जिससे बच्चे अपने आस पास देखने वाले विभिन्न आकारों और पैर्टर्नों को समझ पाएगें और नए पैर्टर्नों की रचना कर पाएगें। गणित की समझ पाकर वे अपने वातावरण को भली भांति समझ पाएगें और नए पैर्टनों की रचना कर पाएगें। गणित की समझ पाकर वे प्रभावशाली ढंग से अपना जीवन यापन कर पाएगें। अपने अन्दर वे इतना कौशल उत्पन्न कर पाएगें जिसके द्वारा बच्चे अपनी आयु के अनुसार की कक्षा में प्रवेश पाकर विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर पाए। अपने आपको अधिगम क्रियाओं में लगाकर नए ज्ञान को प्राप्त करने के वे लिए अपने में रूचि उत्पन्न कर पाएगें। विद्यालयी शिक्षा के प्रति अपने डर को समाप्त कर नए ज्ञान की रचना कर पाएगें। गणित के स्वरूप को समझ कर अपनी कार्यशैली को उत्तम बना पाएगें। गणितीय तथ्यों को समझ कर उनका प्रयोग कर पाएगें। अपनी कमियों को पहचान कर दूर कर पाएगें। अपना आत्मविश्वास बढा पाएगें जिससे जीवन की समस्याओं को हल करने में सक्षम हो पाएगें।

कक्षा-2 से कक्षा-8 तक का ज्ञान ये बच्चे चार स्तरों में ले सकते हैं। स्तर-1 में कक्षा-2 व 3, स्तर-2 में कक्षा-4 व 5, स्तर-3 में कक्षा-6 व 7 तथा स्तर-4 में कक्षा-8 का ज्ञान पाने में सक्षम हो पाएगें।

स्तर-1 और स्तर-2 में गणित पढ़ाने के लिए अध्यापकों के लिए दिशा निर्देष और शिक्षण विधिः- गणित को पढ़ाते समय कक्षाकक्ष बहुत ही सचेतन, संवादमूलक और विद्यार्थियों तथा शिक्षक पर परस्पर प्रभावशाली होना चाहिए जिसमें विद्यार्थी अपनी गणितीय समझ को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में समक्ष हो सके। गणित के कलांश में विद्यार्थी प्रश्न हल करने की प्रणाली को ही केवल न सीखे अपितु अपनी गणितीय समझ को बढ़ाकर प्रश्नों को हल करने के विभिन्न तरीकों का निम्न तरह से प्रयोग करने के लिए उत्साहित किए जाने चाहिए-

- गणित के विभिन्न प्रसंगो और अवधारणाओं की समझ बच्चों के अपने अनुभवों से जोड़ते हुए करना।

❖ विभिन्न अवधारणाओं को संदर्भसहित जानने के उद्देश्य से कक्षा में बच्चों के बीच तरह-तरह की चर्चाओं को व्यवस्थित करना।

❖ बच्चों को उनके अनुभवों से सम्बन्धित उदाहरण प्रस्तुत करवाना।

❖ एक जैसे संदर्भो/प्रंसगों को सरल से कठिन की ओर बढ़ाते हुए अलग-अलग स्तरों पर पढ़ाना।

❖ बच्चों को उत्साहित करना ताकि वे विद्यालय की बाहर की दुनियां में भी गणितीय संदर्भो को जाने और पहचाने।

❖ गणितीय समस्याओं को हल करने के लिए बच्चों को उत्साहित करें ताकि एक समस्या को वे अलग-अलग तरीकों से हल कर पाए।

❖ अध्यापक बच्चों को इस योग्य बनाएं कि बच्चे अपने आप प्रश्न/समस्याएं भी बना पाएं।

❖ प्रत्येक गणितीय प्रसंग (टोपिक) के लिए मूल्यांकन एकीकृत (इन्टीग्रेटड) ढंग से करें।

❖ गणित के किसी भी प्रसंग को पढ़ाने के लिए वातावरण में उपलब्ध साधनों/स्रोतों का प्रयोग करें।

❖ गणित शिक्षण में स्थूल सामग्री को जरूर प्रयोग में लाएं।

❖ गणित के विभिन्न प्रसगों का परस्पर संबंध भी स्थापित कराए।

❖ बच्चों को प्रश्न हल करने की नई विधियों को दिखलाएं तथा बच्चों को स्वयं अलग-अलग ऐसे तरीके ढूंढने के लिए प्रेरित करें।

❖ अधिगम की ऐसी विधियों का प्रयोग करें जिससे बच्चों में तर्कपूर्ण वाद विवाद और काल्पनिक शक्ति का विकास हो।

❖ बच्चों में नए-नए पैर्टन बनाने तथा बने हुए पैर्टनों को पहचानने तथा उनकी प्रशंसा करने योग्य बनाएं।

❖ विभिन्न प्रकार के आकारों में समानता तथा विभिन्नता समझ सकें।

अध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे पाठ्यक्रम की विभिन्न अवधारणाओं को घुमावदार तरीके (स्पाइरल वें) से दोहराए ताकि बच्चे गणित विषय की संरचना को समझे और सराहें।

स्तर -1 के उद्देश्यः

इस स्तर को पूरा करने के पश्चात् विद्यार्थी इस योग्य हो जाएगें कि:-

❖ वे दूर-पास, अन्दर-बाहर, बड़ा-छोटा आदि में सम्बन्ध स्थापित कर पाएगें

- रंग, आकार और भार के आधार पर एक जैसी वस्तुओं को पहचान सकेगें।
- 99 तक की संख्या को पहचान और लिख सकेगें।
- 99 तक की संख्याओं को गिनकर तुलना कर सकेगें।
- दी गई संख्याओं (99 तक) को अंकों में व शब्दों में लिख सकेगें।
- 'O' की अवधारणा समझ सकेगें।
- ‘स्थानीय मान’ की अवधारणा समझ सकेगें।
- दो अंको की संख्याओं का जोड़ तथा अन्तर ज्ञात कर पाएगें।
- माचिस की तीलियों की सहायता से पैर्टन बना पाएगें।
- मुद्रा को पहचान सकेगें।
- लम्बाई, ऊचाई और भार मापने की अवधारणा को समझ सकेगें।
- जल्दी-देर, दिन और सप्ताह की अवधारणा को समझ सकेगें।
- बिना मापे, फ्रीहैंड से तथा वस्तुओं की सहायता से आकृतियों को बना सकेगें।

स्तर-2 के उद्देश्य:

इस स्तर को पूरा करने के पश्चात विद्यार्थी इस योग्य हो जाएगें कि:

- वे 9999 तक की संख्याओं को अंको व शब्दों मे लिख पाए।
- संख्याओं को उनके प्रस्तारित रूप में लिख पाएं।
- एक अंक को एक अंक से, दो अंको की संख्या को एक अंक से तथा दो अंको की संख्या को दो अंको की संख्या से गुणा कर पाए।
- दो अंकों की संख्या को एक अंक से भाग कर पाएं।
- भिन्न की अवधारणा को समझ पाए और दी गई भिन्न को प्रदर्शित कर पाए।
- मुद्रा का आदान प्रदान, जमा और घटा द्वारा कर पाए (रू 100, रू500, रू1000 का प्रयोग करते हुए)
- वातावरण में उपलब्ध पत्तियों, पतंगों आदि में समरूपता ढूंढ पाए।

❖ वृत की रचना कर पाएं।

❖ धागे की सहायता से वृत की परिधि ज्ञात कर पाएं।

❖ वर्ग, आयत और त्रिभुज की विशेषताओं को जान पाए।

❖ त्रिभुज, वर्ग और आयत का परिमाप ज्ञात कर पाए।

❖ संख्याओं, अक्षरों और आकृतियों पर आधारित पैर्टन खोज पाए।

❖ लम्बाई की इकाइयों को जोड़ और घटा पाएं।

❖ भार और क्षमता के पैमानों को समझ पाएं।

❖ घड़ी में दिखाए गए समय को ठीक तरह से देखकर बता पाए।

❖ दिन, सप्ताह, मास और वर्ष की समझ विकसित कर पाए।

अध्यापकों को गणित शिक्षण में कराई जाने वाली कुछ क्रियाओं के उदाहरण नीचे दिए जा रहे है:

विषय	:	किनारे और कोने
उपविषय	:	जूते के डिब्बे में किनारे और कोने
कक्षा	:	3
अनुमानित समय	:	35-40 मीनट
अधिगत उद्देश्य	:	जूते के डिब्बे वाली आकार की वस्तुओं में किनारे और कोनों की पहचान करना।
अधिगत सामग्री	:	जूते का डिब्बा लाल रंग, बिन्दी
कार्य विधि	:	शिक्षार्थियों को जूते का डिब्बा दिखाकर उसका चारों ओर से अवलोकन करने को कहा जाएगा।

जूते के डिब्बे की ऊपरी सतह दिखाकर उसके किनारे पूछे जाएगें। चारों किनारों पर लाल रंग किया जाएगा।

इसी प्रकार नीचे की सतह दिखाकर उसके किनारे पूछे जाएगें। चारों किनारों को लाल रंग किया जाएगा।

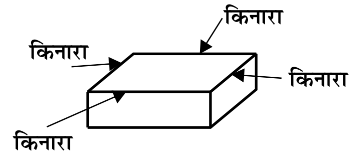

चारों ओर की सतह दिखाकर उनके किनारे पूछे जाएगें और उन पर लाल रंग किया जाएगा।

सभी किनारे जिन पर लाल रंग किया गया है उन्हें बच्चों द्वारा गिनवाया जाएगा।

जूते के डिब्बे की ऊपरी सतह दिखाते हुए सतह के कोने पूछे जाएगें। कोनों को स्पष्ट रूप से दर्शाने के लिए उन पर बिन्दिया लगा दी जाएगी।

यही क्रिया जूते के डिब्बे की प्रत्येक सतह के लिए दोहराई जाएगी।

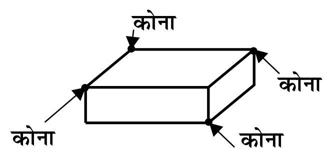

सभी कोनों पर बिन्दिया लग जाने पर उन्हें गिनवाया जाएगा।

आकलन : निम्न प्रश्न पूछे जाएगे:

1. जूते के डिब्बे में कुल कितने किनारे हैं?
2. जूते के डिब्बे में कुल कितने कोने हैं?
3. जूते के डिब्बे के आकार वाली अन्य दो वस्तुओं के उदाहरण दो।

शिक्षक की भूमिका : शिक्षक गतिविधि के समय बच्चों से प्रेक्षण करवाएगें और आपस में चर्चा करने को कहेगें। तत्पश्चात बच्चों से कार्यविधि पर प्रश्न पूछेगें और शिक्षार्थियों की रूचि बनाए रखेगें।

क्रियाविधि का विस्तार : शिक्षार्थियों को अन्य वस्तुएं जो जूते के डिब्बे की ही आकार की हो एकत्रित करने को कहा जाएगा तथा उनमें किनारे और कोने गिनकर निम्न तालिका में भरने को कहा जाएगा:

क्रम	वस्तु का नाम	कुल किनारे	कुल कोने
1			
2			
3			
4			

शिक्षार्थियों से पूछा जाएगा कि:

- ❖ क्या जूते के डिब्बे की आकार वाली सभी वस्तुओं में किनारों की संख्या में कोई सम्बन्ध है?
- ❖ क्या जूते के डिब्बे की आकार वाली सभी वस्तुओं के कोनों की संख्या में कोई सम्बन्ध है?
- ❖ जूते के डिब्बे के आकार को क्या कहते हैं?

(उत्तर यदि नहीं आता तो शिक्षक उत्तर देगें उदाहरणों के साथ।)

विषय : पहाड़े

उपविषय : 2 व 3 का पहाड़ा

कक्षा : 2

अनुमानित समय: 35-40 मिनट

अधिगम उद्देश्य : 2 व 3 का पहाड़ा बनाना व दिखाना।

पूर्वज्ञान : खड़ी व पड़ी रेखा का ज्ञान।

जोड़ का ज्ञान।

आवश्यक सामग्री : काग़ज, पैन्सिल, बिन्दिया

कार्यविधि : शिक्षार्थी को कागज़ पर दो खड़ी रेखाएं खींचने को कहेगें।

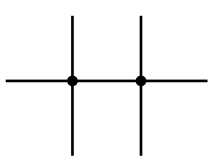

- ❖ एक पड़ी रेखा दो खड़ी रेखाओं को दो बिन्दुओं पर काटती हुई बनवाएगें (दिखाए गए चित्र के अनुमान) दोनों बिन्दुओं पर बिन्दिया चिपकवा देगें

  जो दर्शाएगा : 2x1=2

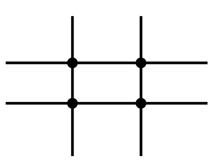

- ❖ एक और खड़ी रेखा खींचवाएगें व काटने वाले बिन्दुओं पर बिन्दी चिपकवाएगें जो दर्शाएगा 2x2=4

इसी प्रकार आगे बढ़ने पर निम्न प्राप्त होगा:

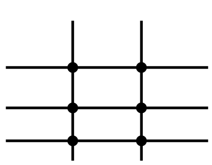

2x3=6

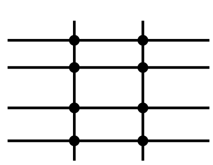

2x4=8

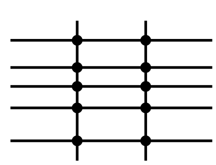

2x5=10

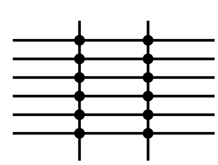

2x6=12

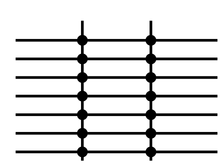

2x7=14

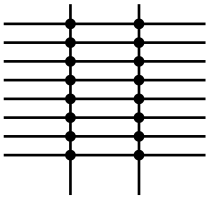

2x8=16

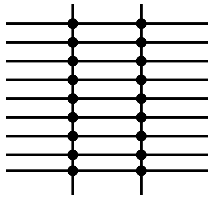

2x9=18

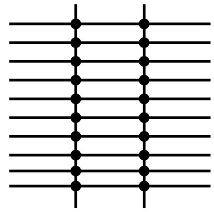

2x10=20

❖ यही कार्यविधि तीन खड़ी रेखाओं पर अपनाने को कहीं जाएगी।

❖ प्राप्त बिन्दियों की संख्या को तीन के पहाड़े के रूप में प्रदर्शित करवाया जाएगा।

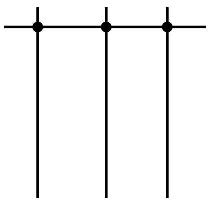

3x1=3

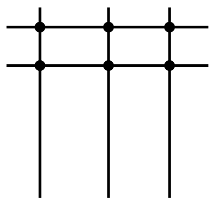

3x2=6

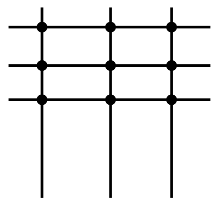

3x3=9

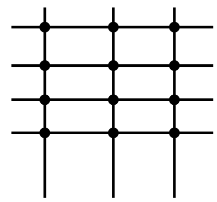

3x4=12

आंकलन : तीन खड़ी रेखाओं पर की गई कार्य विधि को आगे बढ़ाते हुए आकृतियों में बिन्दियों लगाकर रिक्त स्थान भरिए:

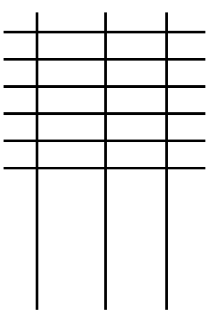

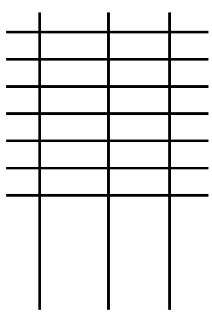

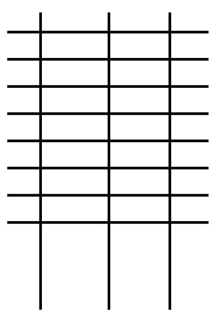

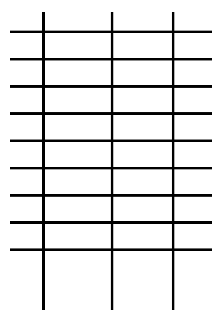

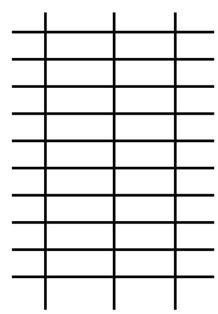

3x6 = ______ 3x7 = ______ 3x8 = ______ 3x9 = ______ 3x10 = ______

शिक्षक की भूमिका : शिक्षक गतिविधि के समय ध्यानपूर्वक प्रेक्षण व निरीक्षण करेगें। कार्य विधि को प्रभावशाली ढंग से पूर्ण करने में बच्चों की मदद करेगें।

क्रियाविधि का विस्तार : 1. निम्न तथ्यों को खड़ी व पड़ी रेखा द्वारा दर्शाया जाएगा:

(i) 2x3 (ii) 3x4 (iii) 2x5 (iv) 3x7

2. शिक्षार्थियों से पूछा जाएगा कि क्या नीचे दिए हुए चित्र बिन्दियों की संख्या बराबर दर्शाते हैं:

(i) 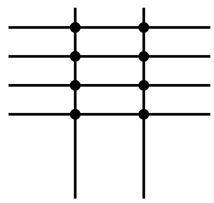 = 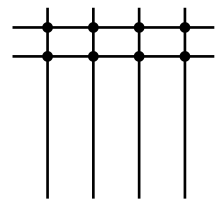 हाँ / नहीं

(ii) 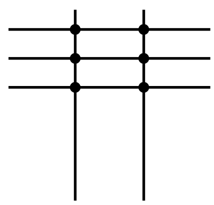 = 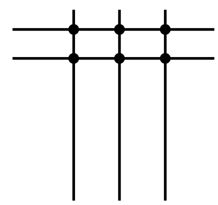 हाँ / नहीं

(iii) 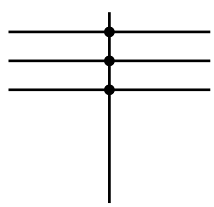 = 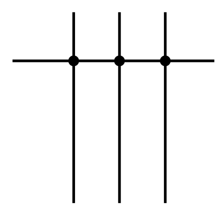 हाँ / नहीं

(iv) 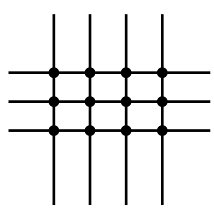 = 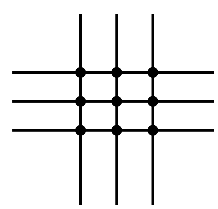 हाँ / नहीं

विषय : क्षेत्रफल

उपविषय : वर्ग शीट द्वारा क्षेत्रफल

कक्षा : 4

समय : 35–40 मिनट

अधिगम उद्देश्य : वर्ग शीट द्वारा आकृतियों का क्षेत्रफल ज्ञात करना।

पूर्वज्ञान : गिनती, वर्गों की पहचान, किनारों का ज्ञान

आवश्यक सामग्री : वर्ग शीट, पत्तियों के कट आउट, पैन्सिल, कागज़

कार्य विधि : विद्यार्थियों को पाँच-पाँच के समूह में बैठने को कहें।

❖ प्रत्येक समूह को एक-एक वर्ग शीट दी जाए।

❖ कुछ पत्तियों के कट आउट प्रत्येक समूह को दिए जाएं।

❖ दिए गए कट आउट में से सबसे बड़ी व सबसे छोटी पत्ती ज्ञात करने के लिए कहा जाएग।

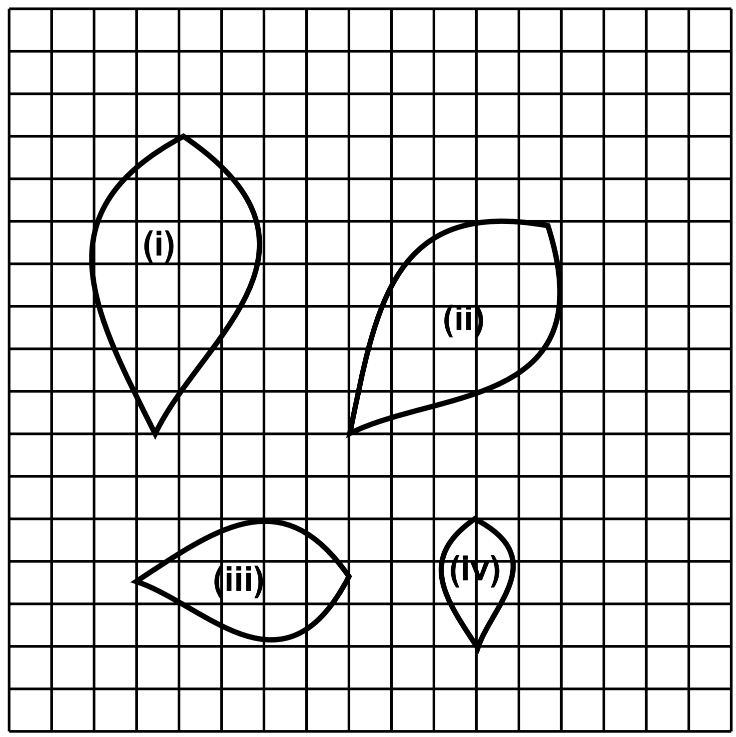

❖ शिक्षार्थियों से प्रत्येक पत्ती के किनारे के अन्दर आए छोटे वर्गों को गिनवाया जाए।

❖ दो आधे वर्गों को एक वर्ग, तीन छोटे वर्गों को एक वर्ग गिनवाया जाए। यदि कोई बहुत छोटा भाग वर्ग का पत्ती के किनारे के अन्दर आए तो उसे छोड़ा जा सकता है।

❖ इस प्रकार प्रत्येक पत्ती के किनारों के अन्दर के वर्गों को गिनवाया जाए। यह वर्गों की संख्या उस पत्ती का क्षेत्रफल है, स्पष्ट किया जाए और वर्ग गिनवाकर पत्तियों का क्षेत्रफल निम्न तालिका में भरवाया जाए।

पत्तियां समूह	**(1) का क्षेत्रफल**	**(2) का क्षेत्रफल**	**(3) का क्षेत्रफल**	**(4) का क्षेत्रफल**
1.	.....	.....	.....	.....
2.	.....	.....	.....	.....
3.	.....	.....	.....	.....

❖ इस प्रकार पता लगवाए जाए कि किस पत्ती का क्षेत्रफल सबसे कम व किस पत्ती का क्षेत्रफल सबसे अधिक है? और कितना है?

आकंलन : विभिन्न आयतों के कट आउट देकर वर्गशीट की सहायता से पता लगाए जाए कि किस आयत का क्षेत्रफल सबसे कम है व किसका सबसे अधिक है?

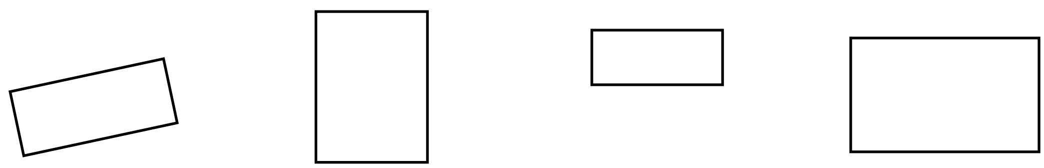

(1) (2) (3) (4)

शिक्षक की भूमिका : शिक्षक गतिविधि को स्पष्ट रूप से समझाऐ और विद्यार्थियों से उसके संदर्भ में चर्चा करे। विद्यार्थियों को कार्यविधि पर आपस में भी चर्चा करने का अवसर दिए जाए। यदि विद्यार्थी कुछ पूछना चाहता है तो उसको उत्तर दें। विद्यार्थियों के संदेह दूर किये जाए।

क्रियाविधि का विस्तार : शिक्षार्थियों को निम्न का क्षेत्रफल पहले अनुमान लगाकर लिखने को कहें व बाद में वर्गशीट की सहायता से क्षेत्रफल ज्ञात करवाएं।

क्रम	वस्तु	अनुमानित क्षेत्रफल	वर्गशीट की सहायता से क्षेत्रफल
1.	₹1 का सिक्का		
2.	₹5 का सिक्का		
3.	रबर का तल		

सेतु पाठ्यक्रम

गणित

(स्तर-3 व स्तर-4)

प्रस्तावना :- वे बच्चे जो किसी कारण वश औपचारिक रूप से विद्यालय में पढ़ने नही जा रहे हैं तथा अपने पारिवारिक अथवा सामाजिक वातावरण के कारण किसी छोटे-मोटे व्यवसाय में अपने माता-पिता की सहायता करते हैं, वे बच्चे शिक्षा का अधिकार कानून अधिनियम के अन्तर्गत कानूनी रूप से विद्यालय में प्रवेश के अधिकारी हैं। तथा राज्य की यह वैधानिक जिम्मेदारी है कि ये बच्चे उच्च प्राथमिक स्तर की शिक्षा जरूरी रूप से औपचारिक विद्यालय में पाएं। इस स्तर पर बच्चा अपनी आयु के अनुरूप कक्षा में प्रवेश का अधिकारी होगा। जैसे 11 वर्ष की आयु का बच्चा छटी कक्षा में तथा 12 वर्ष का बच्चा सातवीं कक्षा में प्रवेश का अधिकारी होगा।

जो बच्चे विद्यालय नहीं जा पा रहे है वे निम्न कुछ कार्य में लगे हो सकते हैं जेसे रेहड़ी पर फल, सब्जियाँ, अंडे आदि बेचना, किसी कुटीर अथवा लघु उद्योग में कार्य करना अथवा कोई अन्य छोटा-मोटा कार्य करना। गणित विषय में उनका यह अनुभव बहुत ही काम का सहायक हो सकता है। अनौपचारिक रूप से वो गणना करने, पैसों का लेन देन करने तथा हिसाब करने, लम्बाई, चौड़ाई, भार, औसत आदि ज्ञात करने के बारे में जानते हो सकते हैं। उनके इसी ज्ञान तथा अनुभव का प्रयोग हमें उनके गणित शिक्षण में करना है, तभी हम एक सीमित अवधि में उनकी उम्र के अनुसार उन्हें औपचारिक कक्षा में अन्य बच्चों के साथ शिक्षा ग्रहण करने योग्य बना पाएगें।

इन बच्चों को गणित शिक्षण अधिक-से-अधिक दैनिक जीवन के अनुभवों के नज़दीक रखकर करना होगा। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना 2005 के अनुसार विद्यार्थि के विद्याायलयी जीवन तथा दैनिक जीवन के बीच में तालमेल का होना अत्यन्त आवश्यक है। विद्यार्थी में रटने की आदत को बढ़ावा नही देना चाहिये। बच्चे का आकलन केवल पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर न करके अपितु उसके अन्य स्त्रोतों द्वारा अर्जित ज्ञान के आधार पर भी हो। अत: अध्यापक को चाहिये कि वह बच्चे को केवल ज्ञान प्राप्त करने वाला न मानकर उसे ज्ञान की खोज में सहभागी समझे।

बच्चे का विद्यायली जीवन का अनुभव अच्छा है अथवा बुरा यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि उसके विद्यालय में अध्यापन की विधियाँ कैसी है। अध्यापक को चाहिये कि वह विद्यालय में इस तरह कि गतिविधियों को बढ़ावा दे जो बच्चे की भागीदारी को सुनिश्चित करें।

इस ब्रिज कोर्स (Bridge Course) का पाठ्यक्रम औपचारिक पाठ्यक्रम से भिन्न है। क्योंकि इसमें उन विषयों को रखा गया है जिनके द्वारा बच्चे को गणित के नियमों अथवा सूत्रों को रटना नही है अपितु गणित को आत्मसात करना है। इसके द्वारा बच्चे में उन गुणों का विकास करना है जिससे वह अपने दैनिक जीवन में

दिन–प्रतिदिन आने वाली समस्याओं को हल कर सके।

इस पाठ्यक्रम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें शिक्षण को तथा मूल्यांकन को साथ–साथ रखा है। तथा प्रत्येक विषय के अन्त में हमने बच्चो का मूल्यांकन करना है तथा उसकी प्रगति का आकंलन कर के यदि सुधार की आवश्यकता है तो उसे साथ–साथ में सुधार करना है।

उद्देश्यः–

1. विद्यालय से बाहर के बच्चों तथा पारंपरिक शिक्षा ग्रहण कर रहे बच्चों के बीच के अन्तर को समाप्त करना।
2. इन बच्चों में सामान्य बच्चों के समान योग्यता पैदा करना।
3. बच्चों को पारंपरिक शिक्षा के महौल के हिसाब से तैयार करना।
4. बच्चों में शिक्षा के प्रति रूचि पैदा करना।
5. बच्चों में एक दूसरे के साथ मिलकर टीम भावना में कार्यकरने की क्षमता पैदा करना।
6. विद्यालय के प्रति भय दूर करना।
7. स्वयं सीखने की कला का विकास करना।
8. गणित के विभिन्न नियमों को समझना तथा उनका दैनिक जीवन में उपयोग करना।

लेवल 3 व 4 के छात्रों को पढ़ाने के लिए अध्यापकों को दिशा निर्देश

गणित को प्रायः कठिन विषयों में गिना जाता है। यह भी देखा जाता है कि मिडल तथा सैकेण्डरी कक्षाओं में बच्चे गणित को कठिन समझते हुए पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं। इसलिए गणित अध्यापक की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है कि वह गणित विषय को अधिक से अधिक सुरूचिकर बनाते हुए पढ़ाए। गणित विषय को अधिक रूचिकर बनाने के लिए सर्वप्रथम जो प्रयास किया जा सकता है वह यह है कि उसे अधिक–से–अधिक दैनिक जीवन से जोड़ा जाए तथा समस्याओं का हल खोजने के लिए बच्चों को समूह गतिविधि के लिए प्रेरित किया जाए। अध्यापक का रोल एक लीडर का न होकर एक प्रेरक का हो जो कि उन्हें गणित की समस्याओं को समझने तथा हल करने में एक सहायक हो अथवा गाइड का रोल अदा करे।

अध्यापक को यह समझना होगा कि किसी भी प्रश्न को हल करने के लिए प्रत्येक बच्चे का अपना अलग तरीका हो सकता है। हमें बच्चों के अलग–2 तरीकों से सोचने के गुण को बढ़ावा देना होगा। अध्यापक को विषय के अनुसार इस तरह की गतिविधियों को बढ़ावा देना होगा जिससे बच्चे की कल्पना शक्ति का

विकास हो। अध्यापक को बच्चो को अधिक-से अधिक अभ्यास करने की आदत को बढ़ावा देना होगा।

ज्यामिति को समझाने के लिए रंगीन/ग्लेज़ पेपर आदि के कटिंग /मोड़ने की गतिविधियों का प्रयोग किया जा सकता है।

रोमन अंक, विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ, कोण, क्षेत्रफल, परिमाप आदि समझाने के लिए माचिस की तीलियों का प्रयोग किया जा सकता है। कोण तथा समय का ज्ञान देने के लिए घड़ी का प्रयोग किया जा सकता है। धन, धनाभ, त्रिशंकू आदि आकृतियों को समझाने के लिए मिट्टी (Clay) का प्रयोग किया जा सकता है।

तृतीय-स्तर

तृतीय स्तर के उद्देश्य

तृतीय स्तर के समापन पर छात्र/छात्राओं में निम्न योग्यता होनी चाहिये

1. दस करोड़ तक संख्या को लिख व पढ़ सकेगें।

   जैसे : 87 54 32 479

   सत्तासी करोड़ चव्वन लाख बत्तीस हजार चार सौ उन्यासी

उपरोक्त संख्याओं का अभ्यास करवाते समय हम उन्हें किसी शहर की अथवा देश की जनसंख्या, व्यक्ति के सिर के बाल, आसमान में तारें आदि का उदाहरण दे सकते है।

पांच अंको की संख्याओं का घटाना व जोड़ना

उदाहरणः-

इन प्रश्नों को समझाने के लिए हमें उनके दैनिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्न बनाने होंगे का पूछने होंगे।

जैसे :

1. एक केले के गोदाम में 84532 केले हैं यदि 41556 केले और आ जाए अथवा बेच दिए जाए तो कुल अथवा शेष केले कितने होगें ?

2. यदि किसी व्यक्ति को एक बिस्कुट बनाने की फैक्ट्री में एक महीने में 10050 रू तथा दूसरे महीने में 11550 रू मिलते है तो बताईए दोनों महीनों में मिला कर कुल कितने रूपये मिले। या पता लगाऐ कि दूसरे महीने में पहले महीने से कितने ज्यादा रूपऐ मिले।

3. यदि किसी फल बेचने वाले ने सोमवार को 12630 रू० के फल बेचे तथा मंगलवार को उसने 11630 रू के फल बेचे तो बताईऐ दोनों दिनों में उसने कितने रूपऐ के फल बेचे या बताईऐ फल वाले ने मंगलवार को सोमवार से कितने रूपऐ कम के फल बेचे।

दो अंको की संख्या द्वारा भाग करना तथा तीन अंको की संख्या द्वारा गुणा करना।

जैसेः 1. एक गोदाम में अथवा दुकान में कुल 6745 अण्डे है। जिनको अण्डे की ट्रे में डालना है। यदि एक ट्रे में 24 अण्डे आते है तो कितनी ट्रे बनेगी।

2. एक ईंट भट्टे पर 237 ईंटो के चट्टो की (ढेरियों) कुल 2345 ढेरी लगी हैं। भट्टे में कुल कितनी ईंट है।

3. एक परिवार एक महीने में 1500 लिफाफे बनाता है। बताईए वो परिवार 12 महीनों में कितने लिफाफे बना लेगा।

प्राकृत संख्या, पूर्ण संख्या तथा पूर्णाकों की तुलना करना। संख्या रेखा द्वारा भी तुलना करना।

उदाहरणः- यदि किसी वस्तु की संख्या को हम गिनना चाहते हैं तो हम 1 से शुरू करेगें तथा बढ़ते जाएगें। ये संख्याएं प्राकृत संख्या कहलाती हैं।

यदि हमने किसी व्यक्ति से न कुछ लेना हे न देना है तो हम 1 से शुरू कि हम इसे 0 (शुन्य) से सम्बोधित करेगें। 0 तथा प्राकृत संख्याओं को मिलाकार पूर्ण संख्या कहेगें। यदि हमने किसी से 50 रू लेने है तो हम कहेगें कि हमारे पास+50 है तथा यदि हमने किसी को 50रू देने है तो हम कहेगें कि हमारे पास -50 है।

संख्या रेखा -

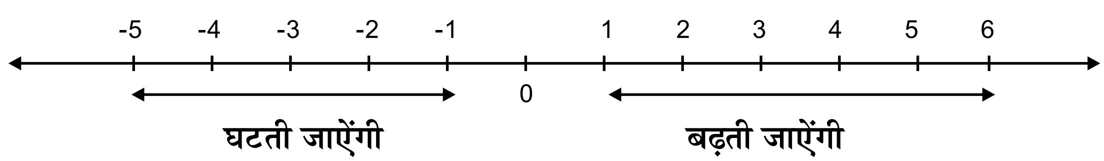

विभिन्न मात्राओं के बीच सम्बन्ध बताना

1 किलो = 1000

1 किलोग्राम	=	1000 ग्राम
1 किलो मीटर	=	1000 मीटर
1 मीटर	=	100 से॰ मी॰
1 घण्टा	=	60 मिनट

बच्चो को दैनिक जीवन से उदाहरण लेते हुए समझाइएगें कि यदि 1 व्यक्ति 1 किलो आलू खरीदता है, तो उसने कितने ग्राम आलू खरीदा। ऐसे ही अन्य उदाहरण जैसे ब्लैक बोर्ड की चौड़ाई मीटर तथा सेंटीमीटर में दोनो माप कर बता सकते है

5. दी हुई संख्या के गुणनखण्ड ज्ञात करना

गुणन का अर्थ गुणा तथा खण्ड का अर्थ टुकड़े। अर्थात संख्या के ऐसे टुकड़े जिसको गुणा करने से वह संख्या प्राप्त हो।

जैसे : 24 = 2x12

= 3x8

= 4x6

2, 3, 4, 6, 8, 12 सभी संख्या 24 के गुणन खण्ड है यदि आपके पास दो दर्जन यानि कि 24 केले है तो आप उन केलों के 12 समूह बना सकते हो या 12 केलों के 2 समूह बना सकते हो। इसी प्रकार 3 केलों के 8 समूह व 8 केलों के 3 समूह बना सकते हो। इसी प्रकार और समूह भी बन सकते है।

चित्र के द्वारा हम ऐसे समझे:

2x12 केले =

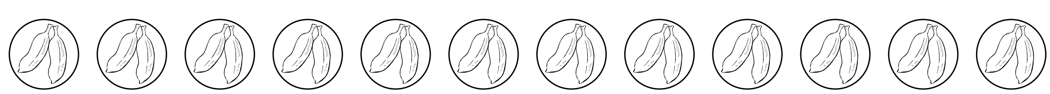

या

12x2 केले =

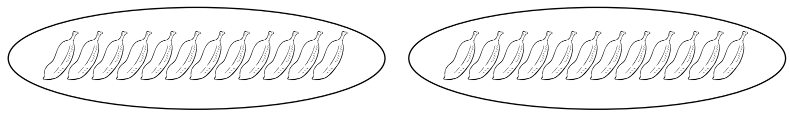

7. भिन्न के प्रकार तथा भिन्नों की तुलना करना।

भिन्न : किसी वस्तु के भाग को उस वस्तु की भिन्न संख्या कहते है जैसे

1. किसी ने 12 केलों में से 6 केले बेच दिए तो इस भिन्न में दर्शाओं कि उसने कितने केले बेच दिए।

कुल केले = 12

बेचे = 6

भिन्न = $\frac{6}{12}$ (लिया गया भाग) – अंश / (कुल भाग) – हर

भिन्न = $\frac{6}{12} = \frac{1}{2}$ 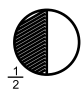 = आधा

2. कुल केले = 12

बेचे = 3

भिन्न = $\frac{3}{12}$ तथा $\frac{1}{4}$ 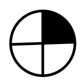 = एक चौथाई

3. इसी प्रकार 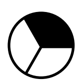 एक तिहाई

भिन्न $\frac{1}{1}$ → इकाई भिन्न

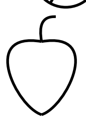
पूरा भाग

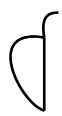
आधा भाग

भिन्न $\frac{1}{2}$ → Proper Fraction

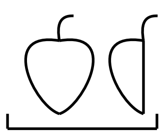

1 व $\frac{1}{2} = 1\frac{1}{2} = \frac{3}{2}$ Improper Fraction

$1\frac{1}{2}$ → मिश्र भिन्न

Equivalent Fraction

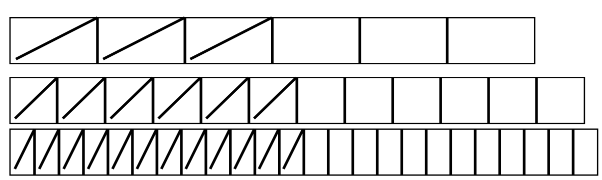

छ : में से 3 केले $= \frac{3}{6}$ $= \frac{1}{2}$

12 में से 6 केले $= \frac{6}{12}$ $= \frac{1}{2}$

24 में से 12 केले $= \frac{12}{24}$ $= \frac{1}{2}$

तुलना करना

छः में से तीन केले $\frac{3}{6}$

छः में से चार केले $\frac{4}{6}$

$\frac{4}{6} > \frac{3}{6}$

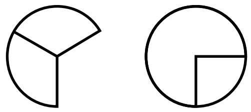

$\frac{1}{3} > \frac{1}{4}$

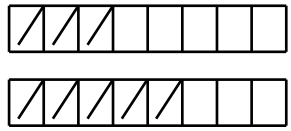

$\frac{3}{8}$

$\frac{5}{8}$

$\frac{5}{8} > \frac{3}{8}$

भिन्नों को जोड़ना तथा घटाना जब हर समान हो तथा भिन्न हो।

6 में से दो केले = $\frac{2}{6}$

6 में से 3 केले = $\frac{3}{6}$

कुल केले = $\frac{2}{6}+\frac{3}{6} = \frac{5}{6}$ (6 में से 5 केले)

बेचे केले = $\frac{3}{6}+\frac{2}{6} = \frac{1}{6}$ (6 में से 1 केला)

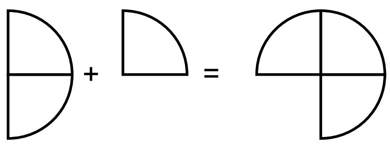

इसी प्रकार

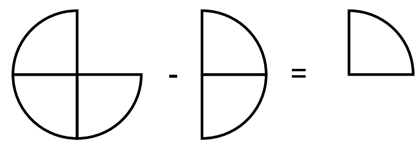

$\frac{1}{2} + \frac{1}{4} = \frac{3}{4}$ $\quad$ $\frac{3}{4} - \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

भिन्नों की गुणा व भाग

भिन्नों की गुणा : $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{2x2} = \frac{1}{4}$

भिन्नों की भाग : $\frac{1}{2} \div \frac{1}{2} = \frac{1}{2} x \frac{2}{1} = \frac{1}{1} = 1$

9. दशमलव वाली संख्याओं का जोड़ना, घटाना, गुणा करना तथा भाग करना

1. दानिरा के एक तरबूज का भार 2.5 kg दूसरे का 3.5 kg, व तीसरे का भार 4.5 kg है तो तीनों का कुल भार कितना है

2. मुकेश ने 3.5 मीटर कपडा कमीज के लिए व 4.5 मीटर कपड़ा पैंट के लिए खरीदा। बताओं उसने कुल कितने मीटर कपड़ा खरीदा। ये भी बताईए कि पैंट व कमीज में से किसका कपड़ा कितने मीटर ज्यादा था।

3. एक चिड़िया घर में 24 बंदर है तथा 3 पिंजरे है तो बताइऐ कि एक पिंजरे में कितने बंदर रखे जाऐ।

4. 8 कारों में कुल कितने पहिऐं होंगें।

10. चर तथा अचर राशियों की जानकारी देना

बच्चों को चर तथा अचर राशियों में जानकारी देने के लिए दैनिक जीवन के उदाहरणों द्वारा समझाएगें।

जैसे: 1 किलो आलू का मूल्य आज 10 रू० है तथा कल आलू का मूल्य 12 रू० प्रति किलो था। दो दिन बाद आलू का मूल्य कुछ अलग भी हो सकता हे अर्थात आलू का मूल्य चर राशि है।

10 रूपये के नोट का मूल्य 10 रू० आज भी है, कल भी था, तथा कल भी 10 रू ही रहेगा। अर्थात 10 रू० के नोट का मूल्य अचर राशि है।

11. एक चर वाले रैखिक समीकरण बनाना तथा उनका हल करना।

1. दैनिक जीवन से उदाहरण देकर जैसे सबीना की माँ ने 1 किलो आलू तथा 2 किलो प्याज खरीदे तथा कुल 60 रू० दिये। यदि आलू का मूल्य 10 रू० किलो हो तो प्याज का मूल्य ज्ञात करो।
2. माना किसी ने 6 केले 12 रूपऐ के खरीदे तो एक केले का मूल्य बताईऐ।
3. माना छः लोगों का परिवार दिल्ली से हरिद्वार जाने का किराया 600 रू० देता है तो एक आदमी का किराया बताईए।

12. अनुपात ज्ञात करना तथा अनुपात में अज्ञात राशि ज्ञात करना।

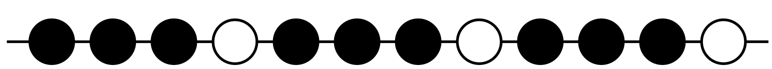

1. दी हुई मोती की माला में काले मोती तथा सफेद मोती की संख्या क्रम से ज्ञात करते हुए बच्चों को बताया जाएगा कि 3 काले मोती के बाद 1 सफेद मोती आया। हरेक 3 काले मोती के लिए 1 सफेद मोती है। अर्थात काले तथा सफेद मोती का अनुपात 3:1 हुआ
2. मनीष ने 12 अंडे खरीदे व दो दर्जन केले खरीदे तो अंडे व केलो का अनुपात क्या हुआ।

$$\frac{\text{अंडे}}{\text{केले}} = \frac{12}{24} = 1 : 2 \ (\text{अंडे : केले})$$

या

$$\frac{\text{केले}}{\text{अंडे}} = \frac{24}{12} = 2 : 1 \ (\text{केले : अंडे})$$

13. प्रतिशत की सामान्य जानकारी

$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{10}$	$\frac{1}{10}$

तीन खानो का जोड़ = $\frac{1}{10} + \frac{1}{10} + \frac{1}{10} = \frac{3}{10}$

$\frac{3}{10} = 0.3$

अर्थात दस मे से तीन भाग
यदि यही बात जब 100 में से ज्ञात करते है तब उसे प्रतिशत कहते है
जैसे 24% = 24 प्रतिशत = $\frac{24}{100}$

14. ज्यामिति की सामान्य जानकारी जैसे बिन्दु, किरण, रेखा, रेखाखण्ड, समांतर रेखाए तथा प्रतिछेदी रेखाएं

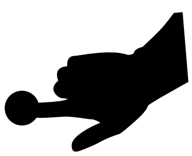

अंगुली का बिन्दु

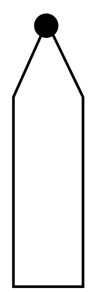

पैन्सिल का बिंदु

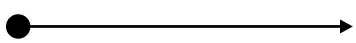

किरण
(सूर्य की किरणे)
चंद्रमा की किरणे

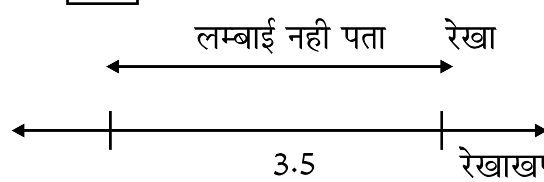

रेखा

रेखाखण्ड

रेल की पटरियाँ
सामान्तर रेखाऐं

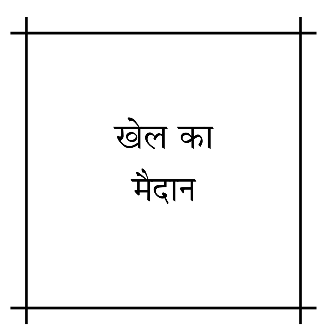

प्रतिछंदी रेखाऐं

15. त्रिभुज, चर्तुभुज, पंचभुज, षष्ट भुज आदि के बारे में जानकारी होना अध्यापक स्टील/एल्युमीनियम की तार के प्रयोग से विभिन्न आकृतियों को बनाकर विभिन्न भुजाओ वाली आकृतियों के बारे में जानकारी दे सकता है।

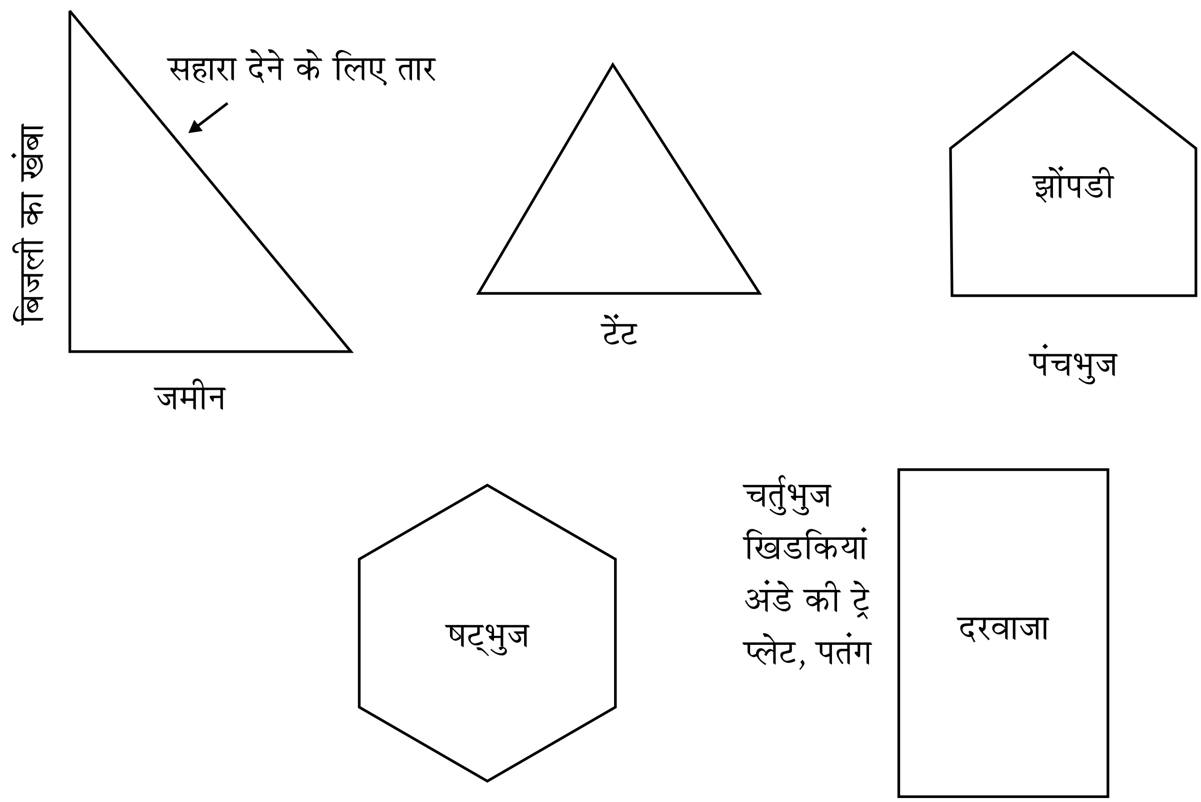

16. धन तथा धनाभ के बारे में जानकारी होना

अध्यापक धन तथा धनाभ के आकार के विभिन्न उदाहरण जो दैनिक जीवन में प्रयोग होते हैं के बारे में जानाकारी दे सकता है

जैसे- संतरो की पेटी का आकार धनाभ जैसा होता है।

ब्लेड के पैकट का आकार धनाभ जैसा होता है।

कक्षा में उपलब्ध चाक का डिब्बा धन के आकार का होता है

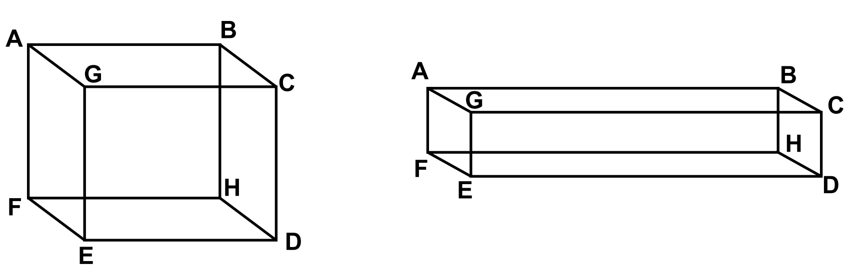

17. ग्राफ पेपर पर वर्गो की गिनती द्वारा क्षेत्रफल की जानकारी देना

एक □ का क्षेत्रफल = 1 वर्ग से॰ मी॰

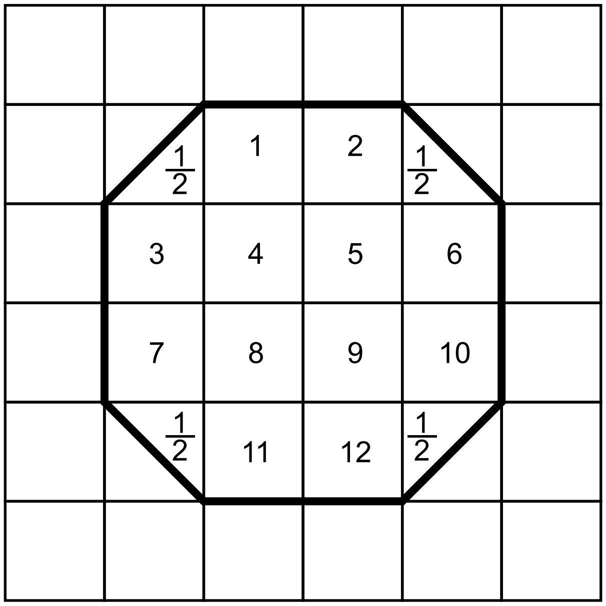

दी हुई आकृति में हम वर्गों की संख्या गिनेगे जो आकृति ने घेर रखे है।

पूरे वर्गों की संख्या = 12

आधे वर्गों की संख्या = 4 (पूरे वर्ग हुए = 2)

कुल वर्ग = 12 + 2 = 14 वर्ग

आकृति का क्षे॰ = 14 वर्ग से॰मी॰

18. दण्ड चार्ट तथा आयत चित्र द्वारा जानकारी प्राप्त करना।

यदि एक आदमी ने सोमवार की 12 दर्जन केले, मंगलवार को 16 दर्जन, बुधवार की 10 दर्जन वीरवार को 19 दर्जन, शुक्रवार को 25 दर्जन व शनिवार को भी 25 दर्जन केले बेचे तो इस दण्ड चार्ट को देखकर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

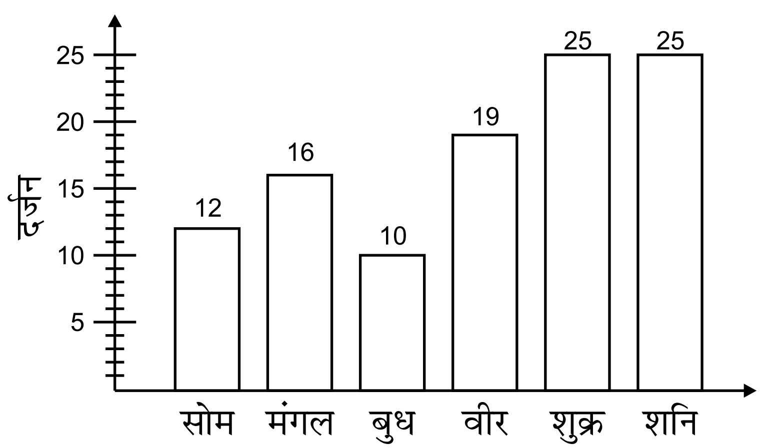

प्र०1 किस दिन सबसे कम दर्जन केले बिके।

प्र०2 किस दिन सबसे ज्यादा दर्जन केले बिके।

प्र०3 किन दो दिनों मे बराबर केले बिके

प्र०4 सप्ताह में कुल कितने दर्जन केले बिके।

19. घड़ी तथा योग-आसन्न की विभिन्न मुद्राओं द्वारा कोणों की जानकारी देना

घड़ी की सुईयों के बीच बनने वाले विभिन्न कोणों द्वारा बच्चे को कोण के बारे में बताया। समझाया जा सकता है। योग आसन्न की विभिन्न मुद्राओं में शरीर के भागों के बीच बनने वाले कोणों द्वारा भी कोणो की जानकारी दी जा सकती है।

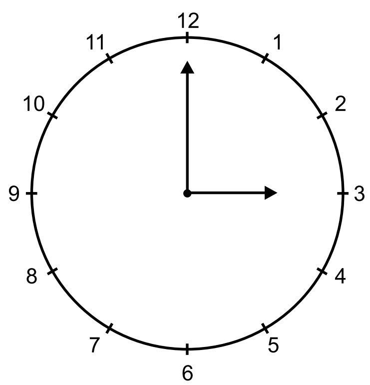

सम कोण

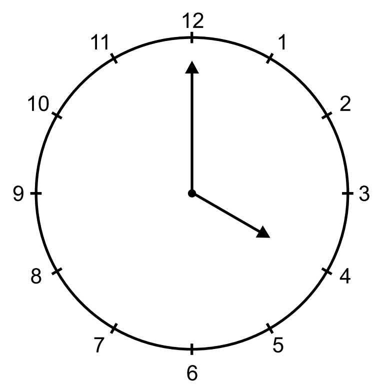

अधिक कोण

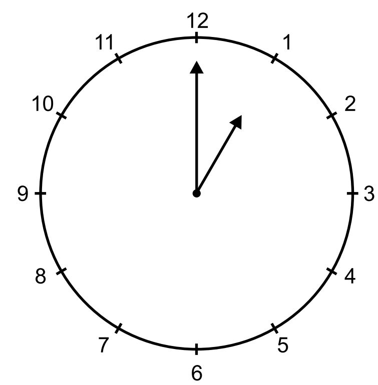

न्यून कोण

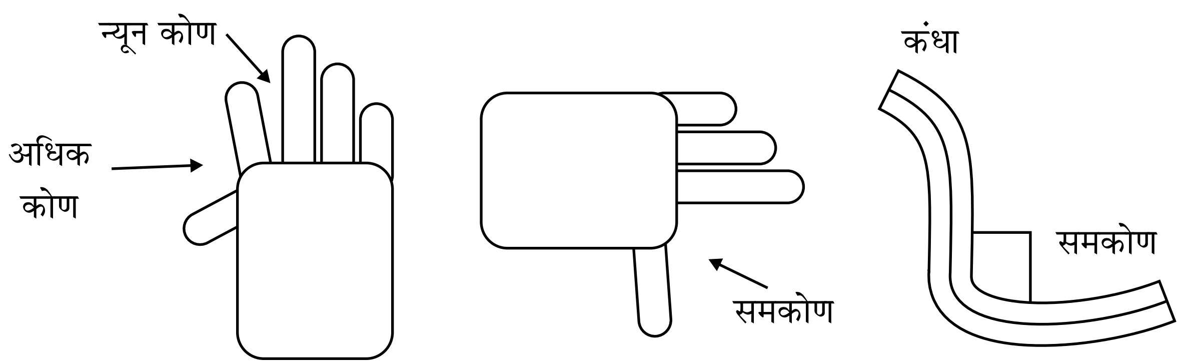

हाथ का चित्र

20. चाँदे की सहायता से 30°, 40°, 60°, 90°, 120°, का कोण मापना तथा बनाना

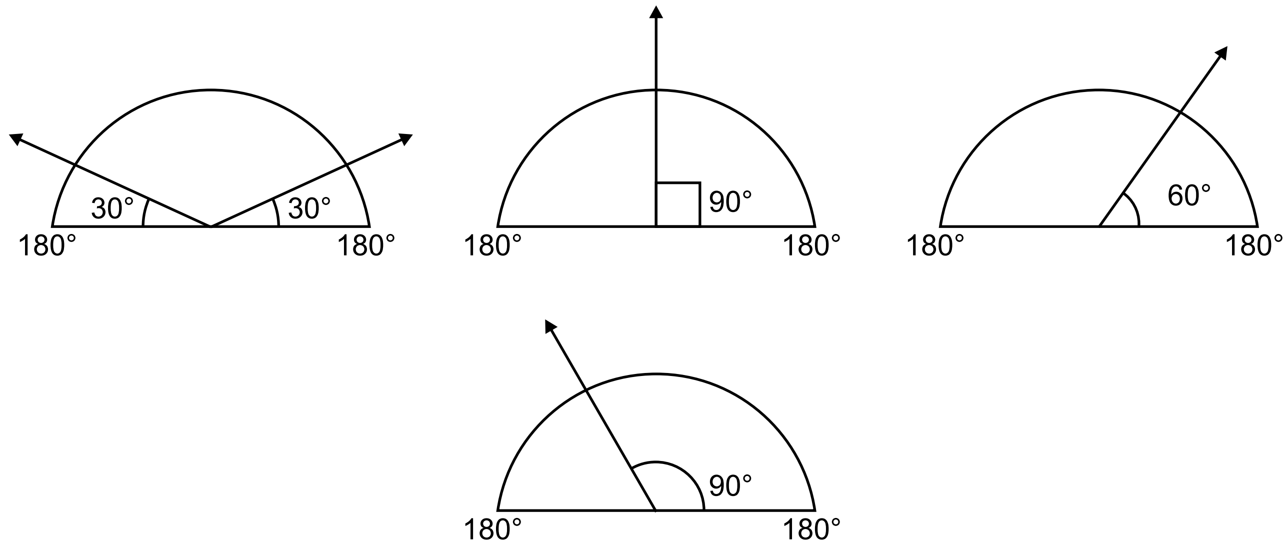

21. आयत तथा वर्ग के क्षेत्रफल के सूत्रों की जानकारी होना तथा सूत्रों द्वारा क्षेत्रफल ज्ञात करना।

1 से॰ मी॰

1 से॰ मी॰ 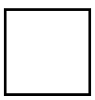 क्षेत्रफल = 1 x 1 = 1 वर्ग से॰मी॰

2 से॰ मी॰

2 से॰ मी॰ 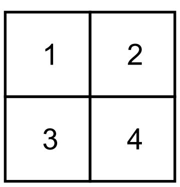

क्षेत्रफल = 2 x 2 = 4 वर्ग से॰मी॰

1 से॰ मी॰ 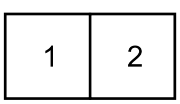

2 से॰मी॰ वर्ग का क्षे॰ = भुजा x भुजा
आयत का क्षे॰ = ल॰ x चौ॰ = 1 x 2 = 2 वर्ग से॰मी॰

2 से॰ मी॰ 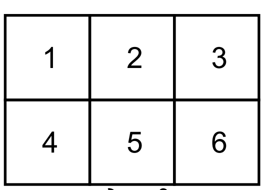

आयत का क्षे॰ = 3 x 2 = 6 वर्ग से॰मी॰

3 से॰ मी॰

आयत का क्षे॰ = ल॰ x चौ॰

3. अवर्गीकृत आंकड़ो का माध्य, माध्यक तथा बहुलक ज्ञात करना।

बच्चों को माध्य, माध्यक तथा बहुलक ज्ञात करने के लिए ऐसे उदाहरणों से शुरू करेगें जो उनके दैनिक जीवन से जुड़े हो।

जैसे: माइकल ने अपनी अण्डो की दुकान पर एक सप्ताह में निम्न प्रकार से अण्डे बेचें

सोमवार = 15 अण्डे	मंगलवार = 12 अण्डे	बुधवार = 14 अण्डे
बुधवार = 14 अण्डे	बृहस्पतिवार = 15 अण्डे	शुक्रवार = 14 अण्डे
शनिवार = 15 अण्डे	रविवार = 15 अण्डे	

तो एक सप्ताह में बेचे अण्डे का माध्यम, माध्यक तथा बहुलक ज्ञात करें

4. समीकरण के विषय में जानकारी का होना तथा दैनिक जीवन की समस्याओं से समीकरण का निर्माण करना।

उदाहरण

1. हनी सिंह के पिता की आयु हनी सिंह से 27 वर्ष अधिक है यदि हनी सिंह तथा उसके पिता की आयु का योग 51 वर्ष हो तो हनी सिंह की आयु ज्ञात करों।
2. एक पैन्सिल 2 रू में आती हे। तो 100 रूपऐ में कितनी पैंसिल आऐगी।

5. विभिन्न प्रकार के कोणों के बारे में जानकारी होना जैसे न्यूनकोण, अधिककोण, समकोण, पूरक कोण तथा सम्पूरक कोण आदि।

1. बच्चों को न्यून, अधिक, सम तथा पूरक शब्दो के अर्थ को समझाते हुए यह बताया जाए कि इन सभी कोणों का आधार 90° का कोण है

जैसे : न्यून का मतलब कम तथा न्यून कोण का अर्थ 90° से कम, अधिक का मतलब ज्यादा तथा अधिक कोण का अर्थ 90° से ज्यादा सम का मतलब समान तथा समकोण का अर्थ 90° का कोण पूरक का अर्थ जो उसे पूरा करे दे तथा पूरक कोण का अर्थ वह कोण जो उस कोण को 90° के बराबर पूरा कर दे।

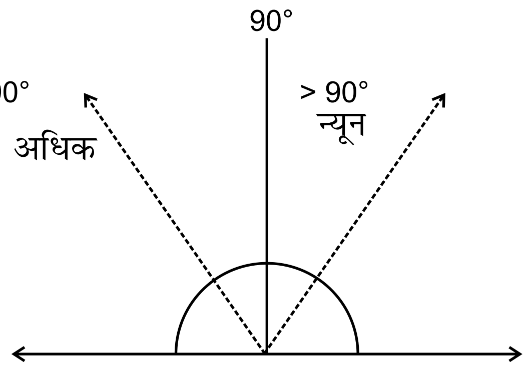

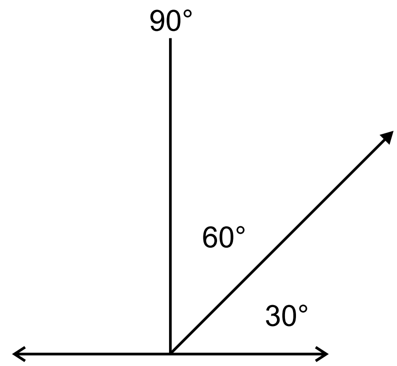

60° का पूरक = 30°
व 30° का पूरक = 60°

6. **त्रिभुज तथा त्रिभुज के गुणों की जानकारी होना। त्रिभुज के विभिन्न प्रकारो की जानकारी होना।**

बच्चों को स्टील/एल्यूमीनियम की तार के द्वारा विभिन्न प्रकार के त्रिभुजों का आकार बनाकर विभिन्न भुजाओं वाले त्रिभुजो के बारे में समझाया जाएगा जैसे विषम बाहु , समबाहु आदि।

इसके लिए हम माचिस की तीलियाँ व बाल ट्यूब का प्रयोग भी कर सकते हैं।

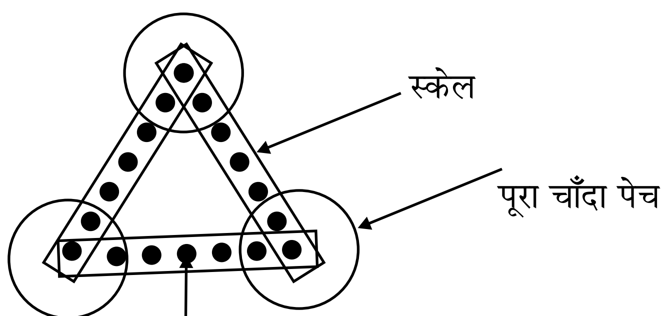

7. **अनुपात तथा प्रतिशत की जानकारी होना**

8. एक डिब्बे में लाल तथा हरे रंग की कुल 10 गेंदे है बच्चों से इस डिब्बे में से गेंद निकलवाकर उन्हें अनुपात का अर्थ समझा सकते है जैसे यदि उसमें लाल गेंद 7 तथा हरी 3 गेंद है तो लाल तथा हरी गेंद का अनुपात 7 : 3 है इसी प्रकार गेंद की संख्या बदलकर अनुपात समझाया जा सकता है।

प्रतिशत = हर 100 में से कितना।

माना किसी ने 100 अंडों में से 67 अंडे बेचे तो $\frac{67}{100}$ को 67% कहेंगे

दैनिक जीवन की ऐसी ही घटनाओं से हमें प्रत्यक्षों को समझाना होगा

4. दैनिक जीवन में लाभ तथा हानि सम्बन्धित प्रश्नों का हल करना ।

रहीम के पिता केलों की रेहड़ी लगाते है। एक दिन उन्होंने 20 दर्जन केले 40/ रू॰ प्रति दर्जन के हिसाब से खरीदे तथा 50 रू॰ दर्जन के हिसाब से बेच दिये। उस दिन रहीम के पिता को लाभ हुआ अथवा हानि हुई। तथा कितनी लाभ या हानि हुई।

9. वर्ग, आयत तथा त्रिभुज के सूत्र की सहायता से क्षेत्रफल ज्ञात करना।

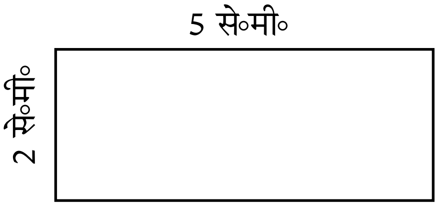

आयत का क्षे॰ = लम्बाई x चौड़ाई

= 5x2

= 10 वर्ग सेमी॰

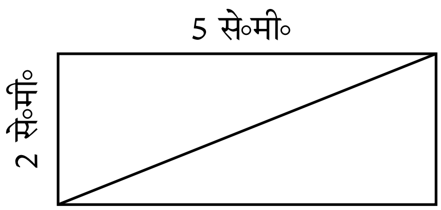

आयत के क्षेत्रफल का आधा = त्रिभुज का क्षेत्रफल

$\frac{\text{लम्बाई x चौड़ाई}}{2} = \frac{1}{2}$ लम्बाई x लम्बवत चौड़ाई

$= \frac{1}{\not{2}} \not{2} \times 5 = 5$ वर्ग से॰मी॰

6. घन, घनाभ, शंकु तथा गोला की आकृतियों को पहचानना तथा उनके विभिन्न अंगों की जानकारी होना।

अध्यापक त्रिआयामी आकृतियों का प्रतिरूप बच्चों का दिखाए तथा दैनिक जीवन में इन आकारों की वस्तुओं से सम्बन्ध स्थापित करते हुए विभिन्न अंगो की जानकारी दे। जैसे–

घन – लूडो का पासा, चाक का डिब्बा,
घनाभ – लोहे का ट्रंक, चाक का डिब्बा,
शंकु – सोफ्टी, जोकर वाली टोपी, मंदिर की घंटी
गोला – फुटबाल, क्रिकेट की गेंद, लड्डू, कंचा

आगमन विधि पर्यावरण अध्ययन की एक सरल विधि

सीखने–सिखाने की यह विधि बच्चों के लिए सबसे उपयुक्त विधि है। इस विधि में प्रत्यक्ष अनुभवों, उदाहरणों तथा प्रयोगों का अध्ययन करके नियम निकाले जाते है। इस विधि में किसी भी समस्या का निवारण करने के लिए पहले ज्ञात तथ्यों एवं नियमों की सहायता नहीं ली जाती, इस प्रणाली में छात्रों के समक्ष पर्याप्त उदाहरण रखे जाते है एवं उनके आधार पर नियम निकाले जाते है तथा बच्चों के पूर्वज्ञान, उचित–सूझबूझ और चिंतन शक्ति के आधार पर आगे बढ़ा जाता है। इस विधि में छात्रों की उत्सुकता अंत तक बनी रहती है। यह विज्ञान की सबसे प्रचलित विधि है।

उदाहरण के लिए :- यदि कुत्ते और उसके गुणों के बारें में जानना है, तो कुत्ते का चित्र दिखाकर, निम्न प्रश्न पूछे जा सकते है।

प्र॰1 इस जानवर को क्या कहते है?

ऊ॰ इसे कुत्ता कहते है।

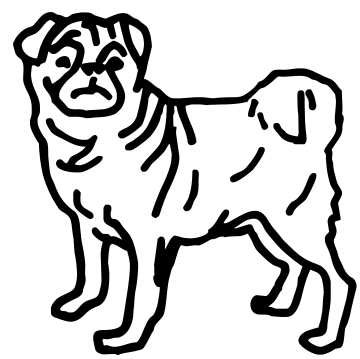

प्र॰2 इसका रंग कैसा है?

ऊ॰ काला,सफेद,पीला,भूरा

प्र॰3 कुत्ता क्या खाना पसंद करता है?

ऊ॰ कुत्ता माँस व हड्डी बड़े चाव से खाता है। (अन्य उत्तर भी आ सकते है)

प्र॰4 कौन सा जीव कुत्ते से सबसे अधिक डरता है?

ऊ॰ बिल्ली।

प्र॰5 कुत्ते को कैसा जानवर माना जाता है?

ऊ॰ वफादार जानवर या पालतू जानवर

इस विधि से छात्र कुत्ते एवं उसकी रूचियों और गुणों का वर्णन अपने अनुसार करते है, और इन्हीं उदाहरणों के आधार पर वे अपने मस्तिष्क में कुत्ते से संबंधित एक अवधारणा स्थापित कर लेते है। यह बालकों की चिंतन शक्ति को बढ़ाती है, क्योंकि इसके अनुसार बालक प्राकृतिक रूप से स्वाभाविक ढंग से सीखते है। यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है, तथा विज्ञान की प्रकृति के अनुकूल है। जो काफी सारे सिद्धांतों को लेकर आगे बढ़ती है। जैसे:–

❖ प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर

❖ उदाहरण से नियम

❖ ज्ञात से अज्ञात

❖ सरल से कठिन

❖ मनोवैज्ञानिकता से तार्किकता, आदि।

आगमन विधि का एक अन्य उदाहरणः-

सामान्यतः 'जल चक्र' को पढ़ाने के लिए एक शिक्षिका बोर्ड पर जल चक्र का चित्र बना देती है और फिर पानी, वाष्पन, बादल – वर्षा आदि को तीर के निशान द्वारा क्रम निर्धारित करके इस अवधारणा को स्पष्ट करती है। किन्तु जल चक्र पढ़ाने का यह माध्यम उचित नहीं है। क्योंकि प्राकृतिक तथ्यों को बच्चों के जीवन से संबंधित करना चाहिए और इसी माध्यम से इन तथ्यों को स्पष्ट करना चाहिए। क्योंकि सीखने में बच्चों की भागीदारी होना अत्याधिक आवश्यक है। और उपरोक्त तरीके से बच्चों की भूमिका स्पष्ट नहीं है। क्योंकि इस माध्यम से शिक्षिका ने एक चित्र बनाया, बच्चों ने देखा, शिक्षिका ने समझाया और बच्चों ने समझा। पूछने पर बच्चे यही कहेंगे, कि समझ में आ गया भले ही समझ में नहीं आया हो। बस पाठ खत्म। इस प्रक्रिया में बच्चे सवाल नहीं करते, क्योंकि उनके दिमाग में सवाल पैदा ही नहीं होते। यदि शिक्षिका ने पूछ लिया तो एक या दो बच्चों को छोड़कर कोई जवाब नहीं देता। जोकि उचित नहीं है।

परंतु आगमन विधि के द्वारा से इसी तथ्य को विभिन्न सवालों और उदाहरणों के माध्यम से बच्चों के समक्ष रखा जा सकता है:-

जल चक्र पढ़ाने हेतु एक रोचक प्रयोग यहाँ प्रस्तुत है:-

कक्षा शुरू होते ही एक शिक्षिका ने रोचक ढंग से बच्चों से कहा, "लाओ भई कोई पानी तो पिला दो"

बच्चें:- "हम लाएं, हम लाएं।"
शिक्षिका:- ठीक है, रानी तुम पानी लाओ।

शिक्षिका:- अच्छा ले आई पानी, कहाँ से लाई? (रानी पानी लाती है)
रानी:- हाँ मैडम पानी टंकी से लेकर आयी हूँ।

शिक्षिका:- सही बताओ, कहाँ से लाई हो?
रानी:- मैडम जी सही बोल रहे है, हम पानी टंकी में से लाए है।

शिक्षिकाः– फिर झूठ बोला, सही बताओ।
मैडम जी सच में, हम पानी टंकी (नल) में से ही लाए है।
(सभी बच्चे शिक्षिका की ओर देख रहे थे, कि आखिर मैडम पानी के बारे में इतने प्रश्न क्यों पूछ रही है।

शिक्षिकाः– अच्छा, ये बताओ, कि नल (टंकी) में पानी कहाँ से आया?

(रानी के जवाब देने से पहले बाकी बच्चे चिल्ला पड़े, "हम बताएं, हम बताएं"।

शिक्षिकाः– अरे–2 एक–एक करके बताओ, चलो अमित तुम बताओ।

अमितः– मैडम जी धरती में से आता है।

शिक्षिकाः– अच्छा धरती में से कैसे आता है?

अमितः– मैडम जी, लंबा पाइप धरती में होता है। और फिर इसके माध्यम से पानी ऊपर आता है।

शिक्षिकाः– ये तो तुम बता रहे हो, कि पानी कैसे ऊपर आता है। मैंने पूछा है, कहाँ से आता है?

सभी बच्चेः– मैडम जी धरती में से तो आता है।

शिक्षिकाः– लेकिन धरती में कहाँ से आता है?

भारतीः– मैडम जी, धरती में पानी जमा होता है।

शिक्षिकाः– अच्छा कैसे जमा रहता है?

सुमनः– मैडम जी, जब पानी गिरता है, तो वो सब धरती में चला जाता है। और इकट्ठा हो जाता है।

शिक्षिकाः– हाँ, ये बात बिल्कुल सही बताई। तो इसका मतलब पानी कहाँ से आया?

सभी बच्चेः– ऊपर से।

शिक्षिकाः– ऊपर मतलब, आकाश से,

बच्चेंः– नहीं, बादल से।

शिक्षिकाः– अरे तुम तो बादल जैसे गरजने लगे। अब बरस मत पड़ना। (सब हँसने लगते है)

मोहिनीः– हाँ मैडम, बरसात के दिन में बादल आते है और पानी बरसा के चले जाते है।

शिक्षिकाः– अच्छा, लेकिन जरा ये सोचो, कि बादल पानी कहाँ से लाता है? (सब चुप)

मोहनः– मैडम जी, मैं बताऊँ, बादल भगवान जी से पानी लाते होंगे।

शिक्षिकाः– अरे भई, भगवान जी के पास इतना समय थोड़ी न है, कि एक–2 बादल को पानी दे और फिर भगवान जी देते, तो फिर हर जगह पानी बराबर बरसता।

संदीपः– मैडम जी, ये बात तो सही है।

शिक्षिकाः– तो फिर गाड़ी कहाँ अटकी है?

बच्चें:– मैडम जी, आप बताओ, बादल में पानी कहाँ से आता है?

शिक्षिकाः– अच्छा बताती हूँ। पहले मुझे ये बताओ, कि तुम लोगों ने पानी गरम होते देखा है?

बच्चें:– हाँ–हाँ देखा है।

शिक्षिकाः– उसमें से भाप निकलती है न?

बच्चें:– हाँ–हाँ।

शिक्षिकाः– अच्छा, यदि उस भाप पर थोड़ी देर अपना हाथ रखो, तो क्या होता है?

प्रियंकाः– मैडम जी, हाथ गीला हो जाता है।

शिक्षिकाः– अच्छा और जब उस को ढक देते है, तब।

अमितः– तब भी, ढक्कन पर पानी की बूंदे मिलती है।

शिक्षिकाः– मतलब कुछ समझ में आया? पानी भी इसी प्रकार से गिरता है।

शिक्षिकाः– मैंने समझाया, "कि पहले पानी गर्म हुआ, फिर भाप बना, भाप बनकर उड़ा, और जब ढक्कन से ढका तो, भाप ढक्कन में जम जाती है और ठंडी होकर पानी बन जाती है।

अमनः– तो मैडम जी, पानी भी इसी प्रकार बरसता है?

शिक्षिकाः– हाँ, पानी भी ऐसे ही बरसता है। सोचो गर्मी के दिनों में सारा पानी क्यों सूख जाता है।

बच्चें:– गर्मी के कारण।

शिक्षिकाः– मतलब पानी गर्म होकर भाप बन जाता है और उड़ जाता है फिर यह बादलों का रूप ले लेता है। यह प्रक्रिया धीरे–2 चलती रहती है और फिर इन बादलों को हवा इधर से उधर करती रहती है। हमारे देश में मानसूनी हवाओं द्वारा वर्षा होती है।

अमनः– लेकिन मैडम जी, जब सभी बादलों में पानी रहता है, तो वे बरसते क्यों नहीं रहते।

शिक्षिकाः– सब बादलों में पानी नहीं होता। कुछ बादल धूल आदि के कण से बनते है।
लेकिन जब बहुत से बादल इकट्ठे होने लगते है तो पानी की बूंदे बड़ी और भारी हो जाती है जिससे ये आकाश में रुक नहीं पाती और बारिश होने लगती है।

मोहिनीः- बादल से पानी नीचे गिरा, धरती पर इकट्ठा हुआ और वो ही भाप बनकर उड़ गया और फिर से बादल बन गया। ये पानी तो घूमता रहता है यह तो एक चक्र है।

शिक्षिकाः- इस चक्र को कहेंगे, "जल चक्र"। तो आज हमने जल चक्र के बारे में सीखा। जिसका आपको एक चित्र के द्वारा वर्णन करना है।

आप के पास जो बच्चे केन्द्र में हैं वे आयु अनुसार, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, तथा सीखने के स्तर पर भिन्न हो सकते है। ऐसे बच्चों को सिखाना एक बड़ी चुनौती हैं। आपकी कक्षा दो रूपों में विभक्त होती है, एक तो वे विविध प्रकार के बच्चे, जिनको आपको सिखाना है और दूसरे वे विविध तरीके जिनसे वे सीखते है। बच्चे विविध विधियों से सीखते हैं क्योंकि उनके आनुवांशिक कारण, अनुभव, परिवेश या उनके व्यक्तित्व अलग होते हैं। इसके लिए आपको विविध शिक्षण विधियों और गतिविधियों की आवश्यकता होगी। कोई भी बच्चा सीखने के गुण से वंचित नहीं होता है। बेहतर परिस्थितियों में सभी बच्चे प्रभावपूर्ण ढंग से सीख सकते हैं। आप उनको "करके सीखने" का अवसर दें। "करके सीखना" विज्ञान (पर्यावरण अध्ययन) के प्रक्रिया पक्ष पर आधारित हैं लिखकर सिखाना, दोहराना आदि घिसी-पिटी परम्परा पर टिके हैं। हांलाकि ज्यादा बच्चों को संभालने का यह सरल तरीका है, लेकिन ईमानदारी से स्वीकार करें तो यह हमारे और बच्चों दोनों के लिए नीरस है तथा बच्चों को भी सीखना बिल्कुल चुनौतीपूर्ण या आनन्ददायक नहीं लगता, सीखने - सिखाने की यह प्रक्रिया अरूचिपूर्ण हो जाती है। इस स्थिति को बदलने के लिए हमें उन विधियों को प्रयोग करना होगा जिनके द्वारा सभी बच्चे बेहतर सीख सकते हैं। जैसाकि ऊपर लिखा गया है कि आपकी कक्षा में विविध पृष्ठभूमि वाले बच्चे हैं और ऐसे बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं की पूर्ति करना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि ऐसे बच्चों की कक्षा को जीवंत, आनन्ददायक एवं मित्रवत स्थल बनाना है। ऐसी कक्षा के लिए आप निम्नलिखित शिक्षण विधियों का प्रयोग कर सकते हैं:

1. समूह कार्य
2. कक्षाप्रमुख की सहायता
3. स्व अध्ययन
4. सामूहिक शिक्षण
5. भ्रमण
6. समुदाय सहयोग

अब आप जानते हैं कि आपकी कक्षा बहुश्रेणी कक्षा है जिसमें उच्च प्राथमिक स्तर के दो स्तर (स्तर-3 कक्षा 6 और 7) (स्तर-4 कक्षा 8) है। अब क्योंकि आपको सीमित समय में बच्चों के सीखने के स्तर और गति को ध्यान में रखकर ऐसे बच्चों को औपचारिक विद्यालय के लिए तैयार करना है। कोई भी पाठ आपको बच्चों को विशिष्ट सामग्री के माध्यम से पढ़ाना है तो सबसे पहले आप पाठ के विषय वस्तु अनुसार सीखने के सूचकों (अवलोकन, रिपोर्टिंग, वर्गीकरण, चर्चा, व्याख्या, विश्लेषण, प्रयोग, सामाजिक न्याय, सहयोग) को निर्धारित करेंगे।

बच्चों को समूह में आपको बैठाना होगा। जिसमें स्तर–3 तथा स्तर–4 के समूह होंगे। इन दोनों समूहों में आप निम्नलिखित उदाहरणों के अनुसार शिक्षण कार्य कर सकते हैं।

स्तर–3 में भी दो कक्षाएं हैं बेहतर होगा यदि आप दोनों के भी अलग–2 समूह बनाऐं। कक्षा 6 में एक थीम है परिवार और मित्र। उस थीम में एक प्रकरण है साफ–सफाई करने वाले और उनकी चुनौतियाँ। इस पाठ की शुरूआत में एक चित्र है जिसका बच्चे अवलोकन करके कुछ प्रश्नों पर विचार करके चर्चा करेंगे। ऐसा निर्देश देकर आप अन्य कक्षा सात के समूह में एक प्रकरण तंतु हैं उसमें क्रियाकलाप आरंभ करा सकते है तथा कक्षा प्रमुख दोनों समूहों में से बनाकर आप अन्य स्तर–4 के लिए भी समूह कार्य दे सकते हैं।

अब आपको दोनों स्तर में जाकर यह अवलोकन करना है कि बच्चे सीखने में कोई कठिनाई तो नहीं महसूस कर रहे हैं। क्रियाकलाप कराने के लिए आप के पास पहले से उस क्रियाकलाप की सामग्री होनी चाहिए।

क्रियाकलाप कराने के लिए आपको अपने केन्द्र में आसपास से वस्तुएँ बच्चों की सहायता से इकट्ठी करनी होगी। तथा यह जरूरी है कि रा॰ शै॰ अनु॰ परिषद नई दिल्ली द्वारा विकसित प्राथमिक तथा संगठित विज्ञान की पुस्तकें होनी चाहिए।

छोटे समूहों में शिक्षण में आप स्तर अनुसार छोटे–2 समूह बना देते हैं। यह बहुत ही प्रभावशाली तरीका है। इसके लिए आपको पहले से ही सुव्यवस्थित और बेहतर तैयारी के साथ आना होगा। तैयारी के संदर्भ में यह अधिक समय लेने वाली विधि साबित हो सकती है और बच्चों को भी साथ मिलकर सीखने में समय लग सकता है। लेकिन कुल मिलाकर यह विविधता भरी कक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने का एक बहुत प्रभावी तरीका है।

प्रत्येक समूह में आप एक प्रमुख निर्धारित कर सकते हैं जो बार–बार आपको बदलना चाहिए। जिसके द्वारा बच्चों में नेतृत्व एवं सहयोग की भावना का विकास हो सके। कक्षाप्रमुख आपकी समूह कार्य, बच्चों को सीखने के लिए तथा अनुशासन में मदद कर सकते हैं।

स्वअध्ययन के द्वारा बच्चे स्वतंत्र रूप से सीखते हैं इससे बच्चे और शिक्षक दोनों को ही भरपूर उपलब्ध समय का उपयोग करने में सहायता मिलती है। इस विधि का उपयोग आप बच्चों में स्वतंत्र चिंतन, सृजनता के लिए कर सकते हैं। जैसे पाठ में आए चित्र को भरना, कहानी बनाना या पूरी करना, मॉडल बनाना आदि।

भ्रमण में, बच्चों को बाहर जाने का अवसर मिलता है। कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव देने के लिए भ्रमण द्वारा अवधारणाओं का स्पष्टीकरण जरूरी है। भ्रमण पर ले जाने से पहले आप बच्चों को यह बताऐं कि वे कहाँ जा रहे हैं उन्हें वहाँ क्या देखना है। तत्पश्चात् जो देखा व सीखा है उस पर बच्चों की प्रतिपुष्टि भी आवश्यक है। भ्रमण के लिए बच्चों की टोलियां बनवाऐं विषय वस्तु

आधारित अवलोकन तालिका या वर्कशीट दें या कोई अन्य सामग्री जिससे कि उनका सीखना सुदृढ़ हो सके। कुछ निम्नलिखित पाठ हैं जिसे आप भ्रमण द्वारा बच्चों को सीखने का मौका दे सकते है:

जैसे –	स्तर–	कक्षा	प्रकरण
	3	6	यात्रा
	3	3	परिवार व मित्र
	3	6	जल
	3 (ब)	7	वायु और जल
	3 (ब)	7	सजीव वस्तुऐं और उनका आसपास
	4	8	प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण
	4	8	वायु और जल
	4	8	पौधों और जन्तुओं में पोषण

सामूहिक शिक्षण हेतु आपको ऐसे विषय चुनने हैं जिनके बारे में सभी बच्चों को जानकारी देनी है। उदाहरण के लिए–

स्तर	कक्षा	पाठ	प्रकरण
3 (अ)	6	जल	जल बचाओ
3 (ब)	7	वायु और जल	जल और
4	8	वायु और जल	वायु प्रदूषण
3 (अ)	6	वस्तुऐं जो हम बनाते हैं और कार्य करते हैं।	प्रदूषण और कूड़े का निपटान,
3 (ब)	7	कूड़े का निपटान	स्वच्छता

समुदाय के लोगों की सहायता के बिना आपका केन्द्र सफल नहीं हो सकता है। समुदाय के लोग विभिन्न तरीके से आपके केन्द्र में पढ़ने वाले बच्चों की सीखने में सहायता कर सकते हैं। आप अपने केन्द्र में समुदाय में से बढ़ई, जुलाहा, लोहार, डॉक्टर, किसान, डाकिया, पर्यावरणविद्, वैज्ञानिक, जल बोर्ड कर्मचारी या अधिकारी, अचार, जैम बनाने वाले, खेल का कोई व्यक्ति, आदि की सहायता ले सकते हैं। आइए देखें वे कौन–2 से पाठ हैं जहाँ पर आप समुदाय की सहायता ले सकते हैं।

स्तर	कक्षा	पाठ	प्रकरण
3 (अ)	6	❖ परिवार और मित्र	❖ विशेष अधिगम क्षमता वाले बच्चे
		❖ भोजन	❖ संगीतज्ञ वाद्यंत्र
		❖ जल	❖ खेल व्यक्तित्व

		❖ यात्रा	❖ डॉक्टर (पोलियो ड्राप्स प्रथम उपचार) ❖ अचार, मुरब्बा बनाने वाले ❖ किसान (खेती योग्य यंत्र) ❖ पर्यावरणविद् (प्रदूषण) ❖ यातायात नियंत्रक
3 (ब)	7	❖ भोजन ❖ गतिशील शरीर ❖ बिजली ❖ वायु और जल	❖ संतुलित भोजन ❖ हड्डी और उनके प्रकार ❖ विद्युत परिपथ और कार्य ❖ जल संरक्षण
4	8	❖ जन्तु और पौधों में संवहन ❖ वायु और जल ❖ विद्युत और उसका प्रभाव	❖ मानव हृदय, हृदयगति, पल्स रेट ❖ जल संरक्षण ❖ सरल विद्युत परिपथ, प्रयोग

“सामाजिक विज्ञान” शिक्षण के लिए

दिशा निर्देश

परिर्वतन प्रकृति का नियम है। यह समाज में हो रही प्रगति का सूचक है। आज हमारा सामाज तेज़ी से बदल रहा है। इस बदलते दौर में हमारे समाज के मूल्य एवं मान्यताएँ शिथिल पडती जा रही हैं। आज समाज में सूचनाओं व विचारों की बाढ़ सी आयी हुई है। इस बदलते दौर में प्रत्येक समाज का दायित्व होता है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी की रक्षा, सुरक्षा व मार्गदर्शन किस प्रकार करें। इन बच्चों को समाज के सभ्य नागरिक कैसे बनायें।

यहीं से समाज में शिक्षा एवं प्रशिक्षण का कार्य आरम्भ हो जाता है। प्रत्येक समाज में शिक्षा का कार्य व्यक्तियों को समाज के संदर्भ में उपयोगी, उत्पादक , जिम्मेदार व आदर्श नागरिक बनाना है। हमारे देश में इस कार्य के लिए एक उचित एवं सुदृढ़ शिक्षा व्यवस्था बनी हुई है जिसमें समाज की आवश्यकतानुसार समय–समय पर बदलाव भी होते रहे हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी, आज भी हमारे देश में हजारों लाखों बच्चे ऐसे हैं जो किसी कारण वश अपनी प्रारम्भिक शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। उनका सम्पर्क अभी तक किसी भी शिक्षण संस्था से नहीं हुआ है। ये हमारी एक गंभीर समस्या है। भारत सरकार ने इस कमी को पूरा करने के लिए अपने प्रत्येक बच्चे के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था की है। सन् 2009 में सरकार ने शिक्षा का अधिकार देकर प्रत्येक बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। अब सरकार का प्रयास है कि कोई भी बच्चा किसी भी कारण से अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने से ना छूट जाए। दिल्ली सरकार ने 23 नवम्बर 2011 को एक अधिसूचना जारी कर यह तय कर दिया कि छः से चौदह वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे को उसकी आयु के अनुसार विद्यालय में प्रवेश दिया जाए। जिससे कि वह अपने शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार को पा सके। लेकिन अब हमारे सामने एक ऐसी चुनौती आयी है जिसकी आशंका पहले से जताई जा रही थी। हम बच्चों को उनकी आयु के अनुसार विद्यालय में प्रवेश तो दे रहे हैं, परंतु वे बच्चे विद्यालय की मुख्यधारा में अन्य बच्चों के साथ सही ढंग से शामिल नहीं हो पा रहे हैं। वे अपना ताल–मेल पहले से मुख्यधारा में चले आ रहे बच्चों के साथ नहीं बिठा पा रहे हैं। इस समस्या पर गौर करने के उपरान्त हमारी सरकार ने शिक्षाविदों व विचारकों की सलाह से यह तय किया कि इन बच्चों की सहायता के लिए विशेष प्रयास किए जाऐं तथा इनके लिए विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था की जाए। इन प्रशिक्षण केन्द्रों पर योग्य अध्यापकों की नियुक्त की जाए। सरकार ने इन केन्द्रों के लिए अलग से सेतु पाठ्यक्रम की व्यवस्था की है तथा शिक्षकों एवं छात्रों के लिए पाठ्यपुस्तकें तैयार करायी हैं। इसी कड़ी में सरकार ने अब यह तय किया है कि इन विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों पर कार्य करने वाले शिक्षकों के लिए एक मार्ग दर्शिका तैयार करे जो इन छात्रों को शिक्षण देने वाले शिक्षकों की सहायता कर सके और इनके लिए प्रभावकारी सिद्ध हो सके। इस मार्ग दर्शिका में कुछ दिशा निर्देश तैयार किए जा रहे हैं जो शिक्षकों को सेतु पाठ्यक्रम पढ़ाने तथा छात्रों को विद्यालयों के मुख्यधारा में शामिल होने में मदद कर सके। हमें आशा है कि शिक्षक इस संदर्शिका का उपयोग करके अपने शिक्षण को प्रभावी बनाएंगे तथा बच्चों का अधिक से अधिक मार्गदर्शन करेंगे। उनका भविष्य निखारने व समाज में स्थापित होने में मदद करेंगे।

"विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों पर शिक्षकों के सम्मुख आने वाली समस्याऐं"

1 सरकार द्वारा स्थापित विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों पर नियुक्त शिक्षकों को सबसे पहले प्रर्याप्त संसाधनों का अभाव की समस्या से जूझना होगा। उनके पास छात्रों के बैठने पढ़ाने व उनका उचित मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं होंगे।

2 विशेष प्रशिक्षण केन्द्र जिन स्थानों पर बने हैं उनके आस पास से उनको सहयोग मिलना कठिन होगा। उनको अकेले ही इस महान कार्य के लिए संघर्ष करना होगा।

3 इन विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों पर जो भी बच्चे आऐंगे वे समाज के उस वर्ग से होंगे जो सबसे उपेक्षित व अभावग्रस्त होता है। ये बच्चे उपेक्षा, तिरस्कार अभाव को झेलकर आते हैं। इनको प्यार, सम्मान व सहयोग की सामान्य छात्रों से अधिक आवश्यकता होती है।

4 प्रशिक्षण केन्द्रों पर आने वाले इन छात्रों के पास ज्ञान व आधारभूत शिक्षा का आधार तो होगा परन्तु वह बहुत ही अव्यवस्थित और अस्तव्यस्त होगा। कुछ बच्चे तो काफी बड़ी आयु के होंगे। उनको भाषा पढ़ने व लिखने में कठिनाई हो सकती है।

5 इन केन्द्रों पर आने वाले छात्रों में कुछ छात्र तो ऐसे भी हो सकते हैं। जिनका सम्बंध आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों से रहा हो। उनका इस समाज को देखने व समझने का नज़रिया थोड़ा भिन्न हो सकता है। हमें उनको भी लेकर चलना है।

6 इन केन्द्रों पर आने वाले छात्रों में कुछ छात्र सामाजिक बुराईयों जैसे भीख मांगना, कूड़ा बीनना, बाल मजदूरी करना, नशाखोरी, चोरी, आदि घटनाओं से भी जुड़े हो सकते हैं। हमें इनको समाज की मुख्य धारा में लाने में इनकी सहायता करनी होगी तथा इनको संभालना होगा।

7 इन छात्रों में कुछ छात्र ऐसे भी हो सकते हैं जिनको समाज में प्रताड़ना व शोषण के लम्बे घेरे से गुजरना पड़ा हो और उनका इस समाज और अपने आप पर से विश्वास ही उठ गया हो उनमें आत्मविश्वास की घोर कमी हो सकती है, वे गुमसुम रह सकते हैं। इस प्रकार के छात्रों को सहारा देना व उनके अन्दर विश्वास जगाना हमारा महत्वपूर्ण कार्य होगा तथा वे आगे बढ़ सकेंगे।

8 इन केन्द्रों पर आने वाले छात्रों को अपनी जीविका चलाने व परिवार की सहायता करने के लिए कुछ काम भी करने होते होंगे। इनमें कुछ अनाथ बेसहारा व आर्थिक रूप से अति पिछड़े वर्ग से हो सकते हैं / इनको हमें यह एहसास दिलाना होगा कि पढ़ लिख कर ही आप स्वयं और अपने परिवार को आगे बढ़ा सकते हैं। आपके लिए पढ़ाई और भी अधिक आवश्यक है।

9 इन प्रशिक्षण केन्द्रों पर कार्य करने वाले छात्रों के पास बच्चे पहुँचाने की समस्या भी हो सकती है। शायद समाज का नजरिया भी इनको देखने का अभ्यस्थ ना हो क्योंकि यह अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में हों। आप जैसे-जैसे इस महान् कार्य को आगे बढ़ाऐंगे समाज में आपकी विश्वसनीयता बढ़ती जाऐगी।

10 इस केन्द्र पर कार्य करने वाले सभी शिक्षक बंधुओं से मेरा अनुरोध है कि वे इन समस्याओं को पढ़कर निराश ना हों। पहले अपने आपको मानसिक रूप से तैयार कर लें तथा फिर धैर्य व विश्वास के साथ अपने रास्ते पर आगे बढ़ें। हमें आपके सफल होने का पूरा विश्वास है।

"सामाजिक विज्ञान को पढ़ाते समय"

शिक्षकों को प्रशिक्षण केन्द्रों पर ध्यान रखने योग्य बातें

1 इन बच्चों को कोरा कागज़ ना समझा जाए। ये बच्चे समाज को वास्तविक रूप से स्वयं पहचान कर आते हैं। ये बहुत कुछ सीखे हुए होते हैं। हमें इनके पूर्व ज्ञान का आकलन करके इनके ज्ञान व जिज्ञासा को पहचान कर उनकी शिक्षा का आधार बनाना है।

2 हमें अपने प्रशिक्षण केन्द्रों पर वातावरण को इतना सौम्य व प्यार भरा बनाना होगा कि वे यहाँ आते हुए खुश हों और शिक्षण कार्य को एक अलग से बोझ ना समझें। हमें प्रशिक्षण केन्द्रों पर रोचक तथा भेद्-भाव रहित वातावरण बनाना होगा।

3 हमें इन छात्रों के इतना करीब जाना होगा ताकि ये अपनी समस्याओं को बिना किसी झिझक और घबराहट के बता सकें। वे इन केन्द्रों को अपना समझ सकें और आत्मीय रूप से जुड़ सकें।

4 इन प्रशिक्षण केन्द्रों पर छात्रों को स्वयं करके सीखने, स्वतंत्र रूप से कार्य करने की अधिक से अधिक आजादी मिलानी चाहिए। क्योंकि इसी प्रकार का वातावरण बनाने से इनके अंदर की छिपी प्रतिभाऐं उभर कर आऐंगी।

5 प्रशिक्षण केन्द्रों पर छात्रों की बहुसांस्कृतिक परम्परा का ध्यान रखा जाए। जाति, वर्ग, धर्म, लिंग आदि किसी प्रकार का भेदभाव ना पनपने दिया जाऐ। तथा इन छात्रों के विषय में किसी प्रकार का पूर्वाग्रह ना पालें।

6 इन प्रशिक्षण केन्द्रों पर आने वाले छात्रों की विशेष आवश्यकता जैसे भाषा की अज्ञानता, लिखने की अक्षमता पढ़ने की अक्षमता आदि का विशेष ध्यान रखा जाए। छात्रों के अन्दर किसी प्रकार का भय व हीन भावना ना पनपने दें।

7 प्रशिक्षण केन्द्रों पर पाठ्यक्रम को विभाजित कर ना पढाऐं इन छात्रों को पढ़ाने के लिए "समन्वित उपागम" का प्रयोग करें। पाठ्यक्रम को जोड़कर तथा एकदूसरे के साथ मिलाकर सीखने में सहायता करें।

8 छात्रों के शिक्षण को उनके स्थानीय वातावरण से जोड़कर रखें तथा उनको सदैव प्रेरित करते रहें। उनको आगे बढ़ने के पर्याप्त अवसर प्रदान करें।

"सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रयोग किए जाने वाले उपागम"

1 छात्रों को सीखने की स्वतंत्रता।

2 शिक्षक की भूमिका मार्ग दर्शक, प्रेरित करने, साधन उपलब्ध कराने व सहयोगकर्ता की होनी चाहिए।

3 शिक्षण में बाल केन्द्रित विधियों का प्रयोग।

4 शिक्षण अधिगम में छात्रों की सक्रिय भागीदारी।

5 छात्रों को रचनात्मक ज्ञान प्रदान करना।

6 विषयों को एकीकृत रूप में पढ़ाना।

7 छात्रों को सीखने के बहुआयामी अवसर देना।

8 छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ाना व प्रेरित करना।

9 छात्रों को नया करने के लिए प्रेरित करना।

10 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन तकनीक को अपनाना।

"प्राथमिक स्तर पर शिक्षण अधिगम की प्रमुख विधियाँ"

1 कहानियों के माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया।

2 स्वयं करके सीखना।

3 सहपाठियों के सहयोग से सीखना।

4 स्क्रेप बुक बनाना।

5 अभिनय के माध्यम से सीखना।

6 क्षेत्र भ्रमण क्रियाओं द्वारा सीखना।

7 वर्ग पहेली बनाना।

8 मॉडल बनाना।

9 चार्ट व मानचित्र बनाना।

10 खेल विधि द्वारा सीखना।

11 प्रस्तुतीकरण एवं वार्तालाप।

12 रेडियो, टी.वी., अखबार के माध्यम से जानकारी।

13 फिल्मों व लघु फिल्मों से सीखना।

"उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण की प्रमुख विधियाँ"

1 सरल परियोजनाऐं (व्यक्तिगत एवं सामूहिक)।

2 विचार गोष्ठी एवं सेमिनार।

3 ऐतिहासिक आँकड़ों की व्याख्या करना।

4 वाद-विवाद और प्रस्तुतीकरण।

5 नाटकीय प्रस्तुतीकरण।

6 चार्ट व मॉडल निर्माण।

7 क्षेत्र-भ्रमण एवं रिर्पोटिंग।

8 क्विज एवं कमेन्ट्री।

9 लिखित कार्य जिसमें अनुमान लगाना, व्याख्या करना व तुलना करना, आदि।

10 तालिकाओं का विश्लेषण करना।

"शिक्षण के कुछ प्रमुख उदाहरण"

किसी स्वतंत्रता सेनानी (सुभाष चन्द्र बोस) पर "सूचना एकत्र करना"

उद्देश्यः

1. सुभाष चन्द्र बोस के जीवन से प्रेरणा लेना।
2. देशभक्ति की भावना पैदा करना।
3. छात्रों में खोजपरक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
4. लेखन, पठन, पाठन एवं विश्लेषण की क्षमता का विकास करना।

प्रक्रिया विधि

1. अध्यापक को सबसे पहले छात्रों को कक्षा में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जीवन बलिदान व उनके द्वारा किये गये कार्यों व संघर्षों को कहानी के द्वारा छात्रों को बताना है।
2. फिर छात्रों को विभिन्न स्रोतों जैसे पुस्तक, अखबार, पत्रिका, टी.वी., इन्टरनेट आदि माध्यम से सूचनाऐं एकत्र करने के लिए कहें।
3. यह कार्य छात्रों को व्यक्तिगत या दो-तीन छात्रों को सामूहिक रूप से भी दे सकते हैं।
4. छात्रों से एकत्र सूचनाओं की एक रिपोर्ट तैयार कराऐ इस कार्य के लिए पर्याप्त समय दें।
5. प्रत्येक छात्र या समूह को कक्षा में अपने द्वारा एकत्र सूचनाओं को सुनाने का अवसर दें।
6. छात्रों का मूल्यांकन निम्न आधारों पर कर सकते हैं।

मूल्यांकन आधार

1. विषय सामग्री/संकलित सूचनाऐं।
2. प्रस्तुतीकरण।
3. भाषा की दक्षता।
4. आत्मविश्वास।
5. क्रियाशीलता।

वाद विवाद प्रतियोगिता
"चौराहों पर मूर्ति लगाना उचित या अनुचित"

उद्देश्यः

1. विचार-विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।

2. तार्किक एवं चिन्तन ।
3. छात्रों में खोजपरक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
4. लेखन, पठन, पाठन एवं विश्लेषण की क्षमता का विकास करना।

प्रक्रिया विधि

1. सर्वप्रथम शिक्षक छात्रों को विषय की पूरी जानकारी दें।
2. कक्षा को चार समूहों में विभाजित कर लें।
3. कक्षा के दो समूह पक्ष में तैयार करें तथा दो समूह विपक्ष की तैयारी करे।
4. विषय की तैयारी के लिए पर्याप्त समय दें और उचित मार्गदर्शन व सहायता करें।
5. प्रत्येक समूह को कक्षा में अपनी बात रखने का पर्याप्त अवसर दें।
6. छात्रों से प्रश्न करने के लिए कहें।
7. प्रत्येक समूह का मूल्यांकन निम्न आधारों पर करें।

मूल्यांकन आधार

1.	विषय सामग्री की सत्यता।	2
2.	उचित तर्क	2
3.	आत्मविश्वास	2
4.	प्रस्तुतीकरण	2
5.	सहयोग तालमेल	2
	कुल अंक	**10**

अनुभव सुनाना

उद्देश्य:

1. छात्रों में आत्मविश्वास जगाना।
2. छात्रों को मौलिकता की ओर उन्मुख करना।
3. अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाना।
4. वाचन कौशल का विकास करना
5. छात्रों को एक-दूसरे से जोड़ना।

प्रक्रिया विधि

1. यह कार्य कक्षा में प्रत्येक छात्र से, व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. अन्य छात्रों को छात्र की बात धैर्य से सुनने के लिए कहा जाएगा।

3. कक्षा मे अनुशासन बनाना व छात्रों को एक-दूसरे पर हँसने से रोकना होगा।
4. प्रत्येक छात्र को अपने जीवन की किसी भी घटना जो उनको मन ही मन रूला रही हो या उनके जीवन का सबसे बेहतरीन पल हो, की याद करने के लिए पर्याप्त समय दें।
5. बेहतर हो कक्षा में अध्यापक पहले किसी ऐसी घटना को सुनाकर उदाहरण प्रस्तुत करे।
6. प्रत्येक छात्र को सुनाने का पर्याप्त समय दें और छात्रों को प्रेरित करते रहें।
7. निम्न आधार पर मूल्यांकन करें।

मूल्यांकन आधार		**अंक**
1.	प्रस्तुतीकरण	2
2.	हावभाव/साहस	2
3.	सत्यता	2
4.	आत्मविश्वास	2
5.	प्रभाव	2
	कुल अंक	**10**

"अभिनय द्वारा प्रस्तुतीकरण"
भारत की ऋतुओं का अभिनय द्वारा प्रस्तुतीकरण"

उद्देश्यः

1. रचनात्मक अभिव्यक्ति व मानसिक योग्यता का विकास करना।
2. प्रकृति के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना व ऋतुओं के बदलाव की जानकारी देना।
3. ऋतुओं का मानव जीवन पर प्रभाव बताना।
4. मौलिक कल्पना शक्ति का विकास करना

प्रक्रिया विधि

1. अध्यापक सर्वप्रथम छात्रों को भारत में ऋतुओं की सामान्य जानकारी कक्षा में सामूहिक रूप से देंगे।
2. समस्त कक्षा के छात्रों को चार समूहों में विभक्त कर लेंगे तथा प्रत्येक समूह का एक नेता बना लेंगे।
3. प्रत्येक समूह को एक ऋतु उनकी इच्छा अनुसार दे देंगे जिसपर उन्हें अभिनय करना है।
4. छात्र अपनी ऋतु के अनुसार अपना अभिनय तैयार करेंगे। समूह का प्रत्येक छात्र एक ऋतु के किसी ना किसी आधार का अभिनय करेगा-जैसे एक छात्र ऋतु के महीने बताऐगा, एक छात्र मौसम की जानकारी देगा, एक छात्र कपड़ों व खान-पान की जानकारी देगा। इसी प्रकार प्रत्येक समूह अपनी ऋतु का अभिनय द्वारा कक्षा में प्रर्दशन करेगा।
5. समूह का एक छात्र अपनी ऋतु की पूरी रिपोर्ट कक्षा अध्यापक के पास जमा करेगा।

6. अध्यापक छात्रो को तैयारी करने, अभिनय करने व रिपोर्ट बनाने में सहायता करेगा तथा पर्याप्त समय देगा।

7. इस क्रिया–कलाप का मूल्यांकन निम्न आधारो पर करेगा–

1.	विषयवस्तु का ज्ञान	2
2.	साज–सज्जा	2
3.	अभिनय प्रस्तुतीकरण	2
4.	आत्मविश्वास	2
5.	सहयोग	2
	कुल अंक	**10**

"किसी गाँव या शहर के इतिहास का पता लगाना"

उद्देश्यः

1. छात्रों में रचनात्मकता का विकास करना।
2. किसी गाँव या शहर के इतिहास को तैयार कराना।
3. इतिहास के अध्ययन में रूचि उत्पन्न करना।
4. छात्रों में मौलिकता व मानसिक शक्ति का विकास करना।
5. स्वयं करके सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ाना।

प्रक्रिया विधि

1. अध्यापक छात्रों को अपने गाँव/शहर के विषय में अपने बड़ों से/स्थानीय संग्राहलय/नगरपालिका/या किसी अन्य स्त्रोतों से निम्न जानकारी प्राप्त करने के लिए कहें
   (यह परियोजना कार्य व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों रूपों में छात्रों को दिया जा सकता है)

क. शहर/गांव की स्थापना कब हुई, इसे किसने स्थापित किया, वहां के निवासियों के प्रमुख व्यवसाय क्या हैं।

ख. इन व्यवसायों में समय के साथ किस प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं।

ग. वहाँ पर कोई बड़ी आपदा जैसे भूकम्प, बाढ़, अग्निकांड या महामारी आदि तो नहीं आयी, और इसने गाँव या शहर को कैसे प्रभावित किया?

घ. इस गाँव व शहर में पुराने भवन हैं, यदि हैं तो किसके हैं, और उनकी रूपरेखा आजकल के भवनों से किस प्रकार भिन्न है?

ड. इस गाँव की सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि किस प्रकार की है। यहाँ पर होने वाले सामाजिक व सांस्कृतिक समारोह व त्योहारों को किस प्रकार मनाया जाता है।

च. यदि सम्भव हो तो इस गाँव का पुराना या नया कोई नक्शा/पेंटिंग आदि प्राप्त हो जाऐ तो प्राप्त कर लें।

छ. किसी प्राकृतिक तत्व जैसे नदी/तालाब/नहर/पुल/पर्वत/मैदान आदि का प्रभाव इस गांव पर कितना पड़ा है। पता करें।

2. उपरोक्त तथ्यों के आधार पर सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर इस गांव की एक ऐतिहासिक रिर्पोट लेख के रूप में तैयार कराऐं।
3. छात्रों से अपना लेख कक्षा में पढ़कर सुनाने के लिए कहें।
4. निम्न आधारों पर इस परियोजना का मूल्यांकन करें-

1.	तथ्यों की सत्यता	2
2.	सूचनाओं का संग्रहण	2
3.	प्रस्तुतीकरण व लेख	2
4.	चित्र व अन्य सामग्री	2
5.	आत्मविश्वास व सहयोग	2
	कुल अंक	**10**

"ऐतिहासिक स्रोतों का संकलन" व विश्लेषण
"स्थानीय लोक कथाओं का संकलन"

उद्देश्य:

1. छात्रों में खोजबीन, जिज्ञासा एवं संकलन के गुणों का विकास करना।
2. छात्रों को लोक-जीवन, लोक-संस्कृति का महत्व बताना।
3. छात्रों में ऐतिहासिक तथ्यों के विश्लेषण के दृष्टिकोण का विकास करना।
4. छात्रों में इतिहास के अध्ययन में रूचि उत्पन्न करना।

प्रक्रिया विधि

1. अध्यापक कक्षा को विभिन्न समूहों में विभाजित कर दें तथा प्रत्येक समूह का एक नेता बना दें।
2. छात्रों को अपने-अपने क्षेत्र में प्रचलित लोक-कथाओं की जानकारी अपनी कॉपी में एकत्र करने के लिए कहें।
3. इस कार्य के लिए छात्रों को पर्याप्त समय दें और उनकी सहायता करें।
4. छात्रों द्वारा एकत्र की गई लोक-कथाओं का छात्रों को अर्थ समझाऐं तथा उनको निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करें।
5. एकत्र की गई लोक कथाओं से एक रिपोर्ट तैयार कराऐं तथा उसे कक्षा में पढ़वाएं

मूल्यांकन आधार

1.	लोककथाओं का विवरण	2
2.	रोचकता	2
3.	आपसी सहयोग	2
4.	तथ्यों की सत्यता	2
5.	निष्कर्ष का सार	2
	कुल अंक	**10**

"कार्य प्रपत्र बनाना" "हमारा देश भारत"

उद्देश्य:

1. छात्रों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि करना।
2. छात्रों की स्मरण शक्ति को बढ़ाना।
3. छात्रों को भारत की स्थिति एव विस्तार की जानकारी देना।
4. छात्रों को भारत के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना।

प्रक्रिया विधि

1. यह कार्य छात्रों को कक्षा में व्यक्तिगत रूप से कराया जाएगा।
2. शिक्षक को सर्वप्रथम कक्षा में छात्रों को विषयवस्तु की जानकारी देनी चाहिए।
3. छात्रों को एक बार पाठ अवश्य पढ़ने के लिए दिया जाना चाहिए।

कार्य प्रपत्र **WORK SHEET**

प्र॰1 भारत की अक्षांशीय स्थिति बताईए।

उ॰ ....

प्र॰2 भारत की देशान्तरीय स्थिति बताइए?

उ॰ ....

प्र॰3 भारत के प्रमुख पड़ोसी देशों के नाम लिखिए?

उ॰ (1) .... (2) .... (3) ....

(4) .... (5) .... (6) ....

प्र०4 भारत के प्रमुख भौतिक भागों के नाम बताइए।

उ० (1) .... (2) .... (3) ....

(4) .... (5) .... (6) ....

प्र०5 भारत के तीन प्रमुख नदी तन्त्रों के नाम बताइए।

उ० (1) .... (2) .... (3) ....

प्र०6 दक्षिणी भारत की उन दो नदियों के नाम बताइए जो अरब सागर में गिरती है।

उ० (1) .... (2) ....

प्र०7 भारत से क्षेत्रफल में बड़े दो देशों के नाम बताइए।

उ० (1) .... (2) ....

प्र०8 भारत का कुल क्षेत्र फल कितना है

उ० ....

प्र०9 दक्षिण भारत की दो नदियों के नाम बताइए जो बंगाल की खाड़ी में गिरती है

उ० (1) .... (2) ....

प्र०10 भारत के उत्तरी विशाल मैदान की दो प्रमुख विशेषताऐं बताइए।

उ० (1) ....

....

(2) ....

....

....

1) इस कार्य को शिक्षक श्यामपट पर लिखकर या छात्रों को प्रपत्र की छाया प्रतिलिपि देकर करा सकते हैं।
2) छात्रों को अपना प्रपत्र भरने का उचित समय तय कर दें।
3) प्रत्येक प्रश्न के लिए अंक पहले से निर्धारित कर दें।
4) प्रत्येक छात्र के प्रपत्र को एकत्र कर लें।
5) मूल्यांकन दिये गये अंको के आधार पर करें।

"स्क्रेप बुक बनवाना"
"मुख्य व्यवसायों की जानकारी"

उद्देश्यः

1. छात्रों में रचनात्मकता को बढ़ाना।
2. आस-पास होने वाले व्यवसायों की जानकारी देना।
3. छात्रों के मानसिक स्तर को बढ़ाना।
4. सा० विज्ञान के अध्ययन में रुचि उत्पन्न करना।

प्रक्रिया विधि

1. अध्यापक सबसे पहले छात्रों को उसके परिवार में होने वाले व्यवसाय की जानकारी कराऐं।
2. फिर छात्रों को आस-पास में हो रहे व्यवसायों की जानकारी दें।
3. उसके उपरान्त छात्रों को विभिन्न व्यवसायों के चित्र या फोटो ग्राफ एकत्र करने के लिए कहें यदि बच्चे कर सकें तो उन्हें फोटोग्राफ खींचने के लिए कहें।
4. उन सभी चित्रों या फोटो ग्राफों को एक पत्रिका में चिपकवाऐं।
5. उनके नीचे उनके नाम अंकित करने के लिए कहें।

मूल्यांकन आधार

1.	विषय की जानकारी	2
2.	एकत्र सूचना	2
3.	प्रस्तुतीकरण	2
4.	क्रियाशीलता	2
5.	सुन्दरता	2
	कुल अंक	**10**

"चार्ट बनाना"
"दिल्ली की इमारतें"

उद्देश्यः

1. छात्रों को देश की राजधानी दिल्ली की महत्वपूर्ण इमारतों की जानकारी देना।
2. छात्रों के ऐतिहासिक ज्ञान में वृद्धि करना।
3. छात्रों में रचनात्मकता का विकास करना।
4. छात्रों के कौशल को बढ़ाना।

प्रक्रिया विधि

1. सर्वप्रथम शिक्षक कक्षा में छात्रों को दिल्ली की ऐतिहासिक इमारतों की जानकारी देगें
2. छात्रों को दिल्ली की सरकारी इमारतों की जानकारी दी जाएगी।
3. छात्रों से इन इमारतों के चित्र एकत्र करके एक चार्ट पर प्रदर्शित करने के लिए कहा जाएगा।
4. इन इमारतों के नाम व संक्षिप्त जानकारी इनके नीचे अंकित करने के लिए कहें।
5. प्रत्येक छात्र को अपना चार्ट कक्षा में दिखाने के लिए कहें।

मूल्यांकन आधार

1.	एकत्र जानकारी	2
2.	स्वच्छता व सजावट	2
3.	प्रस्तुतीकरण	2
4.	किया गया परिश्रम	2
5.	उत्साह	2
	कुल अंक	**10**

"मानचित्र कार्य"

"भारत की प्रमुख नदियों को भारत के मानचित्र में दर्शाना"

उद्देश्य:

1. छात्रों को भारत की नदियों की जानकारी देना।
2. मानचित्र पर नदियों की स्थिति की जानकारी देना।
3. छात्रों के भौगोलिक ज्ञान में वृद्धि करना।
4. छात्रों की कौशल क्षमता का विकास करना।

प्रक्रिया विधि

1. यह कार्य प्रत्येक छात्र से व्यक्तिगत रूप से कराया जाऐगा।
2. सर्वप्रथम कक्षा अध्यापक भारत की प्रमुख नदियों के नाम छात्रों से पूछ पूछ कर श्यामपट पर लिखेंगे।
3. भारत की नदियों का एक मानचित्र कक्षा में छात्रों के सम्मुख दीवार पर टाँग दिया जाए।
4. छात्रों से भारत के मानचित्र में उन नदियों की स्थिति दर्शाने के लिए कहा जाऐगा।
5. छात्र उत्तर भारत की नदियों को एक रंग से व दक्षिण भारत की नदियों को दूसरे रंग से भरें।
6. छात्रों को नदियों की स्थिति जानने में अध्यापक सहायता करें।

मूल्यांकन आधार

1.	प्रमुख नदियों के नाम	2
2.	मानचित्र में स्थिति	2
3.	प्रस्तुतीकरण	2
4.	क्रियाशीलता	2
5.	कौशल क्षमता	2
	कुल अंक	**10**

"हमारा देश भारत"

"सेतु पाठ्यक्रम-तृतीय स्तर"

शिक्षण उद्देश्यः

1. छात्रों को भारत की अक्षांशीय एवं देशान्तरीय स्थिति का ज्ञान कराना।
2. छात्रों को भारत के आकार व क्षेत्रफल की जानकारी देना।
3. छात्रों को भारत की सीमाओं एवं उसके पड़ोसी देशों के विषय में बताना।
4. छात्रों को भारत के प्रमुख भौतिक भागों का ज्ञान कराना।
5. छात्रों को भारत की प्रमुख नदियों का ज्ञान कराना।
6. छात्रों को सामाजिक-विज्ञान के अध्ययन में रुचि उत्पन्न करना।

शिक्षण से पूर्व शिक्षक की तैयारीः-

कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक को इस पाठ को ध्यानपूर्वक एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए। पाठ को सामान्य रूप से चार खण्डों में विभाजित कर लें

1. भारत की स्थिति एवं विस्तार।
2. भारत के प्रमुख पड़ोसी देश व राजनैतिक भाग।
3. भारत के प्रमुख भौतिक भाग।
4. भारत की प्रमुख नदियाँ।

❖ शिक्षक इन चारों भागों की एक विस्तृत योजना क्रमवार पहले तैयार कर ले ताकि छात्रों को पाठ समझाने मे कठिनाई ना हो।

❖ शिक्षक, कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षण-सामग्री का निर्धारण कर ले जैसे चार्ट, मानचित्र, चाक, डस्टर, इत्यादि।

❖ शिक्षक कक्षा में जाने से पहले ही अपनी शिक्षण की विधियों का चुनाव करले ताकि पाठ को प्रस्तुत करते समय आसानी रहे।

शिक्षण की विधियाँ

1. निगमनात्मक विधि
2. आगमनात्मक विधि
3. प्रदर्शन विधि
4. कहानी विधि
5. निरीक्षण विधि
6. तुलनात्मक विधि
7. भाषण विधि
8. प्रश्नोत्तर विधि
9. वर्णनात्मक विधि
10. विचार–विमर्श विधि
11. भ्रमणात्मक विधि
12. परियोजना कार्य विधि
13. समस्या समाधान विधि
14. प्रयोगशाला विधि
15. पाठ्यक्रम विधि

उपरोक्त विधियाँ सामाजिक विज्ञान शिक्षण में प्रयोग की जाने वाली प्रमुख विधियाँ हैं। शिक्षक साथियों से अनुरोध है कि इनमें से अपनी सुविधा एवं पाठ्यक्रम की प्रकृति व छात्रों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किसी भी विधि का चयन कर सकते हैं। अपने शिक्षण को रोचक बनाने के लिए एक से अधिक विधियों का चयन कर सकते हैं।

कक्षा शिक्षणः– प्रिय बच्चों हम इस बात से सहमत हैं कि हम जिस स्थान पर रहते हैं हमारी सोच एवं व्यवहार पर उसका गहरा प्रभाव पडता है। हम यहाँ देश के अलग–अलग स्थानों से आकर रहते हैं। हमारे देश का नाम भारत है आज हम अपने देश के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

प्रश्नोत्तर विधिः–

शिक्षकः– नताशा, आप बताओ आप कहाँ से आकर दिल्ली में बसें हैं।

नताशाः– हिसार, हरियाणा से।

राहुलः– पटना, बिहार से।

शिक्षकः– अच्छा बच्चों, बिहार, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश–ये सब राज्य किस देश के राजनैतिक भाग हैं।

फरहाः– भारत के सर।

शिक्षकः– फरहा, आप भारत की स्थिति व विस्तार के विषय में कुछ बता सकती हैं।

फरहाः- नहीं सर।

अन्य सभी छात्र भी खामोश हो जाते हैं।

शिक्षकः- अच्छा बच्चों आज हम भारत की स्थिति एवं विस्तार का अध्ययन करेगें। आओ इस मानचित्र की सहायता से भारत की स्थिति का पता लगाऐं।

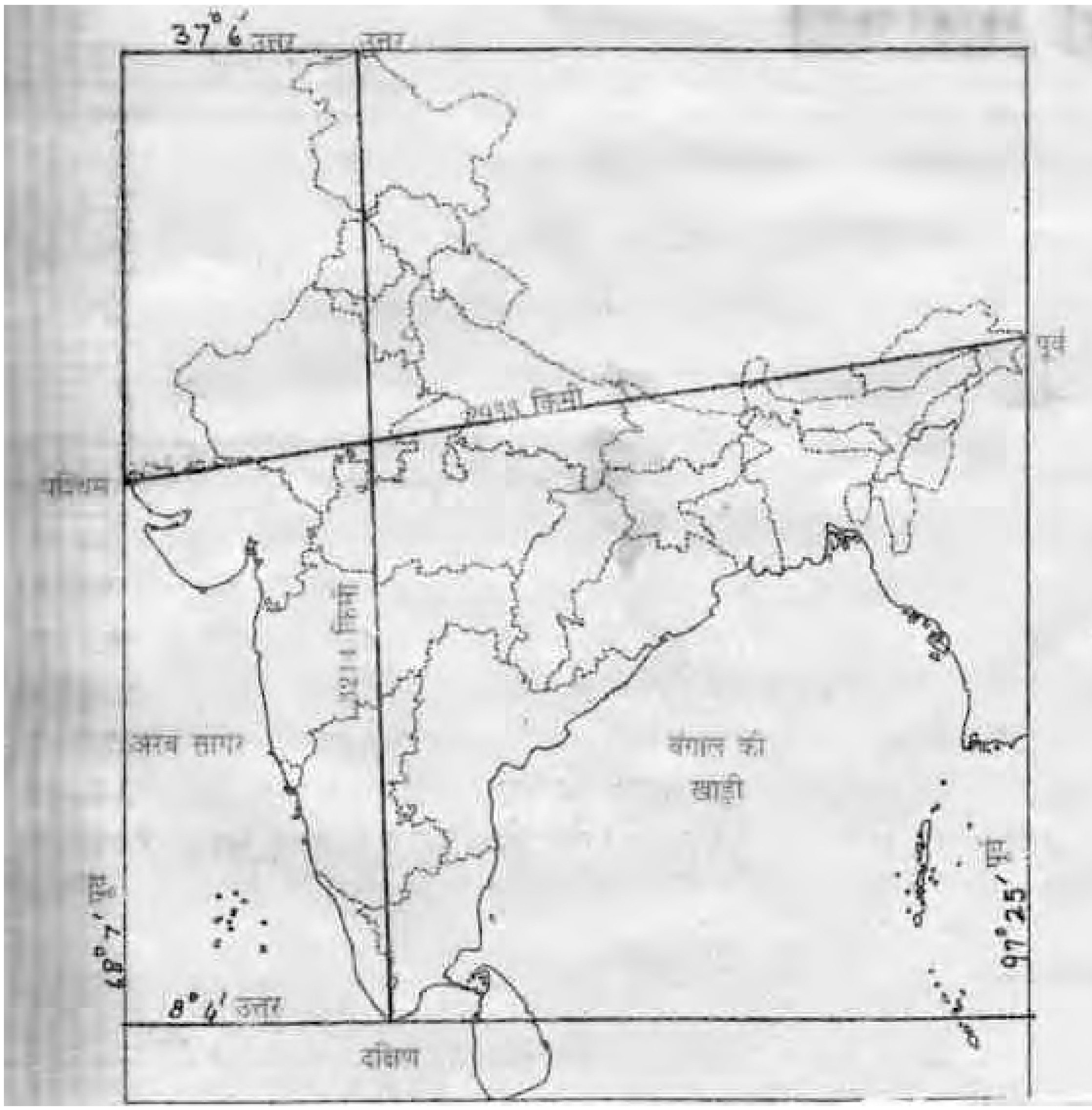

शिक्षक छात्रों को आसानी से दिए गये मानचित्र से दिशाओं की जानकारी, भारत की अक्षांशीय एवं देशांतरीय स्थिति, लम्बाई-चौड़ाई का पता लगा सकते हैं और छात्रों से निम्न तालिका को कक्षा में ही पूरा करा सकते है-

1. भारत की अक्षांशीय स्थिति ....
2. भारत की देशांतरीय स्थित ....
3. भारत की लम्बाई ....
4. भारत की चौड़ाई ....

5. भारत का क्षेत्रफल ....

6. भारत का कुल अक्षांशीय विस्तार 37°6' - 8°6' = 29°2'

7. भारत का कुल देशांत्तरीय विस्तार 97°25' - 68°7'

8. भारत के सागर एवं महासागर ....

9. भारत का सबसे उत्तरी व दक्षिणी राज्य ....

10. भारत का सबसे पूर्वी एवं पश्चिमी राज्य ....

अन्य विषयों के साथ संबंध:-

1. लिखने का कार्य करवाकर भाषा का ज्ञान बढ़ाया जा सकता है।
2. कक्षा में छात्रों को मानचित्र भरवा कर कला के प्रति रूचि उत्पन्न की जा सकती है।
3. अक्षांशों, देशातंरों की गणना लम्बाई-चौड़ाई के द्वारा गणित का ज्ञान कराया जा सकता है।
4. दिशाओं के ज्ञान से सूर्योदय व भाषा तथा घूर्णन गति द्वारा विज्ञान का ज्ञान कराया जा सकता है।

भाग-2

"भारत के प्रमुख पड़ोसी देश व भारत के राज्य एवं केन्द्रशासित राज्य"

शिक्षक:- अच्छा बच्चों आपने भारत का अक्षांशीय व देशातरीय विस्तार वाला मानचित्र देखा है। अब मैं तुमसे कुछ प्रश्न पूछता हूँ उनका उत्तर दीजिए।

शिक्षक:- सोनल, तुम बताओ हिन्द महासागर में भारत के पड़ोसी देश का क्या नाम है?

सोनल:- श्रीलंका, सर।

शिक्षक:- रवि, तुम बताओ भारत के पश्चिम में कौन सा पड़ोसी देश स्थित है?

रवि:- पाकिस्तान, सर।

शिक्षक:- सीमा, आप भारत के सभी पड़ोसी देशों की सूची बना सकती हो?

सीमा:- नही, सर।

शिक्षक:- चलो बच्चों आज हम इस मानचित्र की सहायता से भारत के सभी प्रमुख पड़ोसी देशों की सूची बनाते हैं और उनके विषय में चर्चा करते हैं।
(शिक्षक एक-एक करके भारत के सभी पड़ोसी देशों को मानचित्र में छात्रों को बताऐंगे तथा, उनके विषय में सामान्य जानकारी छात्रों को देंगे। उनके भारत के साथ सामाजिक व आर्थिक सम्बंधों की जानकारी भी छात्रों को दी जाएगी।

इसी प्रकार भारत के राजनैतिक मानचित्र की सहायता से छात्रों को भारत के सभी राज्यों की स्थिति व उनकी राजधानियों की जानकारी दी जा सकती है तथा सभी केन्द्रशासित प्रदेशों के विषय में बताया जा सकता है।

भारत व उसके पड़ोसी देश

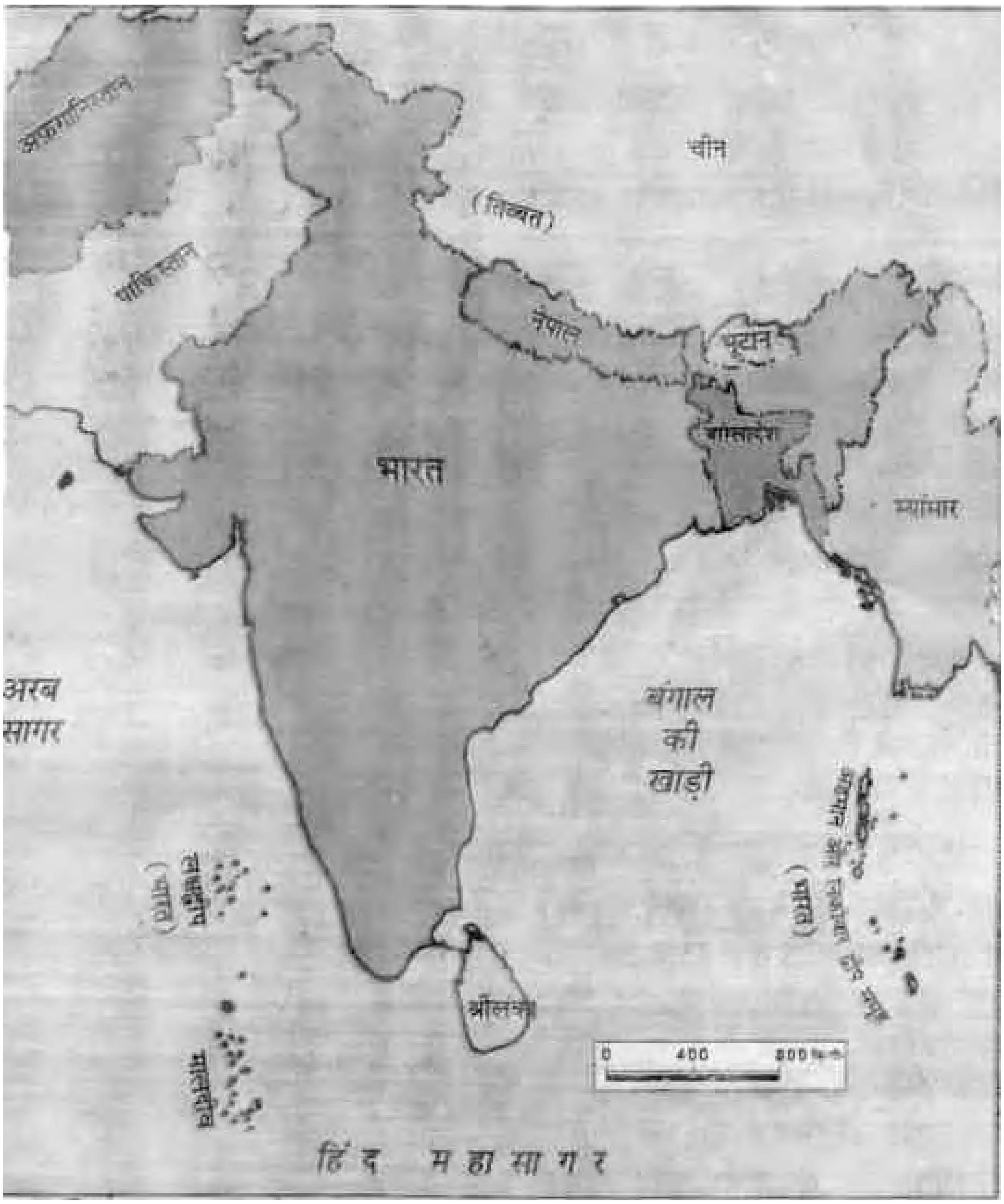

स्रोत (NCERT - VI Class Book)

(स्वयं करके सीखें)

अभ्यास

1. भारत के पड़ोसी देशों की सूची बनवाना।
2. भारत के मानचित्र में भारत के पड़ोसियों की स्थिति को दर्शाना।
3. भारत के पड़ोसियों के राष्ट्रीय ध्वज व अन्य प्रसिद्ध चीज़ों की जानकारी एकत्र कराना।

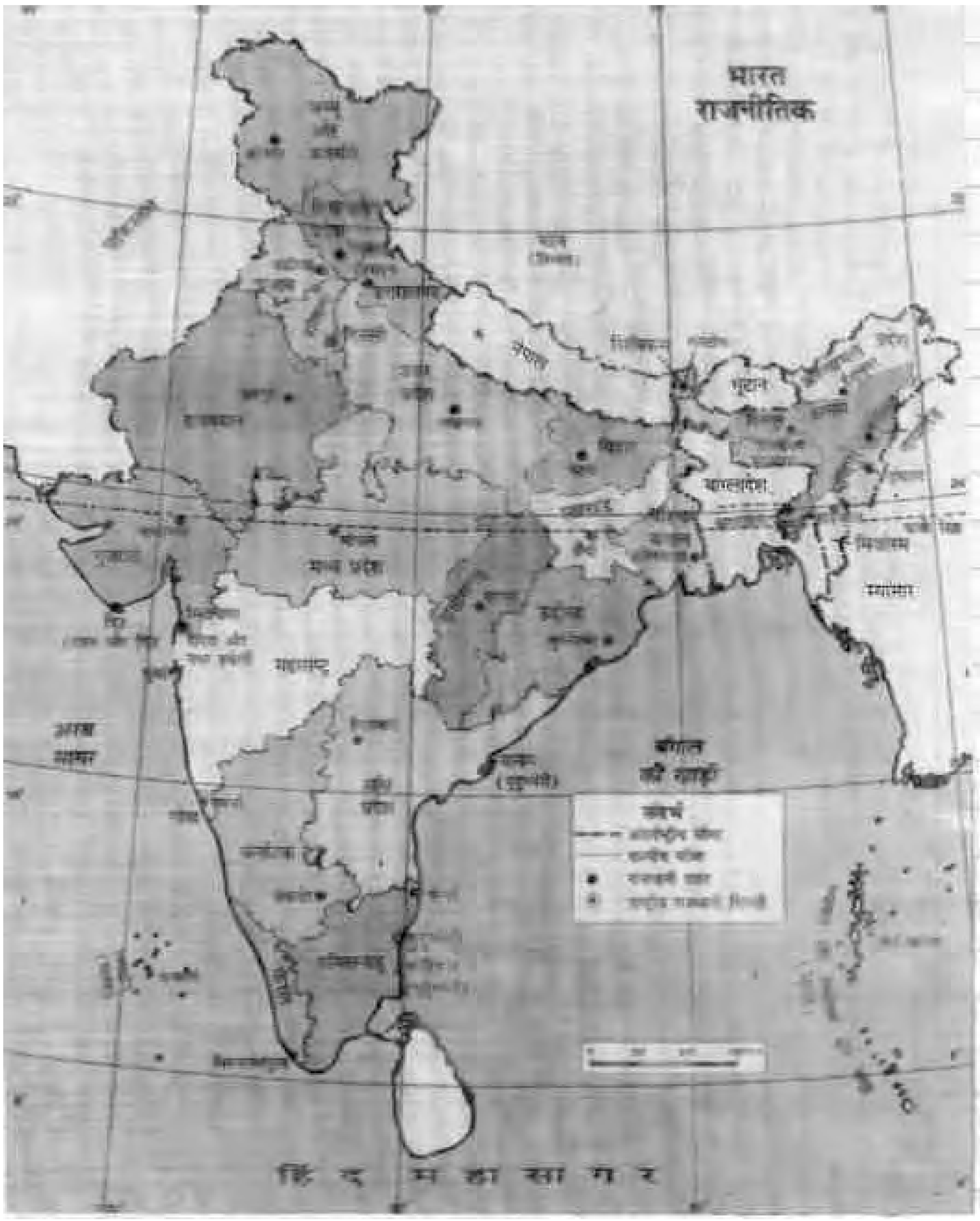

स्रोत (NCERT - VI Class Book)

शिक्षक भारत के राजनैतिक मानचित्र की सहायता से भारत के राज्यों व केन्द्रशासित राज्यों की जानकारी दे सकते हैं।

अभ्यास

आओ स्वयं करें

1. भारत के राज्यों की उनकी राजधानियों के साथ सूची बनवाऐं।
2. भारत के रेखा मानचित्र में भारत के राज्यों को विभिन्न रंगों से दर्शाने के लिए दें।
3. भारत के विभिन्न राज्यों व उनकी भाषाओं की जानकारी एकत्र कराऐं, तथा भाषा की विविधता को छात्रों को बताऐं।
4. भारत के केन्द्रशासित राज्यों की सूची बनाऐं।

भाग–2

भारत के प्रमुख भौतिक भाग व भारत की नदियाँ

शिक्षकः– अच्छा बच्चों, आपने पिछली दो कक्षाओं में भारत के विस्तार तथा भारत के पड़ोसी देश व राज्यों की जानकारी प्राप्त की। क्या आपको पता है कि भारत का भौतिक स्वरूप कैसा है?

छात्रः– सामूहिक रूप से नहीं कहेंगे।

शिक्षकः– बच्चों, आओ यह भारत का भौतिक मानचित्र देखो। इसमें बादामी रंग से पर्वतों को हरे, रंग से मैदान को, पीले रंग से थार मरूस्थल व हल्के बादामी रंग से पठार को दर्शाया है।

छात्रः– गौर से मानचित्र को देखते है।

शिक्षकः– छात्रों को भारत के भौतिक भागों के विषय में विस्तार से समझाऐं।

इसी प्रकार हम छात्रों को भारत की नदियों व भारत के प्रमुख भौतिक भागों की जानकारी एक मानचित्र की सहायता से आसानी से दे सकते हैं। इस प्रकार शिक्षण में उनकी भागीदारी भी अधिक बनी रहेगी तथा शिक्षण कार्य रुचिकर बना रहेगा। सुविधा के लिए भारत का भौतिक मानचित्र यहाँ दिया जा रहा है।

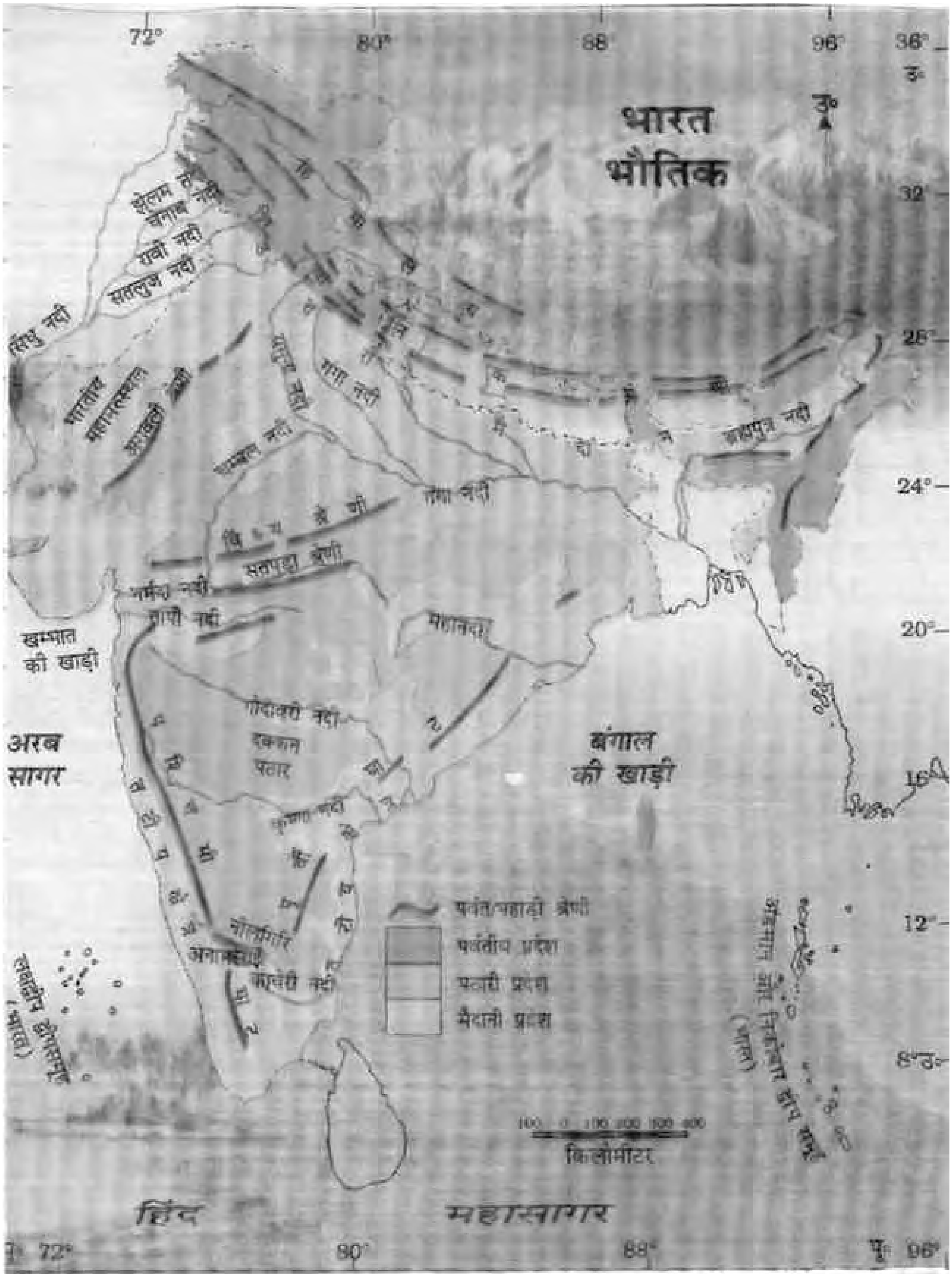
भारत
भौतिक
झेलम नदी
चनाब नदी
रावी नदी
सतलुज नदी
सिंधु नदी
गंगा नदी
यमुना नदी
चम्बल नदी
ब्रह्मपुत्र नदी
सतपुड़ा श्रेणी
नर्मदा नदी
तापी नदी
खम्भात
की खाड़ी
महानदी
गोदावरी नदी
दक्कन
पठार
अरब
सागर
बंगाल
की खाड़ी
कृष्णा नदी
नीलगिरि
कावेरी नदी
पर्वत/पहाड़ी श्रेणी
पर्वतीय प्रदेश
पठारी प्रदेश
मैदानी प्रदेश
किलोमीटर
हिंद
महासागर
72°
80°
88°
96°
36°
32°
28°
24°
20°
16°
12°
8°

‘अभ्यास’ द्वारा स्वयं करके सीखेंगे

1. भारत के प्रमुख भौतिक भागों की सूची बनवाएँ।
2. भारत की प्रमुख नदियों की सूची बनवाए।
3. भारत के मानचित्र में प्रमुख पर्वत श्रेणियों को दर्शाऐं।
4. भारत के मानचित्र में प्रमुख नदियों की स्थिति दर्शाऐं।
5. भारत की भौतिक संरचना पर निबन्ध लिखवायें।

‘संपूर्ण पाठगत अभ्यास’

1. शिक्षक पीछे दिये गये किसी भी उदाहरण की सहायता से छात्रों से अभ्यासक्रिया करवा सकता है जैसे–

   1. चार्ट बनवाना
   2. मॉडल बनवाना
   3. लिखित कार्य (प्रश्न करने के लिए)
   4. WORK SHEET कार्य प्रपत्र तैयार कराना
   5. अभिनय द्वारा प्रस्तुतीकरण
   6. मानचित्र कार्य, आदि

अन्य विषयों के साथ समायोजन (MULTIGRADE TEACHING)

1. लिखित कार्य से भाषा का विकास।
2. मानचित्र कार्य से कला का विकास।
3. गणना, गिनती कराना, अक्षांशों की गणना, आदि से गणित का ज्ञान।
4. नदियों व धरातल की बनावट आदि से विज्ञान की शिक्षा दी जा सकती है।